बेड़नी

यह एक कहानी नहीं, एक सोच का जन्म है

उदय पंकज

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Uday Pankaj 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7139-242-6

Cover design: Aman Sharma
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: November 2025

प्रस्तावना

गुलामी की रस्म, ग़रीबी की ज़िन्दगी और प्यार की पुकार किसे चुनैगी वह ?

यह कहानी है बिन्दा की – एक बेड़िनी लड़की जिसे समाज ने ''गौना'' जैसी कुप्रथा में जकड़ रखा है। जहाँ बेटियों को जीने से पहिले ही अभिशाप समझा जाता हो, प्यार करने का हक न हो, वहाँ वह प्रेम कर बैठती है और अपने जीवन के लिए नए–नए सपने संजोने लगती है। एक ऐसा प्रेम जो सिर्फ़ भावना ही नहीं, विद्रोह भी है।

बिन्दा का संघर्ष, उसकी आत्मा की पुकार है। वह केवल अपने प्यार को ही नहीं, पूरा नारी जाती, पीढी को उस रस्म से आजाद करना चाहती है, जहाँ बेटियों को बोझ समझकर बेच दिया जाता है, जहाँ उनके जैसी बेटियों के हंसते खेलते सपने दम तोड़ देते हैं। जो रूढ़िवादी परंपरा मानने वाले ऐसे समाज में घुट–घुट कर जी रही है।

क्या बिन्दा ऐसी कुरीतियों के लिए खड़ी होकर सफल हो पायेगी ?

क्या वह अपने प्रेम को बचा पायेगी ?

या गौना जैसी प्रथा की आँधी में सब कुछ बह जायेगा ? एक स्त्री की लड़ाई, एक जाति की घुटी चीखों की गूँज और एक नए सवेरे की उम्मीद लिए, यह कहानी झकझोर देगी भीतर तरफ।

उदय पंकज

कहानी सार

ये कहानी है बिन्दा की – एक बेड़िनी जाति की युवती, जिसे समाज ने एक ऐसी प्रथा में बांध रखा है जिसे 'गौना' कहा जाता है।

इस प्रथा के नाम पर बेटियों को खरीदी और बेची जाती हैं। उनकी जिन्दगियाँ बिना उनकी इच्छा से तय कर दी जाती हैं। एक वस्तु की तरह उनको बेच दिया जाता है। लेकिन बिन्दा ऐसी लड़की नही है जो नियति से हार मान लें।

जब उसके जीवन में प्यार दस्तक देता है, तो वह न सिर्फ अपने अधिकारों के लिए बल्कि उस हर लड़की की आवाज बन जाती है, जिनकी आवाजों को सदियों से दबा दिया गया। यह कहानी केवल एक प्रेम कथा नहीं, यह संघर्ष, विद्रोह और बदलाव की अलख है।

क्या बिंदा समाज की इन बेड़ियों को तोड़ पाऐंगी ?

क्या उसका प्रेम उसे शांति देगा या सब कुछ छीन जायेगा?

बिंदा एक ऐसी लड़की की यात्रा है जो अपने दिल की आवाज को समाज की आवाज से ऊँचा रखती है।

बेड़िनी सिर्फ एक स्त्री की कहानी नहीं, बल्कि पूरे समाज की आत्मा का आईना है।

"अपने सभी प्रियजनों को समर्पित"

अनुक्रमणिका

दो शब्द	1
नैना का जन्म	7
मौहर सिंह – बिन्दा की मुलाकात	11
गाँव की जानकारी	14
ठाकुर जसवंत सिंह एवं तत्कालीन हालात	17
ठाकुर परिवार	22
गाँव मुंशीपाड़ा	25
आस्था, एक परम्परा	28
यादों भरी रात	31
मौहर सिंह का गाँव आगमन	34
गौना	37
पहली मुलाकात	44
हवेली में जसवंत सिंह का स्वास्थ्य	50
बिन्दा के परिवार से मुलाकात	54
सहमति	58
हवेली में हलचल	64
कुन्ता की झोपड़ी का दृश्य	74
मौहर का पलायन	79
अफसोस	83
मौहर की कंपनी	94
मौहर की डायरी	100

नैना का सफर	105
एक डर एक साहस	111
पहली मुलाकात	115
सूर्यकांत परिवार	120
दर्द और छिपे आँसू	124
विश्व विद्यालय प्रतियोगिता	131
बिन्दा की खुशी	134
एक डर	136
प्रेम की नई कड़ी	139
नैना का भाषण	143
गर्व के क्षण	150
पत्रकार का इंटरव्यू	155
ताजा खबर	158
गाँव वापसी	162
गाँव की डगर	164
चौपाल पर एक आवाज	167
हृदय परिवर्तन	173
बदलाव की बहार	177
प्रशासन की दस्तक	182
सफलता का नया मोड़	187
आन्दोलन की गूँज	190
एक कदम और	192
सम्मान की पहली सीढ़ी	196
जिला स्तर पर सम्मान	198
मुख्यमंत्री के हाथों पुरूस्कार	202

सभा कक्ष का माहौल 205
जागरूकता सभा 209
विचार मिलन 213
लेखका का अंतिम संदेश 217
एक परिचय 219

दो शब्द

मानव ने अपने जीवन के विकास क्रम में हजारों, लाखों वर्षों तक का सफर किया है। अपनी सभ्यता से होने वाले बदलावों के साथ, मानव नई–नई परम्पराऐं और प्रथाओं का भी निर्माण करता रहा है।

प्राचीनकाल से आज आधुनिक काल के पूरे सफर में मानव की बनाई गई कई मान्यताऐं और परम्पराऐं या तो बदल गई या धीरे–धीरे समाप्त होकर इन्होंने नया रूप धारण कर लिया जो धार्मिक सामाजिक ओर नैतिक विचारों का तत्कालीन समाज का हिस्सा बनी है।

हजारों कबीलों, समुदायों के साथ बदलती सभ्यता में धार्मिक मान्यताओं का भी अपना महत्व बना रहा, जो आज भी बना हुआ है।

भारतीय सभ्यता में सामाजिक, राजनैतिक और तात्कालिक बदलाव होते रहे हैं, इन्हीं में कई प्रथाऐं और परम्पराओं ने भी अपना स्थान बदला है। प्राचीन भारत में कई समुदायों और जातियों में अलग–अलग परम्पराओं का निर्माण हुआ और इन्हीं बदलावों में वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था का भी उद्भव हुआ। साथ ही जातियों और परम्पराओं का एक मिलन बना रहा जो आगे विकास क्रम में कभी समाप्त नहीं हो सका। क्योंकि हजारों वर्षों से अशिक्षा और अनेक कुरीतियों, परम्पराओं के बीच प्रथाओं का चलन और प्रबल होता गया।

इन्हीं प्रथाओं में कुछेक मानववादी और उन्नतशील विचारधारा के कारण समाप्त हुई और भौगोलिक कारणों से कई प्रथाऐं जिन्दी बनी रही, मानव विकास और उन्नतशील विचारधारा के बाद भी सामाजिक ढाँचे में फलती–फूलती रही, जिनमें जीवन–यापन करने के विविध आयाम बने रहे।

आज भी संसार में हजारों समुदायों में अलग–अलग जीने की परम्पराऐं और मान्यताऐं देखी जा सकती हैं। इन्हीं परम्पराओं में रहन–सहन, विवाह पद्धतियों, पारिवारिक जीवन, खान–पान, पहनावा और धार्मिक विचार अलग–अलग बने रहे हैं।

भारतीय सभ्यता में स्थित काल और स्थान के अनुसार भिन्न–भिन्न रही हैं। वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत सम्मानजनक मानी जाती थी। इस समय उन्हें शिक्षा प्राप्त करने, यज्ञों में भाग लेने का अधिकार था। महिलाऐं विदुषी और ऋषिकाऐं भी थी, जैसे गार्गी और मैत्रेयी परिवारों में उन्हें महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था और घरेलु और सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी।

धीरे–धीरे उत्तर वैदिक काल और बाद के युगों में महिलाओं की स्थिति में गिरावट आने लगी। समाज में पितृसत्तात्मक सरंचना प्रबल होती गई। जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं की स्वतंत्रता और अधिकार सीमित होने लगे। उन्हें शिक्षा और सामाजिक कार्यों से दूर रखा जाने लगा और उनके जीवन पर नियंत्रण बढता गया। बाल–विवाह, सतीप्रथा और पर्दा जैसी प्रथाओं के साथ कई और प्रथाऐं जो महिलाओं की स्वतंत्रता से जुड़ी थी। वह समाप्‍त होने लगी। इससे महिलाओं की स्थिति एक कमजोर, गुलाम की तरह हो गई।

भारत में विभिन्न हिस्सों में महिलाओं की स्थिति एक रूप नहीं थी और सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों के आधार पर इसमें भिन्नता थी।

राजाओं, महाराजाओं के काल मे ंमहिलाओं का अस्तित्व अलग–अलग बना था, राजा, महाराजा अपने घर में पटरानियाँ–रानियाँ और अन्य कई महिलाऐं रहती थी। महिलाओं को कई प्रकार की स्थितियों के बीच जीवन चलता रहा था।

विकास क्रम में अशिक्षा, गरीबी, परम्पराओं के कारण महिलाओं को, कई समुदायों और जातियों ने उसके अस्तित्व को स्वतंत्र नहीं रहने दिया। फलस्वरूप महिला परम्परा और प्रथाओं के साथ ही अपना जीवन जीती रही।

बहुप्रथा, दहेजप्रथा, गौनाप्रथा का चलन बना रहा और महिलाऐं समाज की बनी दीवारों के बीच गुलाम की तरह जीवन के बीच घुटती रहीं।

आधुनिक सभ्यता में भी ऐसी प्रथाऐं देखी जाती है, जिनके कारण लड़कियों को जनम लेते ही मार दिया जाता है। परम्परा, प्रथा और गरीबी के कारण अनजाने लोगों को बेच दिया जाता है। उनका जीवन और उनका भविष्य समाज ही क्यों तय करता है ?

आज नारी समाज सुशिक्षित और विचारवान है। ऐसी असामाजिक परम्पराऐं और प्रथाओं जिनसे नारी का शोषण किया जाता हो, उनका जीवन तय करने का अधिकार प्रथाओं और परम्पराओं के मार्फत हो, तब ऐसे समाज में जागरूकता और जागृति होना आवश्यक है, ताकि हर व्यक्ति की भाँति नारी भी अपना जीवन स्वतंत्र और सहजरूप में जी सके।

मनुष्य के साथ कंधे से कंधा मिलाकर समाज और देश की उन्नति में अपना पूर्ण योगदान दे सके। कुछ प्राचीन संस्कृतियों और समाजों में महिलाओं की स्थिति विभिन्न रूपों में देखी गई। कुछ असमान और अनुचित प्रथाओं के प्रमाण भी मिलते हैं।

प्राचीन ग्रंथों और साहित्य में महिलाओं की स्थिति को अवसर पुरूषों के अधीन बताया गया है। ये जरूरी नहीं कि महिलाओं के जीवन का सौदा सीधे किया जाता था, लेकिन कुछ समाजों में दास प्रथा और विवाह संबंधी लेन–देन जैसी प्रथाऐं प्रचलित थी। इसमें कभी–कभी महिलाओं को संपत्ति के रूप में बेचा जाता था। विशेषकर निम्न वर्गों या युद्ध में पराजित समुदायों की महिलाओं को दास के रूप में बेचा जाता था। उपहार में दिया जाता था। हालांकि यह बात भी स्पष्ट है कि प्राचीन भारत में महिलाओं को अलग–अलग समाजों और कालखण्डों में अलग–अलग अधिकार और स्वतंत्रता मिली थी।

ऐतिहासिक रूप से महिलाओं का व्यापार या बेचना युद्ध, सामाजिक असमानता ओर आर्थिक दबावों से जुड़ी परिस्थितियों में देखा जा सकता है। लेकिन इसे पूरे भारतीय इतिहास का सामान्य हिस्सा नहीं कहा जा सकता।

यदि हम अपने देश की सामाजिक और पारिवारिक सरंचना और आचार व्यवहार पर गौर करेंगें तो पाते हैं कि वर्तमान में हम चारों तरफ आधुनिक जीवन शैली और विकास की चकाचौंध भरी रौशनी देख पाते हैं, परन्तु शिक्षा, गरीबी, असमानता के कारण आज भी हमारे लाखों करोड़ों परिवारों में लड़की को पैदा होना ही अशुभ मान लिया जाता है। उनकी देख–रेख और परवरिश के लिए कई बंदिशें और दीवारें बनाई जाती है।

महिला सशक्तीकरण, विकासोन्मुखी योजनाओं, बदलते परिवेश और शिक्षा के प्रसार और प्रचार से महिलाओं को स्वतंत्र और समान अवसर से जीवन जीने के रास्ते बनते जा रहे हैं फिर भी महिलाओं के प्रति समझ में आज भी नजरिया और सोच प्रीाचनकाल जैसी ही है, जो धीरे–धीरे बदल जाने की ओर समाज में बदलाव के संकेतों से मिलती है।

समाज और परिवार में महिलाओं के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। उनकी क्षमता पर भी संदेह ना होते हुए भी इनकी स्वतंत्रता और खुले वातावरण में इनके योगदान को सीमित व्यवस्था से अधिक अनुकूलता और प्रतियोगी बनाने के प्रयास होते रहने से समाज में फैली कई परम्परायें और प्रथाओं को, जो महिलाओं को एक इंसान, एक वस्तु समझकर इनके जीवन को दूभर नहीं किया जा सकता।

समाजोद्वार, विकासशील विचार, आधुनिक विकासक्रम में पुरूषों की पितृसत्तात्मक मानसिकता के साथ ही महिलाओं को स्वंय आगे बढ़ने अपनी स्वतंत्रता और अपनी जीने की नई कल्पनाओं के साथ पुरूषों के साथ कधें से कंधा मिलाकर समाज के विकास में अपना योगदान करना ही हो, इनके लिए कुरूतियाँ, प्रथाऐं और परंपरायें जो इनके जीवन जीने के लिए, इनकी स्वतंत्रता और समानता के साथ स्वयं के निर्णयों में बाधक जंजीरों को तोड़ना होगा। महिलाओं को आगे आकर खुद के जीवन को अधिक क्षमतावान, प्रभावशाली और गौरवपूर्ण बनाने के लिए बढना होगा।

ऐसा भी नहीं है कि हम यदि बदलाव चाहें और वह बदलाव ना हो, आत्मविश्वास, व्यवहारिक सोच क्षमता, लगन और नैतिक मूल्यों के साथ ऐसी व्यवस्था या प्रथाओं को बदल सकते हैं,

जो मानव, मानव के बीच ऊँचें और नीचे छोटे–बड़े का भेदभाव रखती हो।

हजारों वर्षो में सैकड़ों ऐसी प्रथाऐं और सामाजिक परम्पराओं की इतिश्री हुयी है जो दर्शाती है कि मानव के जीवन के विकासक्रम में बदलाव होना लाजिमी है। बदलाव होते रहते हैं, और आगे भी होते रहेंगें। बस एक चुनौती, पूरी क्षमता, लगन और सामाजिक मानदण्डों के आतंरिक फैलाव के बीच इनके पूरा करने का बीड़ा उठाना ही होगा।

स्त्री तो इस जगत की उत्पत्ति का मूल है और समाज, परिवार का मुख्य आधार, इसे इसका हक और आत्मसम्मान तो मिलना ही चाहिए, इसके लिए उसे खुद ही आगे बढना होगा।

*****

नैना का जन्म

दूर रौशनियों से जगमगाती हवेली रंग–बिरेंगे रंगों से जैसे उसे नहलाया जा रहा हो, यह ठाकुर मौहर सिंह की हवेली है। नजदीक आकर देखने से लगता है जैसे हवेली में कोई बड़ा जलसा है। बाहर आने वालों की भीड़ है, हवेली के नौकर सभी का अभिवादन करके उनका स्वागत कर रहे हैं।

एक तरफ कारों का काफिला सा है। कई लोग अपनी–अपनी कार से आकर उतरकर हवेली में जा रहे हैं। सभी खुश लग रहे हैं। आने वाले हर मेहमान के हाथों में कुछ पॅकेट है जो गिफ्ट जैसे लग रहे हैं।

हवेली के अंदर सभी पुरूष इधर–उधर दिखाई दे रहे हैं, नौकर–चाकर सभी मेहमानों की सेवा करते नजर आ रहे हैं। अंदर रौशनी अपनी पूरी तरह से चारों ओर सभी को प्रकाशमय कर रही हैं। बड़े–बड़े सोफे मंहगी कुर्सियाँ और मेजें रखे हैं जिन पर कुछ लोग बैठे बातें कर रहे हैं।

एक ओर बड़ा सा आलीशान सोफा रखा है जिस पर बिन्दा अपनी बेटी को गोद में लिए बैठी है। हर आने वाला बिंन्दा के पास जाकर मिलता है और अपनी शुभकानाऐं देता चला जाता है। पास ही दूसरे सोफे पर मौहर सिंह अपने दोस्तों और आने वाले हर मेहमान का स्वागत करते नजर आ रहे हैं। बिन्दा और मौहर सिंह के चेहरों पर खुशियों के उमंग, उल्लास दिखाई दे रहा है। चारों तरफ मेहमानों की खातिरदारी के लिए

तरह–तरह के व्यंजन और पेय पदार्थ रखे हैं। नौकर भी मेहमानों की सेवा सत्कार करते दिखाई दे रहे हैं।

बिन्दा के गोद में इधर–उधर नज़र दौड़ाती छोटी सी प्यारी बच्ची और खुशियों से सराबोर बिन्दा है जो आज अपनी पहली बेटी का जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मना रही है।

यह हवेली आज खुशी और उल्लास से भरपूर सी है। बीस सालों के बाद ठाकुर मौहर सिंह के इधर घर में एक बेटी ने जन्म लिया है। आज वर्षों की मुराद, मौहर सिंह और बिन्दा की पूरी हुई है। मौहर सिंह के कम्पनियों के सभी कर्मचारी, दोस्त, और उनके परिवार सभी आज इन खुशियों के पल में शामिल हैं।

नैना का बचपन

ठाकुर मौहर सिंह की बेटी नैना अब तीन साल की है, बेटी की देखरेख के साथ उसकी पढ़ाई के लिए एक लेड़ी टयूटर रोज आकर नैना को पढ़ाती है। बिन्दा नैना को पढ़ते–खेलते और हंसते देखकर खुश होती है।

नैना जैसे–जैसे बड़ी होती जा रही है वैसे–वैसे वह अधिक आत्मविश्वासी और समझदार घुड़सवारी भी सीखने के वास्ते हर सुविधा ठाकुर ने मुहैया कराई है, ताकि नैना हर तरह से हर काम में अच्छी तरह से सीख सके।

नैना चपल और तेज–तर्रार होने के साथ युवा और खूबसूरत नैन–नक्श से बड़ी ही होनहान और परी जैसी लगने लगी है।

जैसे–जैसे नैना की उम्र बढ़ती जा रही है वैसे–वैसे संगीत कराटे, घुड़सवारी, तैराकी, बालीबॉल, हॉकी और मुक्केबाजी के

सभी दांव और इल्म सीखकर एक कुशल, स्वस्थ और आत्मविश्वासी नैना का आकार दिखाई देने लगी है।

अतीत की यादें

रात का समय है, ठाकुर मौहर सिंह अपने कमरे में, अपनी मेज पर बैठा, कुछ जरूरी कागजातों को देख रहा है, तभी पीछे से बिन्दा कमरे में आती है, वह आकर नजदीक बैठ जाती है, मौहर सिंह कागजातों में कुछ ढूँढ रहा है, बिन्छा पूछती है कि क्या ढूँढ रहे हो ? तब मौहर सिंह, बिन्दा को बताता है कि एक कागजात है जो मिल नहीं रहा है। कल देख लेना, दिन भर तो व्यापार का काम करते ही हो, काम के साथ आराम की भी जरूरत है, बिन्दा की इन बातों को सुनकर मौहर सिंह कुछ नहीं कहता। अचानक उठकर, सामने रखी आलमारी खोलता एक डायरी उठाकर, दरवाजा बंद करके वापस आकर अपनी कुर्सी पर बैठकर जाता है। बिन्दा कुछ समझ नहीं पाती और पूछती है कि याद है कल क्या करना है? एक नजर मौहर सिंह बिन्दा को देखता है और उठकर डायरी हाथ में संभाले हुए पलंग की तरफ बढता है। पलंग पर बैठता है बिन्दा कहती है वो तो तुम्हें करना है। तुम तो उसके प्यारे पापा हो, तुम भी तो प्यारी मम्मी हो ? हूँ तो बिन्दा सर हिलाती है मुझे नींद आ रही है, बहुत रात हो गई, सो जाओ मौहर सिंह एक तरफ तकिए के पास डायरी रखता है और लेट जाता है तुम भी सो जाओ...नैना सो गई ? हाँ कब की...

दोनों पलंग पर लेटे हैं, मौहर सिंह बिन्दा की तरफ देखता है जो आँखें बंद किए सो रही है, खुद सोने की कोशिश करता है, अचानक हाथ बढ़ाकर सिरहाने रखी डायरी को उठाता है और उसे खोलकर पन्ने पलटने के बाद अचानक रूक जाता

है, उसकी आँखें छत की ओर देखने लगती हैं, जैसे वह पुरानी यादों को फिर याद कर रहा है। अचानक उसके चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान उभरने लगती है, जैसे उसे कुछ याद आ गया हो जो उसे खुशी के ये पल दे रहा है। आँखों में जैसे यादों के साये धीरे–धीरे शक्ल लेने लगे हो और वह अतीत के उन पलों में उतरता चला जा रहा था जो उसके जीवन के बड़े अच्छे, खुशहाल और यादगार लम्हें थे। सपनों के संसार में खो जाता है।

*****

मौहर सिंह – बिन्दा की मुलाकात

दोपहर का समय चारों तरफ हरियाली और सुनहरी बालियों से सजे, भरे हुए खेत, कहीं–कहीं कुछ मजदूर खेतों में काम करते दिखाई दे रहे हैं, दूर एक ओर युवती बिन्दा अपनी सहेलियों के साथ एक खुले घास के मैदान में बकरियों को चरा रही है।

दूर एक तरफ एक जीप आती हुई नजर आते ही बिन्दा उछल पड़ती है। वह अपनी सहेलियों को आवाज देकर पास बुलाती है और दूर से आती हुई जीप की ओर इशारा करते हुए कहती है कि कमली, वो देख चार पहियों वाली गाड़ी, चल देखेंगें कैसे चलती है। कमली और अन्य सहेलियाँ थोड़ा झिझकती और जाना नहीं चाहती लेकिन बिन्दा के कहने के बाद वह सभी लड़कियाँ उस रास्ते की ओर दौड़ लगाने लगती है जिस पर से जीप आने वाली है।

ठाकुर मौहर सिंह जीप चलाते हुए देखता है कि कुछ लड़कियाँ दूर बीच रास्ते में खड़ी हैं। जैसे–जैसे जीप नजदीक आती है लड़कियाँ बिना डरे रास्ते से नहीं हटतीं और मौहर सिंह की जीप एकदम नजदीक आ जाती है, ना चाहकर भी मौहर सिंह जीप रोकता है। तुम लोग बीच रास्ते में क्यूँ खड़े हो ? मौहर सिंह लड़कियों से पूछता है, कमली सकपका कर बताती है कि बिन्दा ने कहा, चार पहिएवाली गाड़ी देखनी है। हमें देखनी है। बिन्दा की ये बात सुनकर मौहर सिंह बिन्दा को देखता है। लहंगा ब्लाउज और चुनरी से सजी युवा, खूबसूरत सी अल्हड़

लड़की है बिन्दा। मौहर सिह ऊपर से नीचे तक बिन्दा को देखता है, कमली भी हैरान है कि जीप वाला बिन्दा को कैसे प्यार भरी नजरों से देख रहा है।

बिन्दा आँखों से एकटकी लगाऐ हुए मौहर सिंह को देख रही है जो जीप से उतरकर उसी की ओर आ रहा है। तो बिन्दा तुम्हारा नाम है ? बिन्दा से पूछता है, बिन्दा 'हाँ'। कहकर मौहर सिंह की प्रश्न का जवाब देती है। 'तो जाओ देख लो, चार पहिया गाड़ी', ये चलती कैसे हें ? मोटर से – मौहर सिंह उसके प्रश्न पूछने और उसकी उत्सुकता बिन्दास मिजाज को देख मन ही मन मुस्कुराता है, मोटर –वो कहाँ है, बिन्दा फिर एक प्रश्न पुछती है। ये सब जानकर क्या करोगी ? बिन्दा कुछ देर सोचती है, फिर पूछती है, मैं इसे चला नहीं सकती ? क्या करोगी चलाकर। इसे सीखना होता है कि कैसे चलती है।

कमली से रूका नहीं जाता है बड़बोली बिन्दा की बातों से वह बिन्दा से पूछती है कि क्या तू इसे चलायेगी ? इसे सीखना पड़ता है। कमली–क्यों नहीं सीख सकती मैं? मौहर सिंह बिन्दा से पूछता है कि सीखोगी, मैं तो तुम्हें जानती नहीं। चलो अपनी पहचान करा देता हूँ। मेरा नाम मौहर सिंह है–वो पहाड़ी के पीछे मेरा गाँव है, तभी कमली बिन्दा से कहती है कि बिन्दा चल पता नहीं बकरियाँ किधर हैं हम सबकी। अरे हाँ हमारी बकरियाँ.... बिन्दा याद करके बोलती है। चल देखते हैं...तभी मौहर सिंह पूछता है तुम्हारे पास कितनी बकरियाँ हैं ? है ना, दो, तो तुम्हारा नाम बिन्दा है, अच्छा नाम है जैसी तुम वैसा ही नाम है।

कमली बीच में टोक कर कहती है– ये मेरी सहेली है। चल कमली...चल चलते हैं। बिन्दा के ऐसा कहने पर सभी लड़कियाँ एक ओर जाने लगती हैं। यह देख मौहर सिंह कहता है –

बिन्दा.... बिन्दा मुडकर पीछे देखते हुए रूकती है। हूँ.... मौका मिला तो फिर मिलेंगें.... बिन्दा कमली को देख मुस्कुराती है और फिर झट से अपनी सहेलियों के साथ जिस तरफ बकरियाँ हैं, उसी तरफ दौड़ती हुई चली जाती है। मौहर सिंह खड़ा–खड़ा सभी को जाते देख रहा है। चेहरे पर एक मुस्कान है, पलटकर जीप की ओर बढता है। बैठकर जीप स्टार्ट करता है और जीप आगे बढने लगती है।

*****

गाँव की जानकारी

मीलों तक फैले हुये खेतों के बीच पक्की मिट्टी के संकरे रास्ते पर धीमी गति से जीप आगे बढती जा रही है। मौहर सिंह के चेहरे पर अभी भी मुस्कान है और आँखों में उस लड़की का मुस्कुराता चेहरा जिसने अपना नाम बिन्दा बताया था।

खेतों को निहारते मौहर सिंह की नजर दूर सामने से आते एक बुजुर्ग पर पड़ती है, कुछ पल सोचता है कि जीप की रफ्तार तेज करता है और जल्दी से आते हुए बुजुर्ग के नजदीक पहुँचना चाहता है।

ग्रामीण बुजुर्ग हाथ में लाठी लिए धीरे–धीरे जीप के करीब आता है, वह दूर से आती जीप को लगातार देख ही रहा थाउसे जीप के जाने के लिए रास्ता दिया और एक ओर किनारे खड़ा हो गया।

बुजुर्ग अभी भी एकदम पास आती जीप और उस पर बैठे मौहर सिंह को देख रहा था कि अचानक जीप बुजुर्ग के सामने आकर रूक जाती है।

राम राम सा.... बुजुर्ग कुछ समझ पाता कि मौहर सिंह राम राम कहकर सम्मानजनक रूप से कहते हुए नीचे उतरकर खड़ा हो जाता है।

राम राम....कौन है ?

जी, मैं....मौहर सिंह...ठाकुर मौहर सिंह....

बूढा आदमी इतना सुन हाथ जोड़कर पूछता है।

बड़े ठाकुर साहब के.... छोटे ठाकुर....

जी....

बूढा हो गया हूँ....यादास्त कमजोर हो गई है। वर्षों हो गए... हवेली तक नहीं जा पाया।

तो क्या आप हमारे घर को आते जाते थे ?

बोत बरसा हो गए... बहुत सेवा की ठाकुर खानदान की, भैंस पोहें की मैं ही तो देखभाल करता था।

अच्छा अब याद आया, वो....परदेश में छोटे ठाकुर पढ़ने गये थे...तो क्या...वो....

जी वो मैं ही हूँ....

परमात्मा खुश रखे...बूढा आदमी हाथ जोड़कर दुआऐं देता है, तभी, मौहर सिंह जो जानना चाहता था वह पूछता है।

काका वो पीछे बाई ओर गाँव है, क्या नाम है गाँव का ?

अच्छा वो....तो मुंशी पाड़ा है.... वो तो सब बेड़ियों की बस्ती है. ..

बेड़ियों की बस्ती...ठीक है....

ए गाँव तो सबसे बड़े ठाकुर सा ने बसाया था सब लोग खेत का ही काम संभालते हैं...आप का ....ओह ....समझा ...काका आप कहाँ रहते हैं....

मैं तो पार जा रहा हूँ....बस दो तीन कोस है....शाम तक पहुँच जाऊँगा....

मैं छोड़ दूँ काका....

नहीं ठाकुर साहब...चला जाऊँगा....अब तो कितने दिन और रूकोगे...

अब यहीं रहूँगा....भैया अकेले थे...इतनी बड़ी जमीदारी...उनका हाथ बंटाना है और उनकी सेवा करनी है....

अच्छी बात है...

मैं जाऊँ ठाकुर सा।

मौहर सिंह हाथ जोड़कर बूढे आदमी को आगे जाने के लिए कहता है।

ठीक है काका....राम राम।

बूढा आदमी चला जा रहा है, मौहर सिंह वहीं खड़ा हुआ बुदबुदाता है...बेडिनी...मुंशी पाड़ा....मौहर सिंह जानता था कि बेड़िनी जाति के लोग शादी ब्याह और तीज त्यौहारों पर जमीदारों के यहाँ सामंतों के यहाँ नाच–गाकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। थोड़ी देर तक तो मौहर सिंह सोचता रहा लेकिन अभी भी उसकी आँखों में बिन्दा का हंसता हुआ चेहरा है....यकायक वह मुस्कुराता है और झट से जीप पर जाकर बैठता है। जीप स्टार्ट करता है...जीप रास्ते पर खेतों के बीच जा रही है। दूर धीरे–धीरे सूरज ढलने लगा।

*****

ठाकुर जसवंत सिंह एवं तत्कालीन हालात

ठाकुर जसवंतपुर अंग्रेजी राज्य में एक जमींदारी का क्षेत्र था जिसमें दस गाँव और कुल इक्कीस कोस में कुछ जंगल, रास्ते और खेती होती थी।

जमींदार जसवंत सिंह का ऐश्वर्य और दबदबा अंग्रेजी हुकूमत के ऊँचे अधिकारियों तक था, इसीलिए जसवंत सिंह ने अपनी इतनी बड़ी खेती को संभालने, कामकाज करने के लिए दसों गांव के लोगों को अपने यहाँ कुछ न कुछ काम दे दिए थे। काम के बदले में जसवंत सिंह गांव की सुरक्षा के साथ, प्रतिवर्ष एक सौ रूपया और हर माह के लिए अनाज देता था। त्यौहारों पर ठाकुर की हवेली पर लोग आकर नए—नए कपड़े बर्तन इत्यादि सामान भेंट में पा जाते थे।

ठाकुर जसवंत सिंह के दो बेटे और एक बेटी थी। बेटी का विवाह मालवा के एक जमींदार के इकलौते बेटे से हुआ था। बेटी की शादी के बाद ठाकुर जसवंत सिंह की पत्नी लीला का स्वर्गवास हो गया था। तब उनका बड़ा बेटा संग्राम सिंह बीस बरस का और मौहर सिंह पन्द्रह वर्ष थे।

अंग्रेजी स्कूल में संग्राम सिंह की पढ़ाई हो रही थी कि माता की मौत के बाद, अपने पिता को तन्हा देखकर जमींदार के कई काम देखना और समझना शुरू कर दिया था।

ठाकुर जसवंत सिंह चाहते थे कि संग्राम सिंह अपनी शिक्षा पूरी करें, लेकिन स्वतंत्रता संग्राम के कारण अंग्रेजी हुकूमत ने

जमींदारों पर दबाव बनाना शुरू कर दिया और वो चाहते थे कि जमींदारी के क्षेत्र में क्रांतिकारियों, स्वतंत्रता संग्राम के साथ कोई एक व्यक्ति भी नाता ना रखे।

ठाकुर जसवंत सिंह के मन में देश के स्वाधीन होने की चाह थी क्योंकि उनके पिता ठाकुर अचल सिंह सदा स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े कार्यो में अपनी आर्थिक सहयोग देते रहे थे। ठाकुर जसवंत सिंह भी चाहते थे कि वे देश के लिए, आजादी का नारा लगाने वालों के लिए कुछ करें लेकिन जमींदारी हद में अंग्रेज अफसरों, पुलिस और सेना की तैनानी से वह कुछ ना कर सके। एक प्रकार से उनको नजरबंदी में रहना पड़ा था।

विश्वयुद्ध के चलते अंग्रेजी हुकुमत ने अपनी तानाशाही से हर क्षेत्र के लोगों को सेना में भरती करना आरंभ कर दिया, जसवंत पुर के कई गाँव के जवान और अधेड़ युवकों, आदमियों को डरा धमकाकर फौज के कई मजदूरी वाले कामों के लिए ले जाया गया। चाहकर भी ठाकुर जसवंत सिंह कुछ ना कर सके लेकिन उन्होंने सेना में भर्ती की भनक और जबरन हुक्म, अधिकारियों की जबरदस्ती देख, संग्राम सिह को अपनी मौसी के यहाँ छिपकर भेज दिया था।

मौहर सिंह था छोटा नावालिग, लेकिन फिर भी हुकुमत का डर ऐसा था कि मौहर सिंह को अपनी बेटी के पास मालवा, कुछ लोगों के साथ भेज दिया। कई गाँव खाली सूने सूने हो गये। खड़ी फसलों को खलिहान तक लाने वाला कोई नहीं था। हालात ऐसे थे कि राजे अंग्रेजी हुकुमत के विरोध की चिंगारियाँ पूरे देश में फैलने, अंग्रेजों और उनकी सेना द्वारा गिरफ्तारियों और धर–पकड़ की खबरें आमजन तक की जुबान पर आने लगी थी। ठाकुर जसवंत सिंह ने अपने गोदाम

बचे–खुचे गाँव के बुजुर्ग और महिलाओं बच्चों के लिए खोल दिए ताकि ऐसे हालात में कोई भूखा न रहे।

एक दिन जसवंत सिंह को उनके कुछ लोगों ने आकर बताया कि पूरब की ओर से करीब तीस से चालिस बैलगाड़ियाँ और साथ में स्त्री–पुरूष बच्चे–बड़े रास्ते से आते दिखाई दिए है। ठाकुर जसवंत सिंह समझ गये, कि हो ना हो अंग्रेंजों के शोषण मनमानी आदि से परेशान ये सभी लोग होंगें। वे अपना गाँव छोड़ कहीं जा रहे होंगें। फिर उनको एक ख्याल आया कि ये आखिर ऐसे हालात में जायेंगें कहाँ ?

ठाकुर जसवंत सिंह जो भी हवेली के करिंदें थे, उनमें से कुछ लोगों को लेकर उसी ओर जाते हैं। जब वो उस काफिलें के पास पहुँचते हैं, तो पता चलता है कि ये सभी गरीब नाच गाकर अपना जीवन बिताने वाले लोग हैं। जिनको अंग्रेजी सेना ने इनको सेना के लिए बैरक बनाने के लिए गाँव खाली करने या जेल में बंद करने का हुक्म दिया था। डर, मजबूरी, असहाय से सभी गाँव वाले गाँव छोड़कर निकल भागे थे।

ठाकुर जसंवत ने उनको प्रेम और अपने पन से और लोगों की जरूरत समझ कर अपनी ही जमींदारी में एक गाँव बसाने को कहा, और सभी को वर्ष भर काम भी देने का वादा कर उन सभी को साथ चलने को कहा था। उन सभी ने एक व्यक्ति जिसने अपना नाम मुंशी बताया था, उसने सभी से सलाह मशवरा करके साथ चलने और उनके बताये स्थान पर रहने को राजी होने की बात ठाकुर को बतायी।

वक्त गुजर रहा था, कुछ महीनों का स्वतंत्रता आंदोलन तेज हो गया था। इधर ठाकुर जसवंत सिंह ने एक गाँव मुंशीपाड़ा

बसा दिया जिसमें आये हुए सभी बड़े, बूढ़े स्त्रियाँ और बच्चों को नया जीवन, नई राह मिल सके।

वक्त गुजरता रहा, देश की आजादी को कढ़ाई से अंग्रेज पस्त हो गये और देशवासियों को एक लंबी लड़ाई का फल मिला। देश स्वतंत्र हो गया। ठाकुर जसवंत सिंह की हवेली जो सुनसान थी, उसकी चमक लौट आयी थी। संग्राम सिंह ने अपने पिता के साथ जमींदारी का कार्य करने की मंशा को जैसे ठाकुर जसवंत सिंह ने मना लिया। ठाकुर चाहता था कि संग्राम और आगे अपनी पढ़ाई जारी रखे। लेकिन संग्राम सिंह का उत्तर था कि बढ़ती उम्र में इतने सभी काम वे (पिता) अकेले नहीं संभाल सकते, और यदि आगे की शिक्षा देनी ही है तो क्यों ना मौहर सिंह को दें, जिससे ठाकुर की तमन्ना पूरी हो सके।

मौहर सिंह युवा था लेकिन अपने पिता और अपने भाभी और बड़े भाई का सदा सम्मान और आदेश मानता रहा था। संग्राम को पता था कि बहिन की भी ये ही राय और सुझाव था, जब वह मौहर सिंह को मालवा से वापस लाया था मौहर सिंह को आगे पढ़ाई के लिए विदेश से शिक्षा दिलवाऐं।

कुछ समय के साथ सभी व्यवस्थित होने लगा था। ठाकुर जसवंत सिंह के हर काम में संग्राम सिंह सहयोग करता था, जिससे खेती और अन्य सभी कार्य सहज होंने लगे थे। मौहर सिंह की प्रारंभिक शिक्षा स्कूल में पूरी हो रही थी।

देश आजाद हो चुका था, हर भारतीय के चेहरे पर मुस्कान और कुछ नया करने की तमन्नाऐं थी। ठाकुर जसवंत सिंह ने मुंशी पाड़ा के साथ–साथ और दो गाँवों के लिए मंदिर बनवाऐं जिससे गरीब, मजदूर लोगों को पूजा अर्चना का प्रसाद मिल

सके। समय–समय पर उदार मन से मंदिरों में सहयोग करके सभी गाँववासियों को एक नया जीवन देने का प्रयास किया था।

मौहर सिंह को आठवीं कक्षा के बाद विदेश अध्ययन करने के लिए भेज दिया गया था। अब वर्षों के बाद मौहर सिंह वापस आया था।

*****

ठाकुर परिवार

मौहर सिंह की जीप हवेली के सामने आकर खड़ी करके हवेली के अंदर चला गया। हवेली के अंदर सामने के मेहमान कक्ष में पिता जसवंत सिंह भाई संग्राम सिंह और भाभी ललीता बैठे बात करते दिखाई देते है।

संग्राम सिंह की नजर मौहर सिंह पर जाती है। वह मौहर सिंह को अपने पास बुलाता है। ठाकुर जसवंत सिंह व ललिता देखती है। मौहर सिंह आकर कुर्सी पर बैठ जाता है।

मौहर सिंह सैर सपाटे के बारे में ठाकुर जसवंत सिंह पूछते हैं, तब मौहर सिंह खेतों, बगीचों, बागों और गाँवो ंके बारे में बताता है कि वर्षों बाद अपने खेतों बागों को देखा और ये भी बताता है कि उसे शहर की अपेक्षा यहाँ अच्छा लग रहा है।

संग्राम सिंह, मौहर सिंह से जानना चाहता है कि विदेश से पढ़ाई पूरी करे आगे क्या करना चाहता है? इसी विषय पर जसंवत सिंह कहते हैं कि उनकी इच्छा है कि शहर में जाकर एक फैक्ट्री खोलें जिसमें जिसके बारे में पढाई की है। वही काम करें, अच्छा होगा कि एक फैक्ट्री हम सभी के लिए एक और मिलिकीयत के लिए परिवार के लिए होगी।

मौहर सिंह अपने पिता और भाई की बातों पर उनको कहता है कि अभी कुछ महीने पर वह अपने खेतों खलिहानों के बीच ही रहना चाहता है, आगे जैसा आप कहते हैं वैसा ही होगा। भाभी ललिता मौहर सिंह की कुछ महीने जमींदारी की जमीन,

जायदाद में घूमने की मंशा का सामर्थन करती है और संग्राम सिंह और ससुर को मौहर सिंह की इच्छा पूरी करने को मना लेती है। मौहर सिंह जानता है कि घर में यदि उससे सबसे ज्यादा स्नेह कोई करता है तो वह उसकी भाभी ललिता ही हैं उसे उसकी हर छोटी बड़ी मांग पर कभी भी ललिता ने पूरी करने में कमी नहीं होने दी।

संग्राम सिंह अपने पिता को कुछ हिसाब और शहर की मंडी में जाने वाले अनाज आदि की बात फिर करने लगता है मौहर सिंह दोनो ंकी बातें सुन तो रहा है लेकिन वह कुछ पूछना चाहता है ललिता मौहर सिंह को देखती है और मौहर सिंह ललिता को। ललिता इशारे में पूछती है कि क्या बात है ? ललिता मौहर सिंह के चेहरे के भाव भगिमा को देख समझ जाती है कि वह कुछ कहना चाहता है।

ललिता संग्राम सिंह से कहती है। कुछ कहना चाहते हैं ? संग्राम सिंह के पूछने पर मौहर सिंह जानना चाहता है कि उनकी जमींदारी की हद में कुल कितने गाँव होंगे ? ठाकुर जसवंत सिंह बताता है कि पहिले कुल दस गाँव थे जिसमें से चार पाँच बसाये थे, कुछ गाँव खाली, टूटे मकान और सुखे कुंए के बाहर से लोगों को लाकर यहाँ बसाया था। मौहर सिंह पूछता है कि जो बसाये चार गाँव वो कौन–कौन से हैं। संग्राम सिंह, मौहर सिंह को गाँवों के बारे में बताता है और ये भी बताता है कि कई बेडियों को, जो अंग्रेजी सेना के डर से गाँव छोड़कर कहीं जा रहे थे, उनको बसाया जिसका नाम मुंशी पाड़ा है। संग्राम सिंह सलाह भी देता है कि जब इधर–उधर आते जाते रहोगे तो सब खुद–ब–खुद जान लोगे। यदि मजदूरों की जरूरत के लिए कैसे इन गाँवों को बसाया। यदि ये सभी यहाँ रूकने रहने को तैयार नहीं होते तो हमारी सारी फसलें

बरबाद हर साल होती और लाखों का घाटा होता। समझ गया, कहकर मौहर सिंह कुर्सी से उठकर एक ओर जाने को है तभी ललिता भी मौहर सिंह के पीछे—पीछे चली जाती है।

मौहर सिंह अपने कमरे में आता है तो वह देखता है कि भाभी ललिता भी कमरे में आती दिखाई देती है। भाभी के आने का कारण पूछता है तो ललिता पूछती है कि वह यह जानना चाहती है कि जो बात फैक्ट्री (कारखाना) की दोनों सोच रहे हैं क्या तुम भी कुछ ऐसा ही चाहते है कि ऐसा काम करना जो वह अपनी शिक्षा से मिले ज्ञान से सफलता पूर्वक कर सकें? वह भाभी को धन्यवाद देता है कि उन्होंने उसके मन की बात को जानना चाहता और पूछा।

ललिता कहती है कि जब वह बहू बनकर आई थी तब यह मात्र आठ वर्ष का था, तब से अब तक उसने उसे अपने बेटे की तरह ही पाला है। परमात्मा ने उसे कोई औलाद तो नहीं दी, लेकिन वह खुश है, कि उसको एक बेटा देवर बनाकर उसे मिल गया। ललिता पहले थोड़ी दुखी होती है लेकिन अचानक उसके चेहरे पर खुशी दिखाई देने लगती है। मौहर सिंह झुककर ललिता के पैरों में गिर जाता है और कहता है कि मैने माँ को तो बचपन में ही खो दिया लेकिन आप के प्यार और दुलार ने कभी अहसास ही नहीं होने दिया कि मेरी माँ नहीं है। जो मन से स्नेह दुलार, त्याग, ममता और करूणा देता है उससे बड़ा इस दुनिया में और कौन हो सकता है।

ललिता प्यार से उसके सर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देती है। सदा सुखी रहो।

*****

गाँव मुंशीपाड़ा

गाँव मुंशीपाड़ा का एक घर, एक बूढा आदमी जिसका नाम मंगल है, सुखी घास के गठठर बांध रहा है, उसी के कुछ दूर उसकी बेटी कुन्ता कोई पुराना कपड़ा हाथों से सिल रही है।

मंगल काम करते करते कुछ पूछता है कि पता है कुछ लखना के बारे में ? कुन्ता कपड़ा सिलते–सिलते गुस्से में जवाब देती है कि उसे क्या लेना देना। न मेरे लिए तो सब मर गये। मंगल कुन्ता का जवाब सुनकर हाँ में सिर हिलाता है। बुदबुदाता है जैसे कुन्ता सही कह रही है।

कुन्ता का गुस्सा अभी भी है वह मंगल से कहती है कि ऐसे लोगों से भगवान किसी का रिश्ता नहीं जोड़े। बापू तुमने मुझे बिकने से बचाया और मेरी शादी जो गाँव में पहली थी, करवाई लेकिन मेरा भाग्य एक बेटी होते ही फूट गया सब, बरबाद हो गया। सब कुछ बदल गया। कुन्ता खुद को अभागिन कहते हुये रोने लगती है कि वह एक बूढे बाप के उपर बोझ की तरह जी रही है। मंगल उसे डांटते हुये समझाता है कि कहीं बेटियाँ बाप के घर कभी बोझ हुई हैं, बेटी है सदा रहेगी, समय का चक्कर बड़ा बलवान होता है। कभी तो कभी सब ठीक हो जायेगा।

कुंता मंगल की बातें सुनकर कहती है कि बापू तुम्हें मैं दुख हीं देना चाहती, लेकिन क्या करूँ, कुंता को मंगल ढांढस देता है और कहता है कि वह दुखी नहीं है, उसने ऐसा कभी सोचा

भी नहीं, बचपन से आज ताकि वह कभी ऐसा सोच भी नही सका क्योकिं वह नहीं होती तो वह अकेला। इसी झोपड़ी में... कहते–क्हते मंगल उदास हो जाता है।

मंगर खुद को संभालते हुए कुंता से पूछता है कि विन्दा बकरियों को लेकर अभी तक नहीं आई? सामने बकरियों के साथ आती बिन्दा दिखाई देती है। मंगल बिन्दा को आवाज देता है बिन्दा बकरियों को एक ओर बांधकर आती है और पूछती है कि क्या नाना को चिंता हो रही थी? क्यों चिंता नहीं होगी? नाना हो मेरे, मुझे मालूम है, इसलिए जल्दी आ गयी। चिंता कर रहे होंगें। क्या बकरियों का पेट भरा कि नही या ऐसे भुखी ही वापस ले आई। कुंता कहते हुये झोपड़े में चली जाती है।

ए माँ बकरियों का पेट तो भर गया लेकिन। लेकिन क्या? कुंता पूछते हुए बिन्दा के पास आती है। बिन्दा बताती है कि आज उसने चार पहियों की गाड़ी देखी मोटरकार...भूँ...भूँ...भूँ...आवाज करती है वो।

कुन्ता सुनकर कहती है कि वो तो केवल ठाकुर साहब के पास ही है। मंगर इतना सुन पूछता है, ठाकुर साब? तू कहाँ मिली...? वो गाँव में आए थे क्या?

क्या गाँव में ? नहीं बड़े रस्ते पर थे मैने देखा , कुन्ता पूछती है कि तू बहुत बातें करती है तेरी आदत है क्या तूने उनसे बात की या दूर से देखा? रूको ना माँ – बताती हूँ। नाम ... नाम बताया मौहर सिंह...मेरा नाम भी पूछा था। मैने अपना नाम बताया बस.... तुझे ये बातें नहीं करनी चाहिए...कुंता बिन्दा को समझाते हुये कहती है कि वे बड़े लोग है। हमारे अन्नदाता है। बड़ों से ऐसे बातें नहीं करते।

कुन्ता ठीक कह रही है तू अब बड़ी हो गयी है बच्ची नही है कि किसी से भी बिना जान पहचान के बात नहीं करते। मालूम है नाना ...मैं क्या करती। मुझे वो गाड़ी देखनी थी। चलती कैसे है बस....ऐसे बात करने में मेरा क्या कसूर है ? उन्होंने मेरा नाम पूछा और अपना बताया बस।

तुझे भुख लगी होगी। कुन्ता बिंदा से पूछती है किसी भी पराये दूसरे लोगों से इस तरह लड़कियों को बात नही करनी चाहिए... समझी। समझ गयी, भूख लगी है माँ दो ना कुछ।

*****

आस्था, एक परम्परा

जब से मुंशी पुरबा बसा है, उसी स्थान के कुछ दूर बहुत प्राचीन देवी का मंदिर था। गाँव वालों ने अपने छूटे हुये गाँव की देवी का स्वरूप, इस मंदिर में देख, पूजा अर्चना प्रारंभ कर दी थी।

बरसों पहिले तक, बेटियों में आस्था रही जो अब काम हो रही थी। आस्था देवी के प्रतिक इतनी थी कि उनको ऐसा लगता था कि बेटी पैदा होने के बाद जब वह सयानी होने लगे तभी देवी की पूजा करके देवी का अन्य परिवारीजनों की खुशहाल जिन्दगी के लिए किसी पुरूष को दान कर दें। गरीबी के कारण ऐसे समय में लोग दान करने में एवज में पैसा लेते थे, ताकि उनके घर का गुजरा भी चल सके।

ऐसी आस्था देवी के प्रति तो हर गाँववारी में थी लेकिन बेटियों को बेचने, 'गोना' के नाम पर जो प्रथा थी वह कुछ कमजोर हो रही थी।

गाँव वालों का 'गोना' का सिलसिला तो जारी था, लेकिन जब उनको इस बात का अहसास हुआ कि बरसों बरस वह अपनी बेटी से मिल नहीं पाते, और जो लोग गोना करके रस्म निभाकर ले जाते थे, वे कई बहाने बनाकर गाँव वालों से फिर मिलकर कई युवकों को साथ लाकर बेटियों को ले जाते।

गरीब असहाय गाँववासी पैसों के लालच और वर्षों से जारी परंपरा को निभाते चले गए, परिणाम हुआ कि बेटियों की

कुशलता और ना मिल पाने का दर्द और दु:ख बढता गया और एक रोज कुछ गाँव के बुजुर्गों ने मिलकर ठाकुर जसवंत सिंह को अपना दुखड़ा बताया।

गाँव वालों की बातें सुनकर जसवंत सिंह ने अपने बड़े बेटे संग्राम सिंह को गाँववालों में फैली परंपरा और आस्था के नाम पर बेटियों के सौंपने का पूरा विवरण बताया, तब संग्राम सिंह ने तय किया कि जब भी कभी अनजान लोग गाँव में आऐ ंतब उसे सूचना गाँववाले देंगें, जिससे ऐसे लोगों का पूरा पता लगाया जा सके कि ये कौन हैं? और ले जाई गई लड़कियाँ कहाँ किस हाल में हैं ?

जब एक दिन संग्राम को मालूम होता है कि कुछ लोग मुंशीपाड़ा में आने वाले हैं, वह अपने कुछ लठैत को लेकर पुराने मंदिर के पीछे लोगों को आने की राह देखते हैं।

गाँव में चार लोग आते हैं और आने वाले सोमवार को मंदिर में गोना करने, अपने साथ लाए लोगों को साथ पूरी रस्म करने के लिए पैसों का लालच देते हैं और वादा करते हैं कि हर तीन महीने में वह गोना की हुई लड़की के परिवार से मिलवाया करेंगें।

पहले के प्लान के अनुसार संग्राम ने गाँववालों को जैसा समझाया वैसे ही वह आए हुए लोगों से बात करते रहे और संग्राम सिंह के आने का इंतजार करते रहे।

अचानक संग्राम सिंह अपने लठैतों को लेकर गाँव में आए बाहरी लोगों को घेर लेता है। वे सभी डर जाते हैं। वे सभी ठाकुर संग्राम सिंह को देख घबरा जाते हैं। संग्राम सिंह उन सभी से पूरी जानकारी लेता है। वे बताते हैं कि कुछ लोगों ने उनको यहाँ आने के लिए बताया था। वे पहले यहाँ कई बार

आ चुके थे। ये भी बताते हैं कि वे सभी बहुत गरीब तबके से हैं, मजदूरी करके जी रहे हैं। कोई भी अपनी बेटी उनको नहीं देना चाहता, इसलिए वे सभी अच्छी मंशा से यहाँ आ गए हैं और गोना करके घर बसाना चाहते हैं। संग्राम सिंह को उसकी कुछ बातों पर भरोसा हो रहा था लेकिन कुछ बातों पर शक भी हो रहा था।

संग्राम सिंह ने गाँववालों से पूछा कि वो क्या चाहते हैं ? गाँव के लोगों ने बताया कि ये परंपरा तो उनके पुरूखों से चली आ रही है पहिले ऐसा नहीं था कि गोना के बाद बेटी को देखा भी न सके। लेकिन अब तीन चार बरस से बेटियों के जो गोने किए थे वे कभी वापस परिवार वालों को देखने को नहीं मिले।

संग्राम सिंह ऐसी प्रथा को समाप्त करने की सलाह भी देता है, लेकिन गाँववालों का विश्वास है कि ऐसा करने से ही देवी का आशीर्वाद उनके और उनके परिवार को मिल पाएगा? यदि ऐसा न करें तो कई मुसीबतें आ सकती हैं वैसे भी जिन्दगी है तो कि वे बेटियों के लिए कहाँ से रिश्ता ला पाऐंगे और किस तरह से घर वालों की पूर्ति कर पाऐंगे जैसे दूसरे समुदायों में चलन है।

गाँववालों की आस्था और विश्वास इतना गहरा देख, संग्राम सिंह गोना के लिए आए लोगों को आने वाले अमावश पर मंदिर में होनी वाली वार्षिक पूजा में आने को कहता है और ये भी कहता है कि उसी दिन गाँववाले जिनको गोना करना है, करेंगें वह भी मौजूद रहेंगें।

गाँववालों को भी इस बात पर खुशी होती है कि ऐसे शुभ दिन पर देवी माता के सामने जो होगा, अच्छा ही होगा।

*****

यादों भरी रात

रात हो चुकी है, मौहर सिंह की नींद उड़ी सी है। उसके आँखों के सामने विंदा का चेहरा, एक मुस्कान और खूबसूरत सादगी से भरी आँखें दिखाई दे रही हैं। वह करवट बदलता और सोचने लगता है कि ऐसा क्या है। उस लड़की में ? एक गाँव की लड़की उसके मन में कैसे उतरती जा रही है? वह तो विदेश में सालों पढाई करते हुये, कॉलेज में एज्युकेशन लेकर आया है। जहाँ नए–नए फैशनेबल और खूबसूरती थी कि तब उसे कोई लड़की दोस्ती करने लायक भी नहीं लगी थी, लेकिन यहाँ आकर एक लड़की का चेहरा, वह भुलाने के प्रयास करने के बाद भी नही भूल पा रहा। हो सकता है, कि जो उसने लड़की में देखा वह कोई बनावटीपन नहीं, सच में सौंदर्य था, सादगी और फूल सी बातें! उसमें सौम्यता और विनम्रता है। उसकी आवाज में मधुरता के भाव हैं, उसकी आँखें बहुत कुछ बिना कहे कह रही थी, लगता था जैसे उनमें सपनों की चमक, कुछ दर्द की गहराई और जिद की चमक थी।

वह कम बोली थी लेकिन एक–एक बात दिल पर उतर गई। कोई साज श्रृंगार और गहने तक नहीं फिर भी ऐसा लगा था जैसे वह खुद को प्रजेंट ना करके जैसी है वैसी ही सुन्दर दिख रही थी। उसके होठों पर हिचक, सीधी सादी सी थी लेकिन चेहरे पर एक तेज था। उसकी चाल में आत्मसम्मान और सच्चाई थी। रात अधिक बीत चुकी, बस मन सोच रहा था कि कब सवेरा हो और वह जाऐं मुंशी पाड़ा।

ठाकुर संग्राम सिंह अपने कमरे से बाहर आकर हॉल की तरफ बढता है। मेज पर रखे कुछ कागजात देख रहा है तभी मौहर सिंह आकर पूछता है कि सुबह–सुबह इतनी जल्दी उठ गऐ तो संग्राम सिंह, मौहर सिंह को बताता है कि उसे अर्जेंट मंडी जाना है। दोपहर से पहिले और वापस भी जल्दी आना है। जब मौहर सिंह वापस जल्दी आने का कारण पूछता है तो संग्राम सिंह मुंशीपाड़ा में किए गए वादे की याद करके, वहाँ जाने के लिए कारण बताता है। ये भी बताता है कि पिताजी चाहते हैं कि वहाँ मैं जाऊँ, लेकिन समय कम है और काम ज्यादा है तभी मौहर सिंह सुझाव देता है कि वह वहाँ जा सकता है ? यदि वह बताएं कि क्या करना है वहाँ आकर ?

संग्राम सिंह मौहर सिह को गाँव के मंदिर में होने वाली पूजा और गाँववालों के कार्यों में शामिल होने की बात बताकर पूछता है कि क्या वह जा सकेगा ? तो उसकी भागदौड़ कम हो जायेगी और मंडी का काम जो अधूरा है वह पूरा हो जायेगा।

मौहर सिंह जो चाहता था वह मिल जाता है, वह रातभर सो न सका था, उसकी आँखों में तो बिंदा का हंसता चेहरा बस गया था।

संग्राम सिंह बाहर जाते–जाते दोपहर को मंदिर समय पर पहुँचने को कहकर चला जाता है। मौहर सिंह झट से बाहर आकर अपनी जीप स्टार्ट कर बुदबुदाता है। अभी तो दोपहर होने में...तीन घंटे हैं। संग्राम सिंह से बात होने के बाद, संग्राम तो अपने कमरे की ओर चला गया। मौहर सिंह बाहर आकर जल्द से जल्द गाँव की ओर जीप लेकर निकल पड़ा।

जीप हवेली से निकली कुछ दूर ही बागों की कतारों के पीछे लहलहाते खेत जो चारों तरफ हरी हरी चादर बिछाए हुये थे,

चलती हुई हवा गेहूँ की बालियों को छूकर जैसे खेतों में अठखेलियाँ कर रही हों। चारों तरफ एक खामोशी और हवा की आवाज कभी–कभी बागों के बीच से मोर और कुछ पंछियों की आवाजें खामोशी में सपना सा दिखा रही थी।

मौहर सिंह के मन में बस जल्दी गाँव पहुँचकर बिंदा से मिलने की चाह जोर लगा रही थी। मौहर सिंह की आँखों में बिंदा का मासूम चेहरा बार–बार आता और मौहर सिंह को एक अजीब सी आहट में खो जाता, जो जीप के पहियों से जमीन के छोटे–छोटे पत्थर आवाज कर रहे थे।

बाऐं तरफ बहुत पुराना पीपल का पेड़ जहाँ कभी चरवाहें इसके नीचे बैठकर आपस में बात करते रहे होंगें। जीप में बैठे हुए मौहर सिंह दांये–बांये देखता और सोचता हुआ चला जा रहा था। कभी इस पीपल के पेड़ के नीचे औरतें और मर्द बैठकर कथा सुनते होंगें अंदाज लगाना मुश्किल नही था। पेड़ का तना पीले लाल पुराने धागों से भरा पड़ा था।

मौहर सिंह की आँखें चमक उठी, उसे दूर गाँव की झोपडियाँ नजर आने लगी थी। जो पेड़ों से घिरी दिखाई दे रही थी। जीप को उसी की ओर एक कच्चे रास्ते पर मोड़ा और गाँव की तरफ चल पड़ा।

*****

मौहर सिंह का गाँव आगमन

दोपहर का समय कुछ बुजुर्ग यहाँ–वहाँ अपनी–अपनी झोपड़ी के बाहर बैठे थे। कुछ मिलकर बातें करते दिखाई दे रहे थे। कुछ बुजुर्ग औरतें घर के बाहर बकरी और शाम का चारा डालती नजर आ रही थी। जीप की आवाज सुनकर दो बुजुर्ग ने देखा।

एक बुदबुदाया–लगता है बड़े ठाकुर आऐ हैं।

दूसरा बोला–कितने वर्षों बाद आज...चलो ...

दोनों एक ओर चल पड़ते हैं जहाँ जीप आ रही दिखाई दी थी।

गाँव में विश्ना नाम का एक बूढा आदमी छोटी सी गाँव की जरूरतों के लिए अपनी झोपड़ी के बाहर परचूनी का सामान बेचता था, जब उसने भी देखा कि जीप उसी की दुकान की ओर आ रही है तो वह समझ गया कि ठाकुर साहब आये होंगें। झट से बाहर आकर खड़ा हो गया तभी दोनों दो बुजुर्ग भी आ गए।

बड़े ठाकुर आऐ हैं लगता है। विश्ना – जीप में बैठे युवक को देख– बड़े ठाकुर तो नहीं–कोई लड़का है। हो सकता है छोटे ठाकुर हैं। तभी जीप आकर रूकती है, कुछ औरतें, कुछ बच्चे और आदमी आकर जीप देखते और एक कौतूहल सा उनको लगा, कि वे एक मोटरकार को गाँव में देख रहे हैं। मौहर सिंह जीप से उतरता है–सामने विश्ना है। प्रणाम साब... आप

पहिचाना नहीं, मौहर सिंह बीच में ही कहता है, विश्ना कौन है ? जी मैं...मेरा नाम विश्ना है। (घबरा जाता है।) आप ही विश्ना हैं ?

जी आप.... ठाकुर सा...

मेरा नाम मौहर सिंह है, मैं ठाकुर साब का छोटा भाई हूँ। (इतनी सुन विश्ना हाथ जोड़कर झुक सा जाता है।)

आइए ठाकुर सा....आप पहलीबार ...हमने देखा है। जल्दी से विश्ना एक चारपाई लाता है, बिछाकर हाथ जोड़कर मौहर सिंह से कहता है। बैठिए...ठाकुर सा।

गाँव के जो लोग वहाँ आए थे, ये सभी चुपचाप एक ओर खड़े होकर देख रहे थे। भैया बता रहे थे। बड़े गरीब हैं, यहाँ के सभी लोग सुना है, यहाँ बाहर से भी लोग आते रहते थे। हाँ ठाकुर सा....अब तो सब नही होता लेकिन रिवाज है, पुरूखों से....मैं समझा नहीं... (मौहर सिंह पूछता है।) बरसों पहिले जैसे लोग भी नही रहे और बड़े ठाकुर सा की कृपा से सब अब ठीक है, कुछ लम्पट लोगों की वजह से...सब...ये, लेकिन बदलाव है साब....अब तो बहुत कम....सच्चा आदमी मिल जाए. .. तब कभी कभार...वैसे सब ठीक है, (गिड़गिड़ाता है।) पानी लाऊँ ठाकुर सा ? नहीं। ठाकुर साहब ने मुझे गाँव में भेजा है कि शाम को कोई पूजा ...मंदिर में होने वाली है। जी ... ठाकुर सा....हाँ शाम को उसी में शामिल होना है मुझे। ठीक है.... ठाकुर सा... हमारे भाग कि आप पधारे। अभी तो मैं वापस चला जाऊँगा...शाम को आऊँगा... गाँव देखा नहीं था... इसलिए चला आया। ठीक है— शाम को मिलते हैं। जीप तक जाकर विश्ना को इशारा करके बुलाता है विश्ना हाथ जोड़े मौहर सिंह के पास आकर खड़ा हो जाता है। एक बात बताओ, बिंदा कौन

से घर में रहती है। बिंदा ओ...अपने मुंशी की पोती। पोती....हाँ साब....मुंशी की एक विधवा बेटी है कुंता उसकी बेटी है बिन्दा. ...मुंशी से मिलना है तो बुला लाऊँ। नहीं नहीं फिर कभी ठीक है।

जी ठाकुर सा।

मौहर सिंह जीप में बैठकर हाथ जोड़कर सभी से नमस्कार करता है जीप स्टार्ट करता है जीप चली जाती है।

कितने संस्कारी हैं ठाकुर साब देखा...हाथ जोड़कर हमारे लिए. ...भगवान भला करे उनका। (बूढे की आँखों में प्रेम उमड़ पड़ा) पढ़े लिखे लगते हैं समझदार हैं। हैं तो बड़े ठाकुर के भाई (विश्ना कहता गया) चलो शाम को पूजा है, मंदिर में सभी को जाना है। (कहते हुए अपनी झोपड़ी की तरफ चला जाता है।

*****

गौना

दोपहर में कुंता बैठी अपने अतीत में खो जाती है। याद आता है अपना गौना।

दिन चढता जा रहा है। गाँव के लोग औरतें बुजुर्ग सभी मंदिर के पास जमा हैं। इधर बच्चे आंगन के एक कोठे में बैठी कुंता. ..चौदह साल की मगर आँखों में सेकड़ों साल का डर। उसके हाथों में न मेंहदी न माथे पर टीका...चेहरा निर्विकार, जैसी आज कोई बेटी नहीं,,, वस्तु का सौदा गरीबी, मजबूरी और परंपरा के नाम पर किया जा रहा है।

एक बुढिया आकर कहती है–चल बिटिया अब तेरा सोहाग जागे...तेरे मन की सौगात पहुँचे मालिक तक।

लड़की सर झुका लेती है, बुढिया उसे हाथ पकड़कर उठाती है और मंदिर की तरफ को जाती है। मंदिर में गाँव का मुखिया खड़ा है। एक ओर गाँव के लोग तो एक जर्जर बैलगाड़ी मंदिर से कुछ दूर खड़ी है। जिसके भीतर एक अधेड़ उम्र का आदमी बैठा था। बैलगाड़ी के पास दो अधेड़ उम्र के आदमी खड़े थे। वह सभी नशे में झूम रहे थे। कहीं अंदर बैठा व्यक्ति गोना का दुल्हा। देखने में शराबी, चालाक, धोखेबाज, कामचोर ओर आलसी लग रहा था। उसी ने दिए पैसे मुखिया को। मुखिया ने पैसे दिए लड़की के पिता को पिता खुश था। गोना करके उसकी इकलौती बेटी दूसरों की अपेक्षा एक अच्छे घर में जा रही है, गोना करके।

मंदिर पहुँचकरएक लड़की ने देखा आँख उठाकर क्या ये सभी इस सौदे के गवाह होंगें। सवाल उसके मन में आने लगे। उसने पहली बार खुद से नहीं परंपरा से सवाल किया। मगर उत्तर किसी के पास नही था। ना मुंशी के पास न मुखिया के पास और ना दर्शक बने गाँव वालों के पास। एक चुप्पी जो गाँव की औरतों और मर्दों को विरासत में मिली थी। मंदिर में खड़ी मुखिया के सामने, उन लोगों को बुलाया, जो बैलगाड़ी से गोना करने आऐ थे। आज उसका पहला वो दिन है जब उसे भी पता नही कि जीवन अब कैसे कहाँ और किर तरह कट पाऐगा।।

वह चुप थी, सभी गोना के परंपरानुसार काम मुखिया ने करा दिए– कुन्ता ने सामने खड़े उस अंजान को एक नजर से देखा जो उसके लिए पैसा देकर उसे लेने आया था। आदमी की नजरों में एक कामवासना–भूख दिखाई दे रही थी। मन हुआ उसका कि वो भाग जाए दूर कहीं। मंदिर छोड़कर। मजबूर असहाय पूरे गाँव के सामने वह मन ही मन कोम की तरह पिघली जा रही थी।

वह आदमी कुन्ता का हाथ हाथों में लेकर बैलगाड़ी की तरफ बैठा, तब मुंशी की आँखों में आँसू बहने लगे। कुन्ता ने पीछे मुड़कर देखा तो वह चाहकर भी अपने पिता को मिल ना सकी। क्योंकि वह अब बिक चुकी थी। गाँव वालों के चेहरों पर शांत और मुस्कान एक पंरपरा के साथ, एक लड़की का गोना जो हुआ था। सोचने लगी। यदि मैं कभी जिन्दा रही तो बेटी को ऐसी परंपरा से दूर रखूंगी।

शाम ढलने लगी है मंदिर जो एक पुराने पेड़ से ढंका है। छोटी–छोटी दीवारें जिसमें कुछ लोग ही अंदर जा सकते हैं। मंदिर के भीतर एक काले पत्थर की मुर्ति और मूर्ति के सामने

जलता हुआ दीया। कुछ घंटियाँ बाहर पेड़ पर लटकी हुई दिखाई दे रही हैं।

मंदिर के पास धीरे–धीरे गाँव के बूढे–बुजुर्ग औरतें और बच्चे आने शुरू हो गये हैं। कुछ लोगों को पता है कि छोटे ठाकुर आने वाले हैं। इसी बात के लिए लोग आपस में बात कर रहे हैं। मुखिया जो दूसरे गाँव से आया है वह मंदिर में कुछ काम करता दिखाई दे रहा है। एक ओर से मुंशी, कुन्ता और बिंदा अपनी एक सहेली कमला के साथ आती हुई दिखाई देती है। मुखिया मंदिर के बाहर आता है और गाँव वालों से कहता है। तुम सभी सुनो, छोटे ठाकुर सा...आने वाले हैं, उनके आने की बाद ही पूजा शुरू करेंगें और हाँ किसी को कोई गोना तो नहीं करना ?

इधर उधर नजर फैलाता है, सभी चुप हैं।

ठीक है, कोई नहीं है, क्या गाँव में छोरियां नही है ? हमारा रिवाज है। देवी भैया की कृपा के लिए छोरियों का गोना देवी के मंदिर में करके ही अच्छा भाग मिलता है। नहीं मिलता कुछ भी। मुखिया उधर देखता है जहाँ मुंशी आता हुआ बोल रहा है। मैने अपनी बेटी और गाँव की कितनी बेटियाँ...सबकी जिन्दगी बदल गयी क्या ? मुखिया आप तो गोना कराते भी हैं ओर गोना के लिए रिश्ते भी लाते रहे हो।

मुखिया चुप है। गाँव वाले सभी सुन रहे हैं। मेरी बेटी का गौना किससे कराया ? याद है। एक शराबी कबाड़ी, मेरी बेटी एक छोटी बच्ची को लेकर मेरे पास आ गयी कभी बताया आपने कि कौन जिम्मेदार है इसके जीवन का?

रूको मुंशी... (मुखिया ने रोकते हुए कहा) जो होना था उसको कौन टाल सकता है। देवी माँ की कृपा हर किसी पे नही होती

एक देवी होकर–एक औरत पर उसकी कृपा नहीं होती ? (कुन्ता ने पूछ लिया) क्यों....?

तभी सभी की नजरें उस ओर जिस ओर से जीप आती दिखाई दे रही थी। मुखिया चिल्लाया। ठाकुर सा आ गयचे... ठाकुर सा।

विंदा की नजर उसी ओर पड़ी देखते ही दिल में एक खुशी की लहर जो शर्म और गरीबी के लिहाफ में लिपटी थी। विन्दा देख...वो आ रहे हैं तू तो बात कर लेती है (कमला बोली मुझे तो बात करने में डर लगता है बिन्दा ..रूक जरा... बिन्दा ने कमला से चुप कराते हुए कहा...चुप रहना बस समझी.....

(जीप आकर कुछ दूर रूकती है, कुछ लोगों के आगे विश्ना और मुखिया जीप तक जाते है।) आईये ठाकुर साहब....स्वागत है आपका।

मौहर सिंह जीप से उतरा ही था कि मुखिया के ये शब्द सुन मुखया की तरफ देखते हुए।

मैने आपको ? विश्ना जी...ये कौन हैं....

जी ये मुखिया हैं – बिंदु पुरवा के हैं...यहाँ पूजा कराने आये हैं। ओ समझा ...चलों।

आगे बढते हुए मौहर सिंह की नजरें भीड़ में बिन्दा को तलाश रही थी। इधर बिन्दा भी मौहर सिंह को आते देख रही थी। यकायक मौहर सिंह की नजर बिन्दा पर जाती है। दोनों की आँखें मिलती हैं बिन्दा मुस्कुराती है देखकर, मौहर सिंह भी हल्की सी मुस्कान से सर हिलाकर बिन्दा की मुस्कान का स्वागत करता है।

मंदिर के पास आकर मुखिया मौहर सिंह से विनंती करता है कि ये आपने हाथों से पूजा करें। लेकिन मौहर सिंह हाथ जोड़कर मुखिया को और गाँववालों को ही पूजा करने को कहता है। आप लोग अपनी पूजा जो करनी है कर लो मुझे आप लोगों के पास आना था, मौका भी था। सो चला आया।

पूजा कार्यक्रम होने लगता है मौहर सिंह कुन्ता को भी जान जाता है क्योंकि बिन्दा उसी के पास है और जब विश्ना पूजा के लिए गाँव के बुजुर्गों को बुलाता है तो वह मुंशी काका को भी आवाज देता है। मौहर सिंह मुंशी काका को भी जान जाता है। बिन्दा की माँ कुन्ता कुछ महिलाओं के साथ मंदिर की तरफ जाती है। अब मंदिर के बाहर दो चार महिलाऐं कुछ आदमी बच्चे और लड़कियाँ जो हर उम्र की हैं खड़ी हैं, वही कमला के साथ बिन्दा खड़ी है। जो बार–बार मौहर सिंह की ओर देख लेती है और मौहर सिंह भी बिन्दा को देखता है।

एक पल ऐसा भी आता कि कमला बिन्दा की नजरों को देख मौहर सिह इशारा करके कमला को अपने पास बुलाता है। ओ. ..मुझे क्यों बुलाया है...डरी सी कमला बिन्दा से पूछती है। जा ना...जा ...तू तो कह रही थी अच्छे है वो...फिर आ...जा जा... ढकेलती है। कमला डरी समही सी मौहर सिंह के पास आती है। डरो मत, मुझे तुमसे कुछ कहना है, सुनो तुम बिन्दा की दोस्त हो... तो बिन्दा से कहना पीछे रास्ते में जामुन का बड़ा पेड़ है पूजा के बाद मैं उसका इंतजार करूँगा... ठीक है। समझ गई।

(कमला धीरे से सर हाँ में हिलाती है और जल्दी–जल्दी कदमों से बिन्दा के पास आती है।) मौहर सिंह कमला को देख रहा है जो बिन्दा को संदेशा बता रही है। बिन्दा की आँखें अब मौहर सिंह को देख रही है।

मौहर सिंह बिन्दा को देख धीरे से अपना सर हिलाता है। कुछ देर बाद बिन्दा भी अपना सिर हिलाती है। और अपना चेहरा छिपाती है। मौहर सिंह समझ जाता है कि उसका संदेशा बिन्दा को मिल भी गया और उसने आने के लिए हाँ भी कर दी है।

इधर मंदिर भी पूजा खत्म होते ही सभी बाहर आते हैं। मुखिया मौहर सिंह के पास आता है। साथ में विश्ना, मुंशी और कई लोग हैं। हमें बड़ी खुशी है आप– यहाँ तक आए, हम गाँव वालों का बहुत–बहुत अभिवादन आपका। ठीक है, मेरा काम था...यहाँ आना और देखना भी था गाँव और ये पूजा, मुझे वैसे आना ही था, बस अपना गाँव है दादा, पिताजी का बसाया हुआ, हाँ आप लोगों को कोई तकलीफ हो तो हवेली तक खबर भेज दीजिए मैं आ जाऊँगा। और हाँ... मुंशीकाका (मुंशी की तरफ आगे बढकर आते हुये) मुंशी हाथ जोड़ते हुए...हाँ ठाकुर साहब मुझे आपसे मिलना था। कुछ काम था। विश्ना कहता है, आपका है मालिक गाँव और हम सभी जब आप चाहें आइए स्वागत है। इन गरीबों और आपके तीमारदारों का तो आप पर ही भरोसा है। मुंशी कहता है – ठाकुर साहब पूरे तीस बरस हो गये गाँव में जो प्यार और अपनापन हवेली से हमको मिला है, उसका एक मासा भी हम जीवन में नही चुका सकते। नहीं मुशी काका... ऐसा कुछ भी मत सोचो... आदमी, आदमी के ही काम आता है।

आप लोग खेती बाड़ी सभी काम तो संभालते हो फिर हवेली से अलग क्यूँ खुद को समझते हो मुंशी के चेहरे पर मुस्कान आती है।

ठाकुर सा– परमात्मा आपको खुश रखे, आपका इतना प्रेम हमारे लिए बहुत है, मौहर सिंह हाथ जोड़ते हुए, ठीक ह ैअब मुझे वापस जाना है।

(इधर उधर नजर दौड़ाता है, बिन्दा उसी भीड़ की ओर देख रही है जहाँ मौहर सिंह को घेरे लोग खड़े हैं।)

गाँव के सभी लोग मौहर सिंह को हाथ जोड़कर विदा करते हैं जाते–जाते मौहर सिंह बिन्दा को एक बार फिर सिर हिलाकर आने का संकेत देता है। सभी गाँव के लोग खड़े हैं। मौहर सिंह जीप पर सवार होकर, जीप स्टार्ट करता है और फिर एक बार हाथ जोड़कर सभी को देखता है जो हाथ जोड़े खड़े हैं। बिन्दा एक तरफ खड़ी जाते हुए मौहर सिह को देख रही है। कमला धीरे से–जाऐगी ना...तू... बिन्दा धीरे से कहती है, तू चलेगी साथ, अकेली डर लगता है ? कैसा डर!! ठाकुर हैं वो...चुपचाप में बुलाया है...तुझे ज्यादा डर है तो मैं साथ चलूँगी लेकिन एक खेत दूर बैठ जाऊँगी, तू चली जाना ठीक है।

(विन्दा खुश होकर) ठीक है, फिर चलेगें। कहते हुए गाँव की तरफ जाती भीड़ में मिल जाती हैं दोनों सहेलियाँ।

*****

पहली मुलाकात

एक पुराना पेड़ जो चारो तरफ लहलहाती गेहूँ के खेतों से घिरा है। संकरा रास्ता, जहाँ मौहर सिंह की जीप खड़ी है और मौहर सिंह पेड़ के नीचे खड़ा बिन्दा के आने का इंतजार कर रहा है।

मौहर सिंह के मन में कई सवाल उठ रहे है – बिन्दा नहीं आई तो ? आई तो उससे बात कैसे करेगा ? वह...वह गरीब अनपढ़ और सामाजिक नीतियों में दबी सी है। वह कैसे समझ सकेगी उसके मन की बातें ? वह चाहे तो जबरन भी उससे बात कर सकता है लेकिन क्या ये उचित होगा ? नहीं! ये उचित नहीं होगा। अपनी प्रतिष्ठा, पद और ऊँचे खानदान के तेवर वह क्यों एक निर्मल मन से परिपूर्ण लड़की को बताऐ। उसके मन में क्या होगा ? वह उसके बारे में क्या सोच रही होगी ?

(चहलकदमी करते हुए कई सवाल उसके मन में उठते रहे और वह शांत मन से उचित अनुचित का ज्ञान करके मन को समझाता रहा और खुद को मन से इस तरह आत्मविश्वास बनाए रखे रहा कि बिन्दा पर उसे विश्वास और आत्मिक प्रेम है कि वह अवश्य आयेगी ? और वह अपने मन की बात उससे कहेगा ताकि वह जान सके कि सच्चे प्रेम में शक्ति होती है या नहीं ?

मौहर सिंह की आँखों में चमक आ गई दूर से बिन्दा उसे आती हुई दिखाई देने लगी थी उसका मन किया कि दौड़कर वह उसके पास पहुँच जाए, लेकिन कुछ सोच कर रूक गया बिन्दा नजदीक आती जा रही थी। रंग बिरंगे लहंगे ओर बिरंगी चुनरी में वह गाँव की नवयोवना लग रही थी, जैसे कोई तितली खेतों के बीच धीरे–धीरे उड़ते हुये चलती आ रही हो।

विन्दा मौहर सिंह के सामने आकर एक बार दोनों की नजरें मिलती हैं फिर बिन्दा नीचे नजर करती है, चुपचाप खड़ी हो जाती है।

बिन्दा – मेरी तरफ देखो। बिन्दा....

(बिन्दा धीरे से सर उठाकर मौहर सिंह को देखती है।)

डर लगता है मुझे। धीरे से बिन्दा बोली किसका – मेरा।

नहीं

तो

पता नहीं, लगता है डर...माँ कहती है अपने से बड़ों से किसी से बात नहीं करना।

मौहर सिंह पूछता है।

क्यों नहीं बात कर सकते ?

मुझे तुमसे बात करनी है ?

बिन्दा – क्या बात करनी है ?

मौहर सिंह देखता है कि बिन्दा इतना भर कहकर फिर चुप हो गई है। ऐसा लगता है कि वह खुलकर कहने से डर रही है।

बिन्दा – मुझे तुमसे कुछ नही चाहिए...बस भरोसा चाहिए।

(बिन्दा आँख उठाकर देखती है और चुप रहती है।)

बिन्दा कुछ तो बोलो – क्या मैं तमको अच्छा नहीं लगता ?

मुझे तुम अच्छी लगती हो.... बिल्कुल अपने जैसी....(सुनकर जैसे बिन्दा को ताकत आ गई हो वह कहती है।)

मैं तुमको पसंद हूँ ठाकुर – लेकिन केवल इससे तो पेट नहीं भरेगा और ना ही सब कुछ बदल जायेगा। तुम्हारा हवेली, जमींदारी एक तुम्हारी दुनियाँ है और ये हमारी दुनिया है। क्या कहने भर से दोनों एक हो सकते हैं ?

(मौहर सिंह आँखों में आँखों डलकर कहता है। आवाज साफ थी।)

बिन्दा तुम कोई सौदा नहीं हो जिसे मैं खरीदने आया हूँ...मैंने भी दुनियाँ देखी है। समझता हूँ सब। तुम वो नाम हो जिसे मैं अपनी जिन्दगी की दीवार पर लिखना चाहता हूँ। सबके सामने, चाहे कोई जमींदार हो या बड़े से बड़ा आदमी, और सुनो अगर तेरे घरवार या गाँव वालों को छूने भी आयेगा तो सबसे पहिले मेरी छाती लगेगी वहाँ।

(बिन्दा सुनकर धीरे से)

क्या, ये सब सच कह रहे हो ठाकुर।

(मौहर सिंह दिलासा देते हुए)

हाँ मैं कभी झूठ नहीं बोलता और मन में कभी झूठ नहीं रहता और मन में कभी झूठ आने भी नहीं देता।, तुम शीतल सी समझदार और एक निर्जल धारा की तरह हो। बिन्दा इसी धारा में मैं बहना चाहता हूँ।

(बिन्दा एक सवाल पूछती है।)

तुम तो ठाकुर बड़े घर के पढ़े लिखे हो फिर में तो गरीब गंवार हूँ, तुमको तो कोइ्र भी शादी कर लेगी. क्योंकि तुम अच्छे हो।

हाँ सच में पढा लिखा हूँ, इसलिए मैं दुनियां को समझता हूँ ओर अपने जीवन के लिए मुझे क्या करना है ? ये मुझे तय करना है और मैने तय कर लिया है। बस तुमसे ही जिन्दगी का सफर पूरा करना चाहता हूँ।

बिन्दा धीरे से।

मैं अब डर नहीं रही, बस अपनी यादों को छोड़कर मैं भी चाहती हूँ कि इस गाँव की रिवाज से मैं दूर रहूँ. गाँव से जो भी लड़की गई, वह वापस कभी नही आई गोना करके।

मैं गोना करके जीना नहीं चाहती और ये बात मैं आज छोड़ देती हूँ यहीं।

(मौहर सिंह आगे बढकर बिन्दा का हाथ पकड़ता है। बिन्दा सिहर उठती है। आँखें उठाकर देखती है मौहर सिंह साहस और विश्वास देता है।)

तुम मुझ पर भरोसा रखो।

ये मत सोचो कि मैं कोई बड़ा आदमी हूँ।

बस एक इंसान हूँ, तुम्हारी तरह।

तुम मुझे पसंद हो। और पसंद इसलिए कि तुम सच में एक उस चाँद की तरह से हो जहाँ कोई दाग नही है। बिल्कुल साफ और सुन्दर।

(बिन्दा इतना सुनकर मौहर सिंह के हाथों को अपने हाथों में लेकर मुस्कुराती है।)

सच कहूँ मै, तो तुम भी ठाकुर बहुत अच्छे हो।

(कहकर अपना सिर झुका लेती है।)

(मौहर सिंह हाथ से बिन्दा का सिर उठाता है और बिन्दा का माथ चूमता है।)

बिन्दा को ऐसा लगता है जैसे वह कुछ पल के लिए इस दुनिया में नहीं है।

मैं अब जाऊँ....(बिन्दा पूछती है।)

कब मिलोगी फिर।

जब तुम्हारा संदेशा मिलेगा तब।

ठीक है जाओ।

(बिन्दा हाथ छोड़कर जाने लगती है फिर रूककर पलटकर देखती है। मुस्कुराती है ओर झट से दौड़ते हुए खेतों के बीच खो जाती है।)

*****

लेखक

मौहर को ना गुमान था ना अहंकार,

समझता था दुनियां और जीवन के सदाचार,

वह परिभाषा जान गया, इसानियत की

जीवन की सच्चाई वह जान गया

धन, पद, प्रतिष्ठा जरूरी नहीं जीने के लिए

जहाँ अपनत्व, प्रेम हो, वहाँ कुछ नहीं खोने के लिए

चल पड़ा था उस ओर, जहाँ उसकी चाह थी

सच्चा था, प्रेम उसका, बस मिलने की आस थी
ना था गम कोई ना चिन्ता, बस वह शांत था
मिलने से पहिले बिन्दा से, मन उसका अशांत था
खोल दिये दरवाजे मन के बातें जो पूरी हो गई
बिन्दा के अतीत की यादें ना जाने कहीं सो गई
मिल गए दो मन कि, निश्चल निष्पाप ही हासिल था
वक्त ने बस वो किया, जो वक्त के काबिल था।

*****

हवेली में जसवंत सिंह का स्वास्थ्य

जमींदार की हवेली में ठाकुर जसवंत सिंह जो बहुत दिनों से बीमार हैं, आज अपने बड़े बेटे और बहू ललिता के साथ मौहर सिंह के बारे में बात करते हैं। जसवंत सिंह चाहते हैं कि मौहर सिंह की अब शादी कर दी जाए, जिससे उनके सामने दोनों बेटों का परिवार बन जाए, साथ ही दोनों बेटों को जिम्मेदारियाँ भी बांट दी जायें।

संग्राम सिंह, अपने पिता की बात पर अपनी सहमति देता है, ललिता सुझाव देती है कि शादी के बारे में मौहर सिंह की राय लेकर ही फैसला करना ठीक रहेगा। वह पढ़ा लिखा है और अब नए पीढी के लिए परिवार का सलाह मशविरा करके ही शादी व्याह करना उचित ही होगा।

ये लोग बैठे बातें कर ही रहें थे कि मौहर सिंह वापस आता है। वह जसवंत और बडे भाई को गाँव में हुई पूजा के बारे में और गाँव वालों के बारे में बताता है।

जब संग्राम सिंह पूछता है कि उसे देहात में आकर कैसा लग रहा है तो मौहर सिंह बताता है कि उसे शहर से देहात सजीव और असल ही लगता है। वह कहता है कि शहर के लोग दिखावटी और क्षणिक जीवन की खुशी और भौतिक सुख पाने में ही अपना जीवन सफल समझते हैं। जो बुराईयाँ शहरों में हैं। उनका एक प्रतिशत भी गाँव के लोगों में नहीं दिखाई

दिया। गाँव के लोग सीधे सादे, मेहनती, सच्चे और निष्पाप होते हैं।

इन सब बातों को सुनकर ललिता पूछती है कि गाँव का बखान कर दिया क्या हमेशा गाँव के बीच रहना है क्या ? पढ़ लिखकर शहर में जाकर कारखाना खोलना है, जो हम सभी की इच्छा है। मौहर सिंह अपने पिता और भाई को समझाता है कि पढ़ना लिखना हर किसी के लिए और उसके जीवन के लिए अच्छा ही होता है। ज्ञान होना कभी हानिकारक नहीं होता। वह जब यहाँ आया था, तब से ही गाँव के खेत, खलिहान, बाग बगीचे, यहाँ कि सौंधी सौंधी माटी की खुशबू, चहचहाते पंछी सब कुछ तो है यहाँ। फिर कौन नहीं चाहेगा ऐसी जगह रहना। मेरी शिक्षा तो हर जगह मेरे साथ ही है।

वह चाहता है कि सदा यही रह जाए। हमने तो सोच रखा था एक फैक्ट्री खुलवा देंगें। अब जमीन जायदाद भी चकबंदी के कारण कम ही बची है। वो पहिले वाली बात अब रही नहीं। मुश्किलें पहिले नहीं थी अब सरकारी आदेशों से मुश्किलें बढी ही हैं। जसवंत सिंह बोले जा रहे थे।

अब तो मेरी तबियत भी ठीक नहीं रहती मौहर सिंह ने सांत्वना दी।

आप ठीक हो जायेंगें पिताजी।

ठीक हो जाऊँगा तब भी तो मुझे अपने काम तो पूरे करने ही है।

क्या काम करने हैं आप मुझे बताइये? मैं कर दूँगा।

संग्राम सिंह कहता है। पिताजी चाहते हैं और हम भी तुम अपनी शादी कर लो।

ललिता (धीरे से) अब बड़े हो गये तुम... मुझे भी तो देवरानी चाहिए। तब हम घर में दो होगीं। तुम मुझे अकेलापन भी नही लगेगा। घर भी अच्छा लगेगा, अपना पूरा परिवार हो जाऐगा।

मौहर सिंह कुछ देख सोचता है, तो संग्राम सिंह पूछता है।

क्या सोच रहे हो मोहर ?

कुछ नहीं बस ये ही कि शादी किससे ?

जो हमारे खानदान के बराबर के हो... जिनका मान–सम्मान, प्रतिष्ठा हो वहीं से तो रिश्ता जोड़ेगें...तुम मेरे भाई हो। शादी होगी धूमधाम से पूरे बीस गाँव के लोग होंगें...दुनिया देखेगी मौहर।

मौहर सिंह कुछ देर चुप रहकर... पूछता है।

क्या कोई लड़की आपको पसंद है ? या...

लड़की बस तू हां कर...रिश्ते तो हमारे खानदान के लिए, कितने साहूकार सेठ, आस लगाए बैठे हैं।

मौहर सिंह

क्या मेरी पसंद नापसंद नहीं पूछेंगें सभी एक दूसरे को देखते हैं।

यदि मैं किसी को पसंद कर लूँ तो, क्या उसे आप सभी स्वीकार करोगे ?

संग्राम सिंह तपाक से कहता है–

क्यों नहीं, करेंगें जरूर करेंगे, तुम्हारी जो भी पसंद लड़की होगी वह जरूर अपनी औसत की ही होगी ये भरोसा है।

मौहर सिंह मन ही मन मुस्कुराता है और कहता है ठीक है फिर जब पसंद आयेगी तो बता दूँगा। क्यों भाभी ठीक है।

ललिता – यहाँ कहाँ देहात में ढूँढोगे।

मौहर सिंह – पता नहीं।

ठीक है मौहर को घूमने फिरने दो...लेकिन एक दो महीने में ही कोई पसंद आए तो बता देना हमें। हम चाहते हैं कि इसी साल तेरी शादी हो जाए। जसवंत अपने मन की कह देता है।

मौहर सिंह हंसते हुए

दो महीने ठीक है...नहीं तो संग्राम कहता है, नही तो हम बहू ढूँढ लेंगें।

ललिता उठा खड़ी होती है।

मैं जाती हूँ रसोई में बहुत देर होती जा रही है।

जसवंत सिंह भी उठकर अपने कमरे में चले जाते हैं संग्राम सिंह एक हाथ मौहर सिंह के कंधे पर रखता है। चलो।

हाँ ...मौहर सिंह उठकर साथ दोनों चले जाते हैं।

*****

बिन्दा के परिवार से मुलाकात

रात का समय है, बिन्दा एक ओर कुन्ता मुंशी बातें कर रहे हैं। मुंशी और कुन्ता को जब पता चलता है कि बिन्दा मौहर सिंह दोनों गाँव के बाहर मिलते रहते हैं। तो कुन्ता परेशान होती हैं। उसे लगता है कि यदि मौहर सिंह बिन्दा से शादी कर भी ले तो ठाकुर खानदान के लोग के लोग गाँव को तबाह कर देंगे। ऐसा हुआ तो पूरा गाँव उनका दुश्मन हो जाएगा।

मुंशी समझाता है कि क्यों ना वह मुखिया के गाँव में जाकर मुखिया से कहकर बिन्दा का गोना करवा दें। यदि ऐसा हो गया एक बार फिर ठाकुर कुछ दिन बाद खुद–ब–खुद शांत हो जायेंगें।

कुन्ता को लगता है कि बिन्दा का जीवन यदि अच्छे तरह से बनता है तो बन जाने दे जो भी मुश्किलें होंगी, दुख मिलेंगे, सहन कर लेंगे। एक बार बिन्दा का सब ठीक हो जाएगा। तब फिर उनको अपने जीवन की कोई चिंता नहीं है, वैसे भी जीवन में दुख ही तो है।

कुन्ता नहीं चाहती उस गोना रिवाज से उसकी बेटी की शादी हो क्योंकि वह इस रिवाज की ही एक मिसाल है कि वह किस तरह एक बेटी के साथ दुख से जी रही है। क्यों वह बेटी का जीवन खराब करे।

मुंशी गाँव वालों का डर, मुखिया का डर और खुद ठाकुरों के डर को बताकर कुन्ता को समझाता है। कुन्ता अपने पिता को

बताती है कि इन बातों पर फिर सोचेंगे क्योंकि पहले मुखिया से वह बात करना चाहती है।

ये सभी बातें पास ही लेटी बिन्दा सब सुन लेती है। दरवाजे पर विश्ना आकर आवाज देता है। कुन्ता आवाज सुनकर दरवाजे की तरफ देखती है। मंगल भी पीछे–पीछे आता है देखता है मौहर सिंह साथ में खड़ा है।

ठाकुर सा....आप कैसे आना हुआ ?

आपसे मिलने आये हैं।

विश्ना की बात सुनकर कुन्ता और मुंशी एक दूसरे को देखते हैं। मुंशी हाथ जोड़कर मौहर सिंह को झोपड़ी में आने के लिए कहता है।

कुन्ता एक चारपाई लाकर बिछा देती है। विश्ना मौहर सिंह को बैठने की विनंती करता है। मौहर सिंह झोपड़ी में इधर–उधर देखता है। मौहर सिंह बैठते हुए कहता है।

मुंशी काका आपको विश्ना जी ने कुछ बताया?

मुंशी हाथ जोड़ते हुए। बताया था ...ठाकुर साह... मैं एक गरीब आदमी ...मजदूर आपका अन्न खाकर जीने वाला, कहाँ जमीन और कहाँ आसमान....ठाकुर सा...

विश्ना मुंशी से – ये तो ठाकुर साहब की पसंद है फिर वो चाहें तो क्या नहीं हो सकता ? बिन्दा बिटिया भी तो ऐसी है अपनी क्या कमी है उसमें।

मुंशी सकपकाते हुए।

कमी है, विश्ना ...कमी है, वो एक बेडिनी की बेटी है, बेडिनी की जिसका नाम सुनकर।

कुन्ता कहती है।

बेटियों का भाग कौन जानता है ? लकिन ठाकुर सा...आप चाहते हैं। क्या आपके घरवाले ये मंजूर करेंगें ? नहीं करेंगें। हमारा मजाक क्यूँ बनाते हो ? ठाकुर साहब हम गरीब हैं...ऐसा तो हम सोच भी नही सकते सपने में भी कि बेटी हमारी बडे खानदान में जायेगी।

मौहर सिंह गंभीर होकर कहता है।

मैं जानता था, आप लोग कैसे सच मान सकते हो कि एक जमींदार का बेटा, ठाकुरों का बेटा जिसको लोग झुककर सम्मान देते हैं, वो गरीब के घर जाकर ऐसा सोचेगा और रिश्ते बनाएगा जो कभी हो ही नहीं सकते। लोग ऐसा ही सोचते हैं।

विश्ना जी को मैने जो भी कहा था, वह सच था। बिन्दा एक अच्छी लड़की है। समझदार और एक अच्छे घर की बहू बन सकती है। इसलिए नहीं कि वह, एक खास जाति की है या गरीब हे , वो मुझे पसंद है। मैं कभी नहीं चाहूँगा कि उसे कोई तकलीफ हो, बस आप सभी की हाँ चाहिए।

विश्ना पूछता है, ठाकुर सा... गाँववालों को ये सब खासकर बडे ठाकुर को ये कैसे मंजूर होगा जो आप कह रहे हैं।

मौहर सिंह – वो मेरा वादा है किसी को कुछ नहीं होगा, ये मेरा फैसला है, मेरा फैसला कोई माने या न माने आप अपना फैसला बताऐं मुझे मुंशी काका।

कुन्ता हाथ जोड़ते हुए, ठाकुर सा... आपने तो फैसला कर लिया...लेकिन ये सब ...समझ मैं नहीं आता...कि कैसे क्या ये सच हो पाएगा ? मैं उसकी माँ हूँ और हर माँ अपनी बेटी के

जीवन में सुखी और खुश देखना चाहती है, लेकिन एक बेडनी ...नहीं, नहीं....कैसे होगा ये सच

मौहर सिंह कुन्ता के पास आकर समझाता है।

ये सब मैं करूँगा... कैसे क्या करना है। मेरे परिवार को मेरा फैसला मानना ही होगा। ये मैने सब सोच समझ कर कहा है।

तभी बाहर से बिन्दा आती है घर में विश्ना मौहर सिंह को देखती है तो ओट में छिप जाती है। चुपचाप से सुनती है – ठीक है मैं चलता हूँ, मुंशी काका विश्ना जाते–जाते कुन्ता से कहता है।

कुन्ता तुम बिन्दा से बात करो सब बता दो जो ठाकुर सा ने कही है– उसका भाग बड़ा है। हमारे भाग्य भी हैं कि गाँव की लड़की ठाकुर सा को पसंद है, चलो ठाकुर सा।

*****

सहमति

पुराने पीपल के नीचे मौहर सिंह और बिन्दा दोनों खड़े हैं। मौहर सिंह लगातार बिन्दा को देख रहा है। क्या देख रहे हो ऐसे।

बस मन करता है कि ऐसे ही देखता रहूँ जानती हो तुम, जब भी मैं तुमको देखता हूँ तो बस मन में एक आवाज सी आती रहती है।

बिन्दा चौंककर – आवाज आती है ?

हाँ सच बिन्दा वो कहती है कि तेरा आज साथी मिल गया है।

बिन्दा – मौहर सिंह को देखती है और मुस्कुराकर....मैं एक गरीब और बीच में ही टोकता है मौहर सिंह – और ...और... और बिन्दा तुम गरीब हो या फिर कुछ कहो, लेकिन मेरे लिए बस वही हो जिसको मैं ढूँढ रहा था रूककर कहता है, घरवाले पूछते हैं कि शादी कर लो। झट से बिन्दा पूछती है – फिर कर क्यूँ नहीं लेते। नहीं बिन्दा, तुम मेरी बात तो सुनें...मैने उनसे कहा था कि जब कोई पसंद आएगी तो, मुझे एक लड़की पसंद आ गई है। बिन्दा का चेहरा मुरझा जाता है। पसंद आ गई ? कौन साहूकार की बेटी होगी...बड़े घर की...बड़ी हवेली की, नहीं वैसी तो नहीं है...लेकिन मन और स्वभाव की उत्तर और अच्छी है वह। जब भी देखा है–मन फूल की तरह खिल

उठता है। उसकी आँखों में एक जीने की प्यास और आँचल में आसमान तक उड़कर जाने की तमन्ना है।

बिन्दा का मन सुनकर बैठता जा रहा है।

वह सपनों को देखना चाहती है, वो सपने जो हर लड़की देखती है।

वह अपनी मीठी–मीठी बातों की धनवान है वो जहाँ भी खड़ी हो जाए , वहीं महल की तरह दिख पड़ता है।

बिन्दा आवाक कह उठती है– अच्छा है...बहुत अच्छा...मेरी बकरियाँ मैं जा रही हूँ। बिन्दा जैसे ही पलटकर जाने को है तभी मौहर सिंह उसका हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचते हुए अब जाओगी कैसे ? मुझे छोड़कर। बिन्दा पूछती है, जाना ही होगा मुझे! सुनो बिन्दा, तुम्हारे मन में उलझन है कुछ, वो लड़की जिस गाँव की है, उसका नाम सुन तो लो, नाम है गाँव का–मुंशी पाढ़ा।

बिन्दा बुदबुदाती है।

मुंशी पाढ़ा...हाँ और उसका नाम है...बिन्दा...बिन्दा ये सुनते ही मौहर सिंह का हाथ पकड़कर पूछती है।

क्या...सच है ये...

हाँ...वो तुम ही हो।

मुझे तुम पसंद हो...लेकिन मैं...मैं....बेडिनी....

बिन्दा की आँखें भर आती हैं।

ऐसा कैसे....तुम मेरा मन रखने के लिए ऐसा कह रहे हो।

मौहर सिंह बिन्दा को दोनों हाथों को अपने हाथों में थामता है धीरे से बिन्दा के चेहरे पर तैरते हुए आँसुओं को पोंछते हुए।

बिन्दा प्लीज....तुम्हारा रोना मुझे अच्छा नही लग रहा।

तुम बस हंसती हुई अच्छी लगती हो।

तुम सोच रही होगी की एक ठाकुर जाति का एक बेडिनी की लड़की से कैसे ब्याह हो सकता है। यही ना।

बिन्दा धीरे से 'हाँ' में सर हिलाती है

मैने फैसला तो तुम्हारे घर जाकर तुम्हारे घरवालों को बता दिया था, ये मौहर सिंह की जुबान है...ब्याह करूँगा तो बिन्दा सिर्फ तुमसे.....परिवार वाले माने या ना मानें मैं बस तुमको अपने जीवन में शामिल करना चाहता हूँ। तुम तैयार हो ना ?

बिन्दा मौहर सिंह को देखती है, धीरे से कहती है, मेरी जैसी लड़की...क्या चाहेगी? मै। तुमसे प्रेम करती हूँ..वह भी आज तक नहीं कह सकी। क्योंकि मेरा साहस तो मर चुका है जनम लेते ही सपने चूर हो गए हैं। कभी सोचा भी नहीं...कि कोई इस ओर आएगा।

(बिन्दा मौहर सिंह को देखकर मुस्कुराती है।) और पूछेगा....तुम तैयार हो!! मौहर सिंह दोनों हाथों में बिन्दा का चेहरा पकड़कर देखते हुए पूछता है।

बिन्दा प्रेम की कोई जाति नहीं होती, प्रेम महलों, बंगलों, सोने चाँदी, बडे–बडे साहूकारों और जमींदारों को नहीं देखता। प्रेम बस, ऐसा अदृश्य सौदा है जो केवल मन से मन का होता है, सच्चा और निर्मल।

बिन्दा पूछती है – मुझे कुछ बताना था...भूल गई थी

मौहर सिंह – क्या बताना था ?

यही की आप जब घर आकर चले गए तो रात को मेरी माँ और नाना ने अपनी गरीबी से डरकर फैसला किया... कि वो मेरा गोना मुखिया के गाँव में जाकर करवा देंगें।

मौहर सिंह सुनकर—क्या गौना, मेरे होते हुए...ये कैसे होगा, अब तुम मेरी हो, बस मेरी ...अब तुम्हें खुलकर...खुले आसमान के नीचे जीना है बिन्दा।

मुझे पता नहीं वो कब मुझे मुखिया के गाँव में ले जाऐं...

(गंभीर हो जाती है।)

ठीक है बिन्दा, यदि तुमको ऐसा लगता है तो हम एक दिन के बाद अगली सुबह आमों के बाग के पास मिलेंगे।

बिन्दा पूछती है— फिर

हम हमेशा के लिए कहीं चले जाऐंगे। हमारा कहीं अपना घर होगा, जहाँ तुम और मैं।

बिन्दा — मैं माँ और नाना को।

मौहर सिंह समझाते हुये—बिन्दा सुनो एक बार हम जब चले जायेंगें तो वो मुश्किलें तो खतम हो जाएगी जो अभी आने वाली हैं। मैं नही चाहता कि गाँव वालों और तुम्हारे घरवालों को कुछ हो, इसलिए, यही ठीक होगा कि हम कहीं दूर चले जाऐं...जहाँ ऊँचा, नीचा बड़ा छोटा ऐसा ना हो। क्या सोच रही हो ?

बिन्दा —कुछ नहीं...

तुम आओगी ना...मेरा मन घुटता है, हवेली में...और तुम भी तो.

बिन्दा कहती है– भाग को कौन जानता है, ठाकुर सा...पल में क्या होगा? कोई नही जानता! जो होता है... ठीक ही है। मैं आऊँगी।

मौहर सिंह – बिन्दा के माथे को चूमता है, बिन्दा के चेहरे पर एक खुशी की लहर दिखाई दे रही है।

लेखक –

बैताबियों का सैलाब टूट गया

झूठे सपनों का महल टूट गया

जज्बातों, कारनामों का सागर उमड़ पड़ा

डर, संकोच शस्त्र का वहम टूट गया,

प्रेम तो है प्रेम, जो उजाला ले आया

अंधेरों में आ गया बनकर उनका साया

जंगल जमीं आसमाँ तारे देखते हैं

नंदियाँ पहाड़, झरने भी ऐसों को रास्ता देते हैं

सत्य, निष्ठा, प्रेम की और कोई सानी नहीं

तहजीब ए जमाने ने कभी भी इसे पहचाना नहीं

मौहर–बिन्दा के सफर की तैयारी है

सोच लिया ठान लिया, दुनियाँ अपनी हमारी है

कोई नही जानता, किसी के मन का हाल

जान पाता है वो ही एक जो लिए नाम करताल

दुःख दर्द, सहनशीलता, संदियों से ऐसे ही थी,

असहाय, बेजुबां नारी थी, बेड़िनी जो थी,
प्रथा चलन और परंपरा में झोंक दी गयी
जो जगत को जन्म, बच्चों को करूणा, नारी ही थी,
वक्त आ गया, बैतानियों का, सैलाब टूट गया
शरीर, मन जब तक जो सहा, सब तो सह गया,
संवेदनाएं जाग गई, पनप गया प्यार का गुलशन
क्यों ना हो, अरमान, सपने थे उसके नारी जो थी,
मिल गया हाथ वो, जो आगे बढ़कर आ गया,
ढह गई चुप्पी की दीवारें, डर, भय कहीं समा गया...
प्रेम से जगत है, प्रेम से ही चक्र जगत का है।
नारी है तो प्रेम है, बिन नारी के जीवन किसका है,
तलाश न थी फिर भी किसी ने तलाश किया
इकरार किया, इजहार किया और उसे अपना लिया।

*****

हवेली में हलचल

मौहर सिंह का घर, रात का समय है, आँगन में लालटेन टंगी है, पिता एक ओर चारपाई पर बैठे हैं बड़ा भाई अनाज की बोरियों के पास बैठा है। भाभी ललिता रसोई में है, जो सुन रही है।

मौहर सिंह–गंभीर चेहरा लिए आंगन में आता है (गंभीर स्वर में)

पिताजी– आपको कुछ बताना है।

जसवंत सिंह –क्या बताना है? बोल...आप कहते थे न...कोई लड़की पसंद आ जाए तो बताना। मैने अपनी पसंद जीवन संगिनी को चुन लिया है। संग्राम सिंह यह सुन आकर पिता के पास खड़ा हो जाता है। ललिता का हाथ रसोई में काम करते हुये रूक जाता है।

संग्राम सिंह – अच्छी बात है, कोई पसंद आई लड़की कौन है? किसकी बेटी है...क्या ? नाम है?

मौहर सिंह – गाँव की लड़की है, बिन्दा नाम है उसका।

जसवंत सिंह – चौंकते हुए, गाँव की ! किस गाँव की ?

मौहर सिंह – मुंशीपाढ़ा की।

संग्राम सिंह – बेड़नियों की गाँव की है क्या वो बेडिनी है।

जसवंत सिंह गुस्से से पागल हो गया है क्या ? तुझे लड़की पसंद आई वो भी बेड़िनी। जुबान संभल मौहर, तुने कैसे सोच लिया कि एक बेड़िनी की औलाद, हमारे घर की चौखट पारकर बहू का सपना मत देखें। जात का खून गंदा क्यूँ करता है ये सब बोलकर। संग्राम सिंह (समझाते हुए) मौहर, तू पढ़ा लिखा है, कम से कम घर परिवार की तो ख्याल होना चाहिए, कभी सुना है ऐसा कि जो तुम करने चले हो।

जसवंत सिंह – कड़क लहजे में। तुमको छूट क्या दी...जाकर गिर पड़े कूडे के ढेर में। शर्म आनी चाहिए। कहीं वो नट, हमारी रोटियों पर पलने वाले लोग, और कहाँ हमारी शान ओर हमारी इज्जत आबरू। पढाई का ये सिला दोगे तुम.... नहीं।

मौहर सिंह – धीमें स्वर में। पिताजी इसका मतलब ये है कि जो सदियों से चला आ रहा है, वो वैसा ही चलता रहे।

जसवंत सिंह – तो तुम चले हो अब सुधार करने, हम ही मिले तुमको ये सब करने...खानदान की नाक कटवाने के लिए।

संग्राम सिंह – मौहर ये तुम सही नही कर रहे, भूल जाओ उसे...ये कैसे हो सकता है ? तुमने सोच कैसे लिया ? हम तो सैकड़ों लड़कियाँ ऐसे ला देते लेकिन हमारी कुछ पहिचान है. ..भुल गए तुम ?

मौहन सिंह– मैने जो कहा...सब सोच समझकर कहा है।

ललिता आ जाती है। मौहर, तुम घर परिवार, समाज की तो सोचो, ये सब, तुम अब बच्चे नही रहे।

मौहर सिंह कहता है, ठीक कह रही हो भाभी, मैं बड़ा हो गया हूँ और समझता भी हूँ, क्या मुझे अपने जीवन के लिए किसी को चुनने का अधिकार नहीं है ?

संग्राम सिंह – अधिकार ऐसा कि तुम किसी को बिना सोचे समझे, बहू बनाकर घर ले आओगे तो हम सब मान जाऐंगे।

जसवंत सिंह – (गुस्से में) सुन मौहर जब तक मैं जिन्दा हूँ जो तम कह रहा है, वो नहीं हो सकता। एक बेडिनी इस घर के दरवाजे के अंदर तक कदम नहीं रखेगी।

मौहर सिंह– (शांत स्वर में) समझ गया, आप लोग मेरी खुशी नहीं चाहते, आप अपनी प्रतिष्ठा मान–सम्मान, जाति–बिरादरी को देखना चाहते हैं।

संग्राम सिंह –तुम्हारी खुशी ...बस..एक बेडिनी की लड़की....एक ठाकुर की इतनी सी चाहत है।

मौहर सिंह– भैया, आप चाहें कुछ भी कहें, मैने ठान लिया है. .. चाहे जो भी हो...मैं अपना वादा तोड़ने का पाप नहीं कर सकता।

जसवंत सिंह– तो तू मेरा बेटा नहीं रहा।

मौहर सिंह – अगर अपने वादे और एक ज्ञान की आशाओं के लिए मुझे अपना बेटा कहलाने का हक खोना पड़े तो मैं वो भी कुर्बान कर दूँगा।

(कहते हुए एक ओर चला जाता है।)

संग्राम सिंह– पिताजी अभी सब ज्यादा बात करना ठीक नहीं है।

मैं उसे समझाऊँगा...नया खून है... उसे समझेगा... आप चिंता ना करो।

ललिता – हम बात करेंगें, समझाऐंगे मौहर को। हमारी बात... वो टालेगा नहीं।

संग्राम सिंह– कल मुंशीपाड़ा जाकर गाँववालों को पहले टाइट करता हूँ...देखता हूँ कौन वो...

ललिता–क्या...ये क्या है बात को और फैलाना चाहते हो ?

जसवंत सिंह – संग्राम सिंह वैसा कुछ नहीं करना, उसका दिमाग ठिकाने पर आ जाएगा। जवान है अभी समझ जाएगा।

ठाकुर जसवंत सिंह चिंतित है कि पूरे दिन मौहर सिंह उनसे मिलने तक नहीं आया जब कि रात की बातें होने से वह नाराज होकर, वापस नहीं आया।

संग्राम सिंह को जब पता चलता है कि मौहर सिंह पिता से बात नहीं कर रहा, तो वह अपने पिता से जाकर मिलता है।

पिता संग्राम सिंह को समझाता है कि मौहर सिंह कभी परदेश से वापस आया है, बचपन से ही वह संवेदनशील है। जमानेभर की, दुनियादारी की रीत रिवाजें वह नहीं जानता, इसलिए शादी की बात होने के समय उसका जवाब ठीक ही था क्योंकि जमाना बदलने लगा है। आजादी के पंद्रह वर्षों के बाद जो बदलाव आया है, उसमें ही मौहर सिंह की परवरिश और विदेश में शिक्षा मिली है, वह नई पीढी का ही है। उसकी सोच भी नई है। इसलिए उसके पास बैठकर, उसके मन की बातें जानवर ही हम कोई फैसला, उसके जीवन के लिए ले सकते हैं।

संग्राम सिंह को अपने पिता की बात सही लगती है और वह कहता है कि आज ही मौका मिलते ही वह छोटे से बात करेगा।

ठाकुर जसवंत की इच्छा है कि बढती उम्र और कमजोर शरीर से वह खुद ज्यादा नहीं कर पा रहा है और जीवन भी कितने

दिन का है वहीं नहीं जानते, इसलिए क्यों ना, मौहर सिंह का ब्याह करके वे अपने जीवन में अपना पूर्ण फर्ज कर सकें।

संग्राम सिंह जानता है कि उसके पिता जल्द से जल्द मौहर सिंह की शादी करना चाहते हैं। लेकिन मौहर सिंह जैसे युवा और पढ़े लिखे को परिवार की राय को जबरन, मनमाना भी उचित नहीं है। परिवार में यदि कोई फैसला हो तो सभी का मन उसे माने। संग्राम के ऐसे विचारों से ललिता उसकी पत्नी भी सहमत रहती है। लेकिन मौहर सिंह को यदि बहुत दिनों या वर्षों तक कोई लड़की पसंद नहीं आई तब क्या परिवार को कोई अन्य जो मौहर को पसंद ना हो, उससे रिश्ता कर सकेंगें ?

ये विचार संग्राम और ललिता के मन में बनने लगे थे। इन्हीं विचारों के बीच, ठाकुर जसवंत सिंह की इच्छा भी थी, जो जल्द ही अपने जीवन में मौहर सिंह का ब्याह देखे। अब दोनों के सामने सवालों का एक ही जवाब था कि मौहर सिंह से बात करके उसे समझाया जाए। पिता की इच्छा, परिवार की प्रतिष्ठा और समयानुसार विवाह के लिए राजी किया जाए। दोनों को मालूम था कि मौहर सिंह को इतना मुमकीन नहीं था समझाना फिर भी संग्राम सिंह ने ये काम ललिता को करने को कहा। संग्राम को पता था कि मौहर सिंह ललिता को सबसे ज्यादा सम्मान और प्यार अपनी भाभी से ही करता है।

ललिता भी चाहती थी कि वह मौहर सिंह के साथ इसी बात पर चर्चा करे। ललिता को भरोसा है कि मौहर सिंह उसकी बात को समझौता और स्वीकार भी करेगा जिस बच्चे को आठ साल से युवा होने तक बच्चे की तरह पाला है तब ऐसे में उस पर अधिकार होना ही है। ललिता को विश्वास था अपने इसी

विश्वास के नाते वह मौहर सिंह के आने की बाट देख रही थी।

मौहर सिंह को ललिता ने जाकर बताया कि उनके पिता उनको याद कर रहे थे। मौहर सिंह ने कहा कि वह उसके पिता हैं और वह उनका बेटा। बेटा होने से नाते, मेरा जो फर्ज है वह मैं कैसे भूल सकता हूँ भाभी।

ललिता कहती है, शायद कल रात की बातों से तुम नाराज हो कोई भी नहीं चाहता कि तुम नाराज रहो और तुम्हारी राय ना जानी जाए।

मौहर सिंह कहता है, भाभी मेरी बात इतनी सी थी कि जो मेरी पसंद है।

ललिता सुन रही है,

मौहर सिंह – वह मैने कहा था, आज वो जाति छोटी जाति ऊँची...हम हमारा खानदान....भाभी जमाना बदल रहा है और मै बदल नहीं रहा, एक कोशिश में भी कर रहा हूँ। कि यदि लड़की सुशील, सुन्दर और बुद्धिमान है तो उसे किसी विशेष वर्ग में बांधकर क्यों देखा जाए।

ललिता कहती है धीरे से, पिताजी ने तो बेड़िनी की बात पर इसलिए नाराज हुए क्योंकि और भी तो हमारे सामने और रास्ते हैं, एक तो नहीं है ?

इलाकों में अपना नाम और दबदबा है कोई सुनेगा तो क्या सोचेगा ?

मौहर सिंह झट से पूछता है – भाभी क्या बोलेगा...बालेने वालों को कौन रोकेगा, दुनिया किसी खुश इंसान को देख कब खुश हुई है ?

मेरा मतलब मौहर ये नहीं है, मैं कहना चाहती हूँ कि पीढियों से अब तक सभी की शादियाँ परिवार की सलाह ओर उनकी स्वीकारता से ही होती आई है।

मौहर सिंह ललिता की बात सुनकर रहा है– अब पिताजी की इच्छा है और परिवार तो कल तुमको ही देखना है फिर परिवार की प्रतिष्ठा को तो छोड़कर।

मौहर सिंह – भाभी परिवार की इज्जत का इस बात से खराब हो जायेगी कि एक ठाकुर परिवार में एक बेड़िनी की लड़की बहू बनकर आए ?

ललिता झट से, क्यों नहीं, शादी–ब्याह तो सब कुछ देख कर ही किए जाते हैं। एक ही जाति के लोग अपनी ही जाति में रिश्ते करते आए हैं। मैने तो सुना तक नहीं कि एक जाति से दूसरी जाति में किसी का ब्याह हमारे थे, इस खानदान में हुआ हो।

तुम इसी खानदान के दीपक हो तुम्हें भी इसका ख्याल रखकर ही कोई फैसला लेना चाहिए।

मौहर सिंह कहता है, गंभीर स्वर में, भाभी आपकी बात सही है लेकिन ये भी सही है कि दुनिया में यदि सबसे बड़ी समस्या है तो एक ही है ऊँचे और नीचे का। बड़े –छोटे की, जबकि सभी इंसान ही हैं। फिर क्यों न हम सभी एक दूसरे के सगे हिल मिलकर रह सकते ?

ललिता कहती है, ये बड़ी–बड़ी बातें मेरी समझ में नहीं आती मौहर, मुझे तो बस तुम्हारे और अच्छे सुखी जीवन की चिंता है।

मौहर सिंह भावुक होकर कहता है, भाभी आप मेरी माँ के बराबर हैं मैने सदा आपको ही सम्मान से देखा है और जीवनभर आपकी बात कभी नही टाल सकता लेकिन मै ंभी तो एक इंसान हूँ, मेरा अपना मन, मेरी सोच, मेरा जीवन, कुछ तो अधिकार है मेरा उस पर।

ललिता, मौहर की बात सुनकर मौहर के पास आकर पूछती है, है अधिकार क्यों नहीं ? अच्छा मौहर सच बताओ कल जो तुमने कहा था क्या वो....

मौहर सिंह कहता है, भाभी मैं पिता, भैया और आपके सामने झूठ क्यों बोलता। जो सच था, वही कह दिया था।

ललिता–तो वो लड़की तुम्हें पसंद है।

मौहर सिंह कहता है– हाँ, पसंद है...भाभी वो मुझे.... अच्छी लड़की है, गरीब है...एक विशेष जाति की है। पढी लिखी नहीं है, लेकिन समझदार है। वह किसी बड़े बाप की बेटी नही है एक विधवा माँ की बेटी है।

ललिता झटके से पूछ बैठती है। ये लड़की तुमको पसंद है।

मौहर सिंह जवाब देता है– भाभी – पसंद है हाँ यही लड़की मै ंऔर कुछ नहीं जाना चाहता कि जो सब जानना चाहते हैं। मेरे लिए इतना काफी है कि वो एक सभ्य और सुशील लड़की है। बस।

ललिता – सुनकर चुप है...समझी मौहर.... मैने बचपन से तुम्हें देखा है जानती हूँ मै। तुम्हारी आदतें ओर तुम्हारे विचार भी।

मौहर सिंह– (हाथ जोड़ते हुए) भाभी– हो सकता है मैं आप सभी की नजरों में गलत हूँ, लेकिन मुझे खुद पर ज्यादा भरोसा है और इस फैसले से मुझे दुख नहीं है दुख तो इस बात का

जीवन भर रहेगा कि मेरी एक इच्छा, एक चाह को सभी मिलकर पूरा ना कर पाये।

ललिता समझाते हुए, जो तुम चाहते हो मौहर, वह कैसे स्वीकार करेंगे। जमाना जिन्दगीभर ताने देगा, ना जाने क्या–क्या कहेगा, यही सोच कर....बस ये सोचकर।

(ललिता गंभीर होने लगती है...मौहर सिंह ललिता से पूछता ह।)

सभी – मैने आज तक आपसे कुछ नहीं मांगा मैं समझता हूँ इसलिए आपसे कुछ मांगना चाहता हूँ।

ललिता यह सुन समझ नहीं पायी लेकिन ममता के कारण बोलती है।

हाँ बोलो मौहर।

मौहर सिंह– मुझे बस आपका आशीर्वाद चाहिए, कुछ देर ललिता सोचती ळै, आगे बढकर मौहर सिंह के सर पर हाथ रख देती है।

ललिता – सदा सुखी रहो मौहर, हमेशा मनो कामना पूर्ण हो

लेखक

माँ की जैसी ममता देखी माँ का जैसा प्यार दिया

छोटा बच्चा समझ के अपना जतन यतन से पाल लिया

हर दिन रात को सजा संवारा, बचपन पूरा बीत गया

युवा हुआ मौहर जब जाकर, मन ममता का जीत गया

चला गया परदेश, अकेली यादें उसकी लिए हुए

इक इक बातें आती बनकर यादें मन में सजा लिए
आज हुआ क्या पूछ लिया ममता और प्यार ने अपने से
पूरी होगी इच्छा उसकी संजो रखी जो सपने से
बेटा खुश रहे जीवन भर बस इतना भर उसका अरमान
दुनिया चाहें कुछ भी कह लें वो तो करे उसका गुणगान
कोख से ना मैने जन्म दिया बस पाला अपने बेटा सा
यदि जो खुश दो पल भी रहे तो सच दिल का अभिमान

*****

कुन्ता की झोपड़ी का दृश्य

कुन्ता झोपड़ी के बाहर आंगन में बैठी कुछ काम कर रही है तभी मुंशी घर में आता है और कुन्ता के पास बैठता है।

का हुआ बाबा, वापस आ गये ?

मुंशी कहता है, हाँ का करता जाके।

कुन्ता पूछती है, तो का कुछ ऐसा हो गया तो गाँव वाले बड़ी मुश्किल में आवेंगे।

मुंशी पूछता है, बिन्दा कहाँ है ?

कुन्ता – भीतर है,

मुंशी – ठीक है, तू बता जबरन ठाकुर आके बिन्दा को ले जावेगो तो हम का करेंगें?

कुन्ता सोचते हुए, फिर का करें। गोना ना करें, फिर जो हो सो माता रानी देख ले।

मुंशी – समझाते हुए, समझ, बिन्दा उनको पसंद आई है और ठाकुर की पसंद कैसे हम, ...समझ में कुछ नहीं आता।

कुन्ता – कहती है, मेरी बेटी पूरे गाँव में न्यारी है, काका, हो ना हो भाग उसका ये करावे है।

मुंशी – हम चुपके से गोना कर भी दिया तो भी ठाकुर को का मालूम तब का करे।

कुन्ता कहती है, बाबा, माता की मर्जी है मैं बिन्दा से बात करके पूछूं का है सच।

मुंशी कही जा रहा था कि विश्ना उसे आवाज देकर रूकने के लिए कहता है – कहाँ जा रहे हो मुंशी ?

मुंशी रूका और बोला – पुरबिया से मिलना था, मुखिया से भला क्यों ?

मुंशी गंभीर हो जाता है, विश्ना समझ में नहीं आता कि क्या करूँ ? ठाकुर ने तो घर आकर कह गऐ सोचा भी था कि ऐसा मैं कभी सुनूँगा। लेकिन मन डरने लगा है

विश्ना पूछता है – डर किसका, ठाकुर सा का। हाँ.... वो तो खुद आए, इसमें कसूर तुम्हारा कुछ नही है, फिर मुंशी, मुखिया क्या करेंगे ? इस पर वो क्या ठाकुर सा से कुछ बोल पाऐंगे.. .नहीं...फिर क्यों दौडे चले जा रहे हो ?

मुंशी घबराकर – ऐसा कुछ हो गया तो सब गाँव वालों पर बड़े ठाकुर का कहर टूट पड़ेगा...वो नहीं जान पाऐंगे कि हमने कुछ नही किया वो उनके छोटे हैं....

विश्ना – शांत भाव से, जमींदार सा...क्यों कुछ करेंगें? उनके भाई ने सब कहा है और उनको अपनी लाज और इज्जत का भी तो मान होगा।

मुंशी हाँ में सिर हिलाता है, वो कोई ऐसा जुगत न करेंगें। तुम क्यों इतने खुद को जलना रहे हो मुंशी।

मुंशी पूछता है, विश्ना, तुम ही बताओ मैं करूँ क्या ? हम कोई उनसे मुँहजोरी करेंगे... हिम्मत नहीं किसी में। आँख उठाकर ठाकुर सा से कुछ बोल दे। बस चुप रहना ही ठीक है।

मुंशी पूछता है, हम बिन्दा को मना कर दूँगा...अब वो बाहर ना जाए।

सयानी है वो बच्ची नहीं है मुंशी, समझ लो ठाकुर साब जबरन आकर बिन्दा को ले जायेंगें, तब का करोगे ? कुछ नहीं।

मुंशी उदास होकर, ठीक कहा विश्ना, बात ठीक है। का पता माता की ऐसी इच्छा लड़की का भाग हो और भाग के आगे कौन का कर पावेगो। मुंशी समझ लो।

विश्ना की बातें जो तर्क संगत और समयानुकूल थी, मुंशी को अच्छी लगती हैं और कुछ चिंता भी कम होने लगती है। मुंशी वापस घर की तरफ चला जाता है। विश्ना उसे देख बुदबुदाता है। माता रानी तुम्हारी लीला कोई का जाने।

बिन्दा आकर झोपड़ी में आँख बंद किए चटाई पर लेटी है, जैसे वह अपने नए जीवन के सपनों में तैरती जा रही हो। उसे सुध भी नहीं कि माँ कुन्ता कब आकर उसके पास बैठी है।

कुन्ता चुपचाप बैठी विन्दा को देखती है और सोचती है कि इस गाँव में गोना ने तो कई लड़कियों को एक मर्द ही दिया पैसों के बदले...लेकिन उसे गर्व है कि एक ठाकुर का बेटा, उसकी बेटी के लिए रिश्ता मांगने घर तक आया। हो ना हो ....माता को ऐसा करना ही है। सोचते हुए धीरे से बिन्दा के सर पर हाथ रखती है। बिन्दा आँखें खोलती है। सामने अपनी माँ को देख।

कुन्ता मुस्कुराकर, बस आ गई तेरे पास, लगता है आज बकरियाँ चराते चराते थक गई मेरी बिटिया?

विन्दा धीरे से, नहीं थकी तो नहीं....ऐसे ही लेट गई... क्या करती....नाना चले गये और तू काम कर रही थी।

कुन्ता कहती है–धीरे से, बिन्दा ये बता, ठाकुर सा, तुझे मिले कभी ?

बिन्दा – बताया तो था हाँ मिले हैं।

कुन्ता – पूछती है, तुझे कैसे लगते हैं वो ठाकुर सा ?

बिन्दा – कहती है, भले मानस...अच्छे हैं ठाकुर।

कुन्ता फिर पूछती है, और कभी कुछ पूछा...तुझसे ? माँ मालूम है उनको, मैं तुम्हारी बेटी हूँ....बेडिनी जाति की हूँ...वो जानते हैं सब! कुन्ता फिर बिन्दा का मन टटोलती है।

तुझे वो पसंद है ?

बिन्दा – देख माँ, तुम चाहोगी गोना करके दूर करो मुझे लेकिन।

कुन्ता – लेकिन क्या ? मुझे किसी ने भी कभी गोना नहीं करना। सरला, परी, सालिया और चदों का भी गोना हुआ। तीन चार साल हो गये कभी वापस देखा नहीं। तरस गई बेचारी अपनी माँ बप्पा को देखने... काका काकी भी रोज रोते हैं।

कुन्ता चुपचाप सुन रही है– गोना करा दो...तुम भी ऐसे ही रोओगी, देख भी ना पाओगी मुझे। तू मेरी माँ है ना...सुन ले गोना ना करना...बस

कुन्ता समझाते हुए–सर पर हाथ रखती है। ठीक है, मुझे तो डर लगता है बडे लोग हैं, ठाकुर नाराज हुये तो गाँव वाले .. .हम....

बिन्दा कहती है, ठाकुर सा..... समझाते हैं सब...ऐसा कछू ना होगा।

कुन्ता पूछती है– तू कैसे कहती है ऐसा कुछ भी ना होगा ...

बिन्दा जोर देकर कहती है, वे...ठाकुर हैं...पर औरों जैसे ना हैं। मैं जानूं उनको बहुत नेक इंसान हैं औरों की तरा नहीं है।

कुन्ता – समझी ....ठीक है...

बिन्दा गंभीर होकर पूछती है, माँ एक बात पूछूं...तू चाहती है ना कि मैं अच्छे से जी लूं....खुशी–खुशी।

कुन्ता – हाँ...मैं सिर हिलाती है... हर माँ चाहे, बिटिया उसकी जीवन भर खुश रहे।

बिन्दा – फिर पूछती है। ठाकुर आके...मुझे ले गया...तो मैं का कर पाऊँगी...बता तू ही बता....

कुन्ता कह जाती है वो तो कह गए हैं...अब कब का हो... मालूम नहीं...तू चिंता न कर...सब ठीक हे होएगा।

बिन्दा, समझाते हुए। चिंता तू न करना...मुझे लगता है तेरी बिटिया खुश ना रहेगी...

(कुन्ता की आँखों में आँसू भर आते हैं, वह बिन्दा को गले से लगा लेती है, वह नहीं जानती की आज माँ और बेटी का मिलन, अंतिम मिलन होगा।)

लेखक

कलेजा चीर के देखो तो माँ की एक आह निकलेगी,

बच्चों की खुशी के लिए हर सांस में चाह निकलेगी

असहाय मजबूर क्यों न हो, माँ का कलेजा ही तो है ऐसा

बच्चों की हर आह पर माँ की हर बार चीख निकलेगी

*****

मौहर का पलायन

हवेली सुबह की किरणों से चमक रही है अंदर संग्राम सिंह तैयार होकर अपने कमरे से बाहर आता है वह मौहर के कमरे का दरवाजा खुला देख उसी ओर बढता है, अंदर जाने के बाद आवाज देता है मौहर सिंह को लेकिन कोई दिखाई नहीं देता फिर आंवाज देता है। इधर उधर देखता है अचानक पलंग के पास रखी स्टूल पर एक लिफाफा दिखाई देता है। बढकर उसे उठाता है। लिफाफा खोलता है, एक कागज है, उसे पढ़ता है उसके चेहरे पर गंभीरता के निशान दिखाई देते हैं। वह बिना पल गवांए झटके से अपने पिता के कमरे की तरफ जाता है।

संग्राम सिंह – पिताजी !

क्या है संग्राम... तुम गए नहीं हैं।

ये देखो ..(लिफाफा दिखाता है।)

मौहर सिंह के कमरे से मिला है वो चला गया।

जसवंत – आश्चर्य से, चला गया...कौन ?

मौहर सिंह – पिताजी।

कहाँ चला गया ?

क्या मालूम ?

चिठठी में क्या लिखा है ?

आप पढ लीजिए...मैं ललिता को बुलाता हूँ।

संग्राम सिह ललिता को आवाज देता है, जसवंत कागज को पढ़ता है, ललिता और संग्राम सुनते जा रहे हैं। जसवंत सिंह पढ़ रहे हैं। खेतों के बीच रास्ते से जीप चली जा रही थी। जीप में मौहर सिंह के चेहरे पर एक खुशी की मुस्कान तैर रही थी।

जीप पुराने बगरगढ़ के नजदीक आती है जो गाँव से कुछ ही दूरी पर था। मौहर सिंह नीचे उतरकर इधर–उधर देखता है उसे बिन्दा के आने का इंतजार है। एक–एक पल उसकी धड़कने बढ़ती जा रही थी। मन में एक ओर खुशी, बिन्दा के साथ जीवन बिताने के सपने थे तो एक तरफ मन में कुछ कुछ निराश से भरी बातें आने लगी थी।

क्या बिन्दा आएगी कि नहीं ?

भरोसा है बिन्दा जरूर आएगी।

कहीं वह डर और शर्मिले स्वभाव के कारण अपना वादा ना निभाए ?

नहीं...बिन्दा जरूर आयेगी। वह इंतजार करेगा इन्ही उलझनों के बीच अचानक मौहर सिंह खुशी से उछल पड़ा। कुछ दूर उसे बिन्दा नजर आ रही थी जो हाथों में छोटी सी पोटली लिए, रंग–बिरंगे लहगें और रंग बिरंगी चुनरी में, जो उड़ती जा रही थी, ऐसा लग रहा था जैसे कोई तितली उड़ते हुए हवाओं को चीरकर चली आ रही हो।

बिन्दा की आँखों में नए सपने अपना प्यार जिसके लिए वह बिना बताए अपने घर से निकलकर मौहर सिंह को विश्वास, प्यार और अच्छाई पर उसके साथ कहीं भी जाने के लिए प्रण करके अपनी दहलीज छोड़कर चली आई थी। मौहर सिह दौड़कर उसी ओर जाता है जिस मेंढ से बिन्दा आ रही थी।

बिन्दा ने मौहर सिंह की ओर देखा, देखते ही उसके पाँवों में एक नई ऊर्जा आ गई, आँखों में प्यारी सी चमक और होठों पर मुस्कान।

दोनों नजदीक आते गऐ और एक पल आया कि दोनों एक दूसरे के सामने थे। बिन्दा रूकी और मौहर सिंह को देखा, मौहर सिंह ने झट से बिन्दा को अपने सीने से लगा दिया।

मुझे तुम पर नाज ही नहीं, दुनियाँ का सबसे बड़ा भरोसा है।

बिन्दा सीने से लगी, खुद को शांत और खुशी के क्षण महसूस कर रही थी। उसका पूरा शरीर जैसे कि बिजली के झटके से कांपने लगा हो। पूरे शरीर में एक अनौखी और अनजानी सी मीठी तरंगे दौड़ रही थी।

मैं आ गई ठाकुर सा – आपके लिए

बिन्दा ने कहते हुए अपना चेहरा ऊपर उठाया और मौहर सिंह ने देखा, मुस्कुराया।

आज मेरे हाथों में पूरा चाँद है खुशनसीब हूँ मैं।

बिन्दा – धीरे से, ये मेरा भाग है ठाकुर सा...

मौहर सिंह, बिन्दा के कंधों को पकड़ता है और कहता है, बिन्दा आज से बस तुम ही मेरी सब कुछ हो, भूल जाओ कि तुम कौन हो, तुम मेरा प्यार, मेरा जीवन, मेरी आशा हो। चलो जल्दी–जल्दी समय कम है।

मौहर सिंह, बिन्दा का हाथ पकड़कर जीप की तरफ ले जाता है। बिन्दा पूछती है, हम कहाँ जा रहे हैं ? वहीं जहाँ अपनी एक छोटी सी दुनियाँ होगी, तुम और मैं ,और हमार संसार। मैं जो साथ दूँ...सब ठीक होगा। मौहर सिंह बिन्दा को सहारा देकर जीप की सीट पर बिठा देता है। बिंदा बहुत खुश है कि

वह उसी जीप पर बैठी है जो पहली बार देखकर उसका मन करता था। मौहर सिंह चालक की सीट पर बैठते हुए ...चलें।

बिन्दा, मौहर सिंह को देख रही है। फिर मौहर सिंह पूछता है–

मेरे जीवन का सफर तो अब शुरू होगा तुम साथ हो बस।

तुम कहोगी तभी चलूँगा

बिन्दा, हंसते हुए, अब तो मैं आ गई ठाकुर सा, चलो...चलते हैं।

मौहर सिंह एक खुशी और नए सफर के लिए लम्बी सांस लेता है, जीप स्टार्ट करता है, जीप खेतों से निकलते हुए आगे बढ़ती है।

*****

लेखक

छोड़ दिया उस दुनियाँ को,

जो जीने पर पहरे बिठाती है

इंसान के सपनों और अपनों को,

अपनी ही तरह से मिलाती है

चल पड़े हैं दो दिल दूर कहीं,

मंजिल को जाकर पाना है

ग़र दिल में रहम और प्रेम रहे

आशा है दुनिया बसाना है

अफसोस

चिठठी में लिखा है –

पिताजी,

आपके घर से निकलते हुए मेरा मन भारी है, पर मेरे कदम मजबूर हैं। मैंने वह कर दिखाया जो मैं आपसे कह ना सका। मैं बेड़िनी को लेकर चला गया हूँ, दूर...बहुत दूर। पढ़ते–पढ़ते जसवंत सिंह गंभीर हो जाता है फिर पढ़ता है। हाँ, उसी बेड़िनी को जिसे आपका समाज नीचा कहता है। उसी को जिससे आप अपने कुल और नाम पर ठुकरा रहे थे। ये मेरे मन की सच्चाई है जो लिख रहा हूँ।

मैने बेड़िनी का हाथ थामा है। आपसे नजर मिलाकर ये सब कहना मेरे लिए आसान न था। आपके ओहदे, आपके सम्मान के बोझ तले मेरे शब्द दब जाते। आज जब मैं ये घर छोड़ रहा हूँ, तो मात्र इसलिए कि पहिले मैं खुद को एक इंसान समझता हूँ औरों को भी अपनी ही तरह समझकर ही उनके साथ पेश आता रहा, क्योंकि यही मेरे लिए सही है, यही मेरा जीवन है।

आप जाति की मर्यादा समाज का डर और लोगों को डर दिखाते रहे लेकिन मेरे मन ने हमेशा इंसानियत को देखा है। गरीबी हमें छोटा नहीं करती और न ऊँची जाती हमें बड़ा बना देती है। असली ऊँचाई इंसान के दिल में होती है।

एक पल जसवंत पढ़ते पढते रूकता है, ललिता और संग्राम को देखता है जो चुपचाप मौन सुन रहे हैं। घमंड और अहंकार ने ही समाज को तितर–बितर कर दिया है। इंसानों में एक दूसरे के प्रति घृणा भर दी है। मैं उस नफरत को तोड़कर जोड़ने चला हूँ।

पिताजी, मैं बगावत नहीं कर रहा, बस मैंने जिसको पसंद किया, उसी के साथ जीवन जीने का वादा जो किया, वह पूरा कर रहा हूँ। मैने सच को चुन लिया है। जिसे आप बेड़िनी कहकर नफरत करते हैं। उसी में मुझे अपनी जिन्दगी की रौशनी दिखाई दी है।

गरीबी गुनाह नहीं है और जाति किसी इंसान की पहिचान क्यों ? इंसान की असली पहचान उसके कर्म और उसके प्रेम से होती है। मैने उसी पहचान को चुन लिया है।

मैं आपसे आशीर्वाद नहीं मांग रहा, क्योंकि आशीर्वाद और श्राप दोनों से बड़ा है, इंसान का सच्चा होना और मेरा सच यही है, बेड़िनी, मेरी जीवन संगीनी बनेगी। चाहे दुनियाँ साथ दे या न दे। समाज चाहे मुझे ठुकरा दे, पर मैं अपने दिल को नहीं ठुकरा सकता।

पिताजी, मेरे इस बात में भोले–भाले, गरीब, सच्चे मन वाले, गाँव वासियों और बेड़िनी के घरवालों का कोई दोष नहीं है, मैने उसे चुना और चुनकर मैं चला।

आपका बेटा,

मौहर सिंह

दो मिनट तक सभी चुप हैं, संग्राम और ललिता कमरे से बाहर चले जाते हैं। जसवंत वहीं बैठा चुपचाप फिर चिठठी निकाल

पढ़ता है। कभी–कभी एक चिठ्ठी और उसमें लिखे हुए शब्द ही नहीं होते, वह सीधे पढ़ने वालों के मन पर अपना प्रभाव छोड़ जाते हैं।

मौहर सिंह ने घरवालों के लिए कागज छोड़ा, पर सच तो यह है कि उस कागज के अक्षर पीढियों की आँख खोलने चाले थे।

जाति, गरीबी और अहंकार से जकड़ा समाज जब तक प्रेम और अपनेपन की भाषा नहीं जानेगा, तब तक ऐसी चिठिठ्यों के शब्द ही उसका आईना बनेगी। घर के आँगन में सन्नाटा था। पर उस सन्नाटे के भीतर हर दिल मौहर सिंह की चिठ्ठी को बार–बार पढ़ रहा था। जैसे शब्दों ने दीवार चीरकर सीधे आत्मा से बात कर ली हो।

क्या यही लिख गया ? किसी के कांपते हाथों से चिठ्ठी बंद की, तो किसी के आँखों से आँसू गिर पड़े। हवेली की दीवारें भी अब सवालों से गूँज रही थी। मौहर सिंह नहीं था, मानो समाज की जड़ता से चुनौती देकर यहीं खड़ा था।

लेखक

कागज पर लिखे शब्द

सिर्फ घर की चौखट ही ना लांघे

वो समय की दीवारों पर

घंटी से बज उठे, मुठठी में सवाल बांधे

जाति की बेडियाँ

गरीबी का कलंक और अहंकार का ताज

दबी रही कुछ ना बोली

आईना बन गई आज वही आवाज

हवेली में तो सन्नाटा और एक बेचैनी सी छाई हुयी थी। चाहकर भी जसवंत सिंह असहाय महसूस कर रहा था। ललिता का रो–रोकर बुरा हाल था। बचपन से जो पाला था मौहर को। क्या करती वह मौहर की खुशी के लिए सब कर जाती लेकिन घर परिवार की मर्यादा, परंपरा और अहंकार में डूबी हवेली में उसकी सुनता भी कौन ?

संग्राम सिंह का भी दिल बार बार रोता उसे अफसोस तो था कि मौहर सिंह को वह ना समझ सके और अपने प्रिय भाई जो ना जाने बिना बताए, बिना बूझे चला गया। चिंता थी उसके मन में अपने भाई के लिए। क्या करता ? पिताजी के सामने वह कभी भी ऊँचे स्वर में ना बोल पाने का सबब ये मिला कि एक लक्ष्मण जैसा भाई उससे दूर चला गया।

जमींदारी के कामों में संग्राम हमेशा अपने पिता का सहयोग करता रहा था उसे मालूम थ्ज्ञा कि मौहर सिंह के वापस आने के बाद कहीं बड़ी मिल खोलकर, जमींदारी से धीरे–धीरे दूर होकर शहर में जाकर सभी बस जाऐंगे। संग्राम को पता था कि जसवंत सिंह की ऐसी चाह इसलिए थी कि मौहर सिंह शहरी माहौल में पढ़ा लिखा था और साथ ही आजादी के बाद के कुछ दशकों में कई सरकारी आदेशों और योजनाओं से भविष्य में जमींदारी के भरोसे सम्मानजनक तरीके से जीवन नही कट सकेगा। घर में तो गमगीन वातावरण ही था फिर भी संग्राम और ललिता मिलकर पिता जसवंत को ख्याल रखने लगे थे। जब भी कभी साथ बैठकर बातें करते, तभी जसवंत सिंह यही कहते कि आज हवेली की दीवारें उसे डराती रहती हैं, कुछ पूछती रहती हैं, अकेलापन सा हो गया है। बिना मौहर के हवेली सूनी हो गयी है। क्यों ना मौहर के लिए जो सोचा

था, वह कर लिया जाए कम से कम, यदि कभी वह वापस, अपने घर, आये, परिवार से मिलने आयेगा, तब उसे अच्छा लगेगा और इस प्रकार से संग्राम सिंह ने शहरों में जाकर जमीन, मशीनें जानकार और मिल बनाने वालों से संपर्क करना शुरू कर दिया था।

उधर मौहर सिंह बिन्दा को लेकर ऐसे शहर में पहुँचता है, जहाँ कुछ उसके पुराने सहपाटी और दोस्त थे। मौहर सिंह के हालात और दोस्ती के लिए सभी ने मिलकर अपनी अपनी योग्यता से मौहर सिंह, बिन्दा के लिए एक मकान और मिलकर एक छोटे स्तर का टैक्सटाईल कंपनी का कार्य प्रारंभ कर दिया था।

इस काम में मौहर सिंह का व्यक्तित्व जो कॉलेज के साथियों के साथ रहा, जिसके कारण वे उसके अभिन्न दोस्त बने, उन्हीं सभी ने एक अनजाने शहर में बसने के साथ एक नई पारी की शुरूवात भी की थी।

बिन्दा खुश थी और मौहर सिंह भी कि वह अब बिन्दा को एक आजाद परिवार के साथ सभी सुख और उसे नया जीवन दे सकेगा, जो कभी उसने झोपड़ी के भीतर अंधेरों में सपने देखे होंगें। कुछ दिनों तो दोस्तों के दिए गये स्वागत–दावतों और मौज–मस्ती में गुजर गए। मौहर सिंह हर तरह से बिन्दा की चुप्पी और झिझक को शहरी वातावरण में तोड़ने का प्रयास करता।

जब भी मौका मिलता, बिन्दा से पूछता तो वह हमेशा ही एक ही जवाब दे देती कि उसे डर लगता है। इतने लोगों के बीच बोलने में। मौहर सिंह को मालूम था कि वर्षों तक ऐसे गाँव में

वह जीती रही, जहाँ दूर—दूर तक उसकी कुछ सहेलियों और नाना और माँ के अलावा कोई और न था। बातें करने के लिए।

बिन्दा खुश थी इसलिए कि वह अब खुद को खुशनशीब समझती थी कि उसकी मौहर सिंह जैसा प्यार करने वाला, उसे समझने वाला, सम्मान देने वाला मिल गया है। काम के सिलसिले में जब भी मौहर बाहर जाता, बिन्दा को लगता कि उसकी आधी आत्मा निकलकर जा रही है, लेकिन मौहर सिंह का हर शब्द और वाक्य प्यार से भरा, समझाने और पूछने का लहजा, उसे हर अकेली घर में, शहर में जीने की हिम्मत देता रहा।

मौहर सिंह जब भी अकेला होता, वह अपनी एक डायरी में अपने जीवन की नई शुरूवात का विवरण लिखता, जिसमें घर छोड़ने, बिन्दा से पहली मुलाकात, ललिता भाभी की यादें, संग्राम सिंह का प्रेम और पिता के प्रति सम्मान झलकता। डायरी में अपने मन की बातों को भी लिखता कि वह बिन्दा जो बेड़िनी जाति की होने के बाद भी क्यों उससे ब्याह किया। लिखता कि वह समाज में फैली परंपरायें और ऐसी प्रथाऐं जो नारी का शोषण करती है। ऐसी परम्परायें जो इंसानों और इंसान को श्रेणियों में बांटता है। क्या ऐसी सभी प्रथाओं ओर परम्पराओं से नारी हो या आदमी, दूरियों को बढ़ाया ही जा सकता है।

ऐसी दूरियों को समाप्त करने के लिए किसी को आगे आना ही होगा। शायद इसलिए उसने बिन्दा को अपनाया और समाज की हर दीवार को तोड़ने का एक प्रयास किया। वह डायरी में बिन्दा के बारे में भी लिखता कि वह चुप रहना चाहती है। अपने गुजरे दिनों के बारे में, उसे बोलना चाहिए। लेकिन वह

खुश होने के बाद भी अपनी पूर्व जिन्दगी को नहीं भूल सकती है।

वक़्त गुजरता गया, ठाकुर जसवंत सिंह तीन चार वर्षों तक मौहर के आने का इंतजार करता रहा लेकिन जब भी कोई दरवाजे पर आहट होती या कोई आदमी आता उन्हें लगता कि मौहर आ गया। लेकिन मन उदास हो जाता। चिंता और मौहर सिंह के जीवन के बारे में सोच–सोच कर तबियत बिगड़ती जा रही थी।

दूर दराज गाँव में होने के कारण अच्छे डॉक्टर की सुविधा न होना, संग्राम और ललिता को चिंतित करने लगी थी। संग्राम ने अपने पिता को समझा बुझाकर शहर में ही जाकर रहने और ढंग से ठीक इलाज कराने पर जोर दिया। कुछ दिनों के बाद संग्राम और ललिता, ठाकुर जसवंत सिंह को लेकर शहर की एक कोठी में आकर शिफ्ट हो गए।

एक रात विन्दा और मौहर एक दूसरे में खोए बातें कर रहे थे कि विन्दा बोली क्या कभी घर की याद नहीं आई ?

मौहर सिंह ने कहा, याद तो उनकी आती है जो तुम्हारी खुशी की, दुख की चिंता करते हो।

बिन्दा, फिर पूछने लगी, पाला पोशा है आपको, पिता है, भाभी है, माँ जैसी भैया जी हैं।

हाँ वो सब है और सब ठीक ही होंगें।

मुझे तीन साल पहले नही, और कुछ साल बाद बाहर कहीं जाना ही होता।

लेकिन

विन्दा ने फिर पूछा, लेकिन क्या है ?

बिन्दा तुमसे जब मिला, तभी से मैं हूँ। सोच लिया था कि प्यारी सी नयनों वाली, शीतल झरनों सी वाणी वाली।

बिन्दा मुस्कुरा रही है,

तुम मुझको मिली ...बस...

घरवालों ने मेरी बात को मेरी इच्छा को अपने सम्मान और अपने अहंकार से कोई अहमियत नहीं दी...मैं क्या करता ?

बिन्दा पूछती है,

मुझे ले आए...डर भी नही लगा, मुझे तो लगा था ?

मौहर पूछता है,

आज तुम ये सब, क्यों पूछ रही हो ? कभी नहीं पूछा...

बिन्दा मुस्कुराकर धीरे से,

अब तुम्हारे मन की बात पूछना क्या बुरा है?, मुझे भी लगता है जो हुआ आपके साथ...वो अच्छा नहीं हुआ....शायद मेरे कारण....

मौहर सिंह, झट से जवाब देता है, हाँ तुम्ही तो मेरी सब कुछ मैं तो चाहता था कि दुनिया देख के एक ठाकुर जाति के लड़के ने एक छोटी जाति, गरीब की लड़की एक विधवा माँ की लड़की से शादी की है...लेकिन मैं तुम्हें ऐसे ही ले आया... .मुझे कोई दुख नहीं है... मैने वही किया जो मेरे दिल ने कहा।

मैं जानता हूँ तुम याद करके अपने घर को खुद को असहाय, लाचार, वेवश और एक वस्तु समझती होगी, लेकिन अब...ये नहीं हो तुम...

बिन्दा, मौहर सिंह का हाथ पकड़कर अपने सीने पर रख कहती है,

हाँ....नहीं याद करूँगी... और ना ही कभी चाहूँगी कि वो याद आए एक बात कहूँ।

मौहर सिंह – कहो ना, क्या बात है...

बिन्दा – मौहर सिंह की आँखों में टकटकी लगाए देखती है...

क्या देख रही हो ? तुम जब ऐसे देखती हो तो लगता है, जैसे मैं गहरे समुन्दर में खिलते हुए फूलों के बीच हूँ।

बिन्दा धीरे से, मैं आज मेड के साथ डॉक्टर के पास गयी थी

मौहर सिंह – अचरज से,

क्या हुआ था ? तुमने मुझे बताया नहीं। तबियत तो ठीक है, तुम्हारी ? हुआ क्या बताओ।

बिन्दा, मुस्कुराकर कहती है,

तबियत ठीक है, कुछ भी नहीं हुआ। जो होने वाला है उसका पता चल गया।

मौहर सिंह, बिन्दा प्लीज पहेलियाँ मत बुझाओ, मुझे बस जल्दी बताओ क्या हुआ... बताओ बिन्दा फिर मुस्कुराते हुए मौहर सिंह का हाथ अपने पेट पर रखती है।

ये क्या– पेट खराब...है दर्द है।

नहीं...(बिन्दा मुस्कुराकर कहती है।)

पता चल गया है कि आप ...

मौहर सिंह हंसता है,

क्या मैं...बाप तुम ...माँ ओ परमात्मा... सही... सच में तुमने दुनिया की सबसे बड़ी खुशी दी है।

बिन्दा कहती है, हाँ तुम बाप बनने वाले हो...

मौहर सिंह बिन्दा को दोनों हाथों में भरकर चूमता है, और इतना खुश होता है कि बिन्दा भी हैरान है, कि उसने इतनी खुशी मौहर के चेहरे पर नहीं देखी। यह क्षण मौहर की खुशी नहीं, बल्कि उसकी जिम्मेदारी और आने वाले संघर्ष की शुरूआत है।

खुशी की एक हल्की सी किरण,

मौहर के जीवन में उतर आई।

पिता बनने के आहट

सारे जग की खुशी लाई

लौ जल उठी नए सपनों की

विन्दा भी ये सुना के शरमाई

*****

लेखक –

मौहर की आँखों के एक संसार खुल गया है,

छोटे से नन्हे कदमों की आहट सुनाई दे रही है

अब केवल एक बेटा, एक प्रेमी या एक पति नहीं

एक पिता का अहसास जागा है

आज मौहर ने देखा समझा है

अपने भीतर

जिम्मेदारी का सच्चा दोस्त...

हर पल लौ के साथ, छाया गहरी होती है
संगीत हो भविष्य को वहाँ नई तहजीब होती है
नया एक नाम जिन्दगी का मिल गया
नई राहें, नए पल, सब कुछ बदल गया
होठों पर मुस्कान और मन में गूँजा गीत है
मिल जाए जब सच्चे साथी होते वो मनमीत हैं

*****

मौहर की कंपनी

मौहर की काबलियत उसके रसूकात और अच्छे व्यवहार से कंपनी को आगे बढाने के लिए ज्यादा मसक्कत नहीं करनी पड़ी। फिर भी मौहर अपने व्यवसाय के सही प्रबंध कामगारों के साथ अपनत्व का व्यवहार, लगन, मेहनत से सफलता की सीढियाँ चढता गया। उसके जीवन में बिन्दा और उसका व्यवसाय ही मुख्य उद्देश्य थे। बिन्दा को हमेशा खुश देखकर उसे नई ताकत, नई ऊर्जा मिलती रही थी।

पूरे सात साल गुजर गए, दोनों खुश और आनंद से भरे सागर की भांति हिलौरे लेते हुए घर में आने वाले नए अपने मेहमान के लिए नए–नए सपने बुनने लगे। मौहर सिंह ने जो कोठी खरीदी थी बिन्दा के सुझाव और इच्छा से उसका रंग रौगन करा दिया था। दोनों चाहते थे कि आने वाला उनका बच्चा नई कोठी में पैदा हो।

कई बार दोनों की राय, बच्चे के बारे में एक ही होती, मौहर की इच्छा कि बच्ची पैदा हो जबकि बिन्दा चाहती थी कि मौहर जैसा बेटा पैदा हो। फिर भी दोनों आने वाले समय पर ये इच्छाऐं छोड़कर उस दिन का बेसब्री से इंतजार करते रहे, जब उनकी नई कोठी में उनका नया मेहमान आएगा।

बिन्दा ने अपने जीवन में सोचा भी नहीं था कि उसे मौहर से इतना प्यार और अपनापन मिलेगा, वह अपने उस कदम पर

कभी दुखी नहीं हुई जब वह मौहर के प्रेम के कारण अपनी माँ और नाना को छोड़ चली आई थी।

नई कोठी नया दिन और खुशियों का आलम, दोस्तों, मित्रों और सभी कर्मचारियों के साथ कई शहर के लोग सप्लायर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स सभी कोठी की तरफ कोई पैदल, कोई कार से चेहरों पर मुस्कान लिए आ रहे थे।

कोठी रंग बिरंगी रौशनी से जगमगा रही थी हर आने वाले का स्वागत मौहर सिंह खुद कर रहा था। कोठी के अंदर स्त्रियों से घिरी बिन्छा, सामने रखे छोटे से पलने में कुछ दिन पूर्व पैदा बच्ची रंग बिरंगी रौशनी को देख रही थी।

स्त्रियाँ बच्ची को देखकर, आशीर्वाद और अच्छे जीवन की आशीष दे रही है। मौहर सिंह आए हुए सभी दोस्तों के साथ खुश नजर आ रहा था। मेहमानों की खातिरदारी के लिए तरह–तरह के व्यंजन और पेय परोसे जा रहे थे।

आज बिन्दा और मौहर सिंह को दुनियां की सारी खुशी जैसे समिट कर आ गई हों, दोनों को देख सभी अपने–अपने शब्दों और विचारों से धन्यवाद कह रहे थे। धीरे–धीरे बजता संगीत रूका और एक बुजुर्ग ने आकर मौहर सिंह से पूछा –

ठाकुर साहब आज खुशी का दिन है और सुना है आज बिटिया का नामकरण भी है लेकिन नामकरण के लिए कोई और नहीं नजर आया।

मौहर सिंह बुजुर्ग के पास जाकर कहता है –

पालीवाल जी नामकरण के लिए किसी और की क्या आवश्यकता है, नाम तो माता–पिता को जो अच्छा लगे, वही ठीक होता है, क्या ख्याल है आपका ?

बुजुर्ग मौहर सिह के सामने चाहकर भी कुछ नहीं कह सका और झेंपते हुए बोला–

आप सही कह रहे हैं, माता–पिता की च्वॉइस और उनके द्वारा दिया नाम, अच्छा ही होता है, जो लोग सुन रहे थे, उन सबने भी एक स्वर में 'हाँ' ही कहा।

मौहर सिंह ने चारों तरफ देखा और थोड़ा ऊँचें स्वर में कहा– आप सभी यहाँ आए ये मेरा सौभाग्य है आपके आने से हमारी खुशियों में और खुशी मिल गई।

एक युवक –सर ये खुशी के पल हैं, हम सबको भी बहुत खुशी है, बहुत खुशी।

दूसरा अधेड़ उम्र का व्यक्ति कहता है– आप हमेशा जो भी बोलते हैं, ठाकुर साहब मन को छू जाता है, लोगों को आपसे बहुत कुछ सीखना चाहिए।

वही बुजुर्ग व्यक्ति – सही कहा, ठाकुर समाज... समय भी होता जा रहा है, मै ंतो कहूँगा, सभी मेहमान हैं...आप ही नाम रखें... बच्ची का।

हाँ जरूर....कहते हुए मौहर सिंह बिन्दा के पास आता है, पास जाकर बिन्दा से कुछ पूछता है, वापस आकर।

हमने तो जन्म से पहिले ही सोच लिया था एक नाम।

बुजुर्ग व्यक्ति बोला – बताओ सबको ठाकुर साहब।

मौहर कहता है – बेटी का नाम ''नैना।''

एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति–वाह अच्छा नाम है... जो जहाँ को लगातार देखें...परखे...समझे।

बिन्दा और सभी स्त्रियों ने भी मौहर सिंह के कहे, नाम 'नैना' पर अपनी–अपनी अच्छी प्रतिक्रियाऐं दी। बिन्दा उठकर बच्ची के पालना के पास आती है, उसके माथे को चूमकर पुकारती है, नैना, बच्ची टकटक देख रही है।

अब तुम मेरी नैना हो।

अन्य स्त्रियाँ आकर बच्ची के पालना को झुलाती हैं, और गाने के माध्यम से बच्ची को आशीर्वाद देती है।

देर रात तक कार्यक्रम चलता रहा और एक नई दुनियां, नई राहें, नई जिम्मेदारियों ने अपने कदम कोठी में आज रख दिए थे।

लेखक –

वो चल पड़े थे नई खुशियाँ बसाने को

कवाएदे जहाँ को नई राह दिखाने को

बन गया प्रेम का, एक आशियाना

जिसका अपनेपन, रजामंदी का शामियाना

वक्त ने दिया एक तोहफा, खुशियों की बारात आई

मुकददर ने दिया साथ, मौहलत रंग लाई

अहसास न था कि मिले ना मिले मंजिल

दरिया भी देता है रस्ता, जब मिलते हैं संग दिल

आ गई शरारा इक, माँ का आंचल ओढ़कर

हर कदम उसका बनेगा, कुछ अलहदा होकर

दोनों ही बच्ची की परवरिश में ले रहते बच्ची धीरे से बड़ी होने लगी थी, चार साल की नैना को टयूटर आकर पढाने लगी थी, विन्दा और मौहर को नैना की तुतली जुबान से निकले शब्द सुनकर तसल्ली होती और लगता कि नैना अवश्य पढाई में अव्वल रहेगी।

रोजमर्रा की तरह बिन्दा नैना के साथ खेलती लाड करते–करते उसे पुचकारती, गले लगाती, नैना अपने माता–पिता को पहचानने लगी थी, मौहर सिंह के पास आकर गले से चिपक जाती। ऐसा लगता कि सारा जहाँ उसके आगोस में है।

नैना पाँच साल की ही रही थी, मौहर सिंह और विन्दा ने उसका दाखिला एक अच्छा स्कूल में करा दे।

स्कूल में दाखिला फार्म मे पिता और माता के नाम के साथ उनकी जाति धर्म भी लिखना था। मौहर सिंह फार्म भरा, कागज पर वह कई कॉलम भर चुका तो एक कॉलम पर उसकी नजर पड़ी, माँ की जाति, धर्म, वह ठहर गया। उसने बिन्दा की तरफ देखा. बिन्दा कुछ समझ नहीं सकी, बिन्दा ने इशारे से पूछा कि क्या बात है ? मौहर सिंह कुछ देर रूका, फिर सोचने लगा कि बिन्दा तो ये शब्द   पहिले से भुल चुकी, मन से मिटा चुकी है लेकिन समाज उसको भूलने नहीं देना चाहता झट से कॉलम में लिखा दिया था 'बेडिनी' सामने बैठे स्कूल प्राचार्य ने फॉर्म देखा पढ़ा, एक बार बिन्दा की ओर देखा तभी मौहर ने कहा...ये मेरी धर्म पत्नी है, बिन्दा। जी जी.... आपकी बच्ची का एडमिशन हो गया है।

दोनों नैना की उंगली पकड़े स्कूल से बाहर आ रहे थे। वह स्कूल से आकर अपनी माँ और मौहर सिंह के साथ ही बैठकर खेलना पसंद करती।

एक रात मौहर सिंह अपने कमरे में कुछ काम कर रहा था कि बिन्दा के साथ नैना कमरे में आती है उसके हाथों में एक गुड़िया है।

नैना – ये देखो पापा...मेरी गुड़िया।

मौहर सिंह– नैना से कहता है, ये तुम्हारी गुड़िया है, तुम्हें पसंद है इसे गुड़िया जैसी ही रखना जैसे तुम हो।

नैना (बच्ची) गुड़िया को दिखाते हुए, पापा ये मेरी सहेली होगी।

मौहर सिंह बच्ची को बाहों में उठाकर – हाँ और तुम...हम दोनों की सखी हो, तुम्हारी हर सखी हमारी बेटी ही तो है।

बिन्दा की तरफ देखकर

इसका हर आँसू मेरी जिम्मेदारी है, और हर मुस्कान मेरी जीत। बिन्दा को अहसास हुआ कि मौहर सिंह के दिल में एक अहसास गहरा हुआ कि उन दोनों का अस्तित्व अब बेटी की सुरक्षा और उसकी हर खुशी से गहरा जुड़ा है।

लेखक

कंधों पर बैठी बेटी नन्ही सी

पिता की थकान मिटा देती है

जिसे बचाने को दुनियां से लड़े

वही उसकी जीत की पहिचान बना देती है

*****

मौहर की डायरी

रोज की तरह मौहर की मौका मिलता अपनी डायरी लिखता और टेबुल पर रखी पुस्तकों में रख देता आज भी वह डायरी लिखता रहा नैना अपनी माँ के पास बैठी बातें कर रही है।

बच्ची – माँ, अ से क्या होता है ?

बिन्दा – (मुस्कुराते हुए) अनमोल...और तुम तो हमारी अनमोल बिटिया हो।

फिर बच्ची ने पूछा

और म से...

बिन्दा अनपढ़ तो थी लेकिन समझदार ओर बातों की जानकार थी. वह बोली।

म से माँ....ममता।

ये मेरी पहिचान है तेरे होने से।

बच्ची दौड़कर बिन्दा से लिपट जाती है, बच्ची कहती है,

सही बात– टीचर ने भी ये ही कहा था।

दुनिया में सबसे ज्यादा प्यार बस माँ–बाप करते हैं।

बिन्दा उसकी बातों पर मुस्कुराती है और उसे सुलाने का प्रयत्न करते–करते रोज की पढ़ाई की बातें करती है।

लेखक

स्लेट पर खिंची छोटी सी लकीरें

माँ की आँखों में सपने जगा देती है

शब्द बेटी के वो जो अपने से हैं

वह अधूरी दास्ता पूरी कर देती है

रविवार का दिन है मौहर सिंह और बिन्दा, नैना के साथ कोठी की लॉन में बैठे हैं, दोनों नैना के भविष्य और कुछ यादों को ताजा करते हुए बात कर रहे हैं।

मौहर सिंह बिन्दा से पूछता है।

बिन्दा क्या तुम्हें कभी घर की याद नहीं आती है ?

क्या आपको नहीं आती ? (बिन्दा कहती है।)

हाँ मुझे नहीं आती याद घर की. जिस घर मे मेरा कुछ भी अस्तित्व ना हो और होता, तो या मैं समझता....तब मैं तुम्हें नहीं मिलता...मुझे तुमसे मिला था जीवन भर के लिए।

बिन्दा सामान्य सी होकर

मैं अपनी पिछली जिन्दगी को याद ही नहीं करती...सुना है सबके अपने–अपने भाग होते हैं, गाँव में तो सभी का एक सा ही भाग था, लड़की होना ही अभागी होना था।

मौहर सिंह – ठीक ठीक है...भूल जाना ही ठीक है... अब याद करके भी हमें क्या कोई अपनाऐगा...अहंकार और मजहबी दांवपेच की है ये दुनिया।

(तभी दोनों की बातों के बीच नैना आकर बैठती है।)

नैना – पापा...ये बताओ ये बादल क्यों होता है ?

मौहर – उनको आसमान ने बुलाया है, दुनिया को पानी देने के लिए, और तारों के पास इतनी रौशनी क्यों होती है ?

बिन्दा ऐसी बातें सुनते हुए नैना को देख रही है।

तुम्हारे पास भी होगी...रौशनी...पढोगी लिखोगी तो रौशनी आयेगी और तुम जहाँ जाओगी.... अंधेरा मिट जाएगा।

नैना – अच्छा...तो ठीक है...मैं भी आसमान भी बनूंगी और सितारे भी। मौहर की आँखें नम हो जाती हैं...कहता है हाँ बेटी आसमान ही बनोगी और हम दोनों तेरे छांव के नीचे हमेशा रहेंगें। तेरे साथ।

नैना की बातों से दोनों को विश्वास हो रहा था कि आने वाले कल को नैना बढ़ी होकर...बेटी के सपनों से नया सूरज उगेगा।

लेखक

आसमाँ तारों के साथ रहता है

धरती कितनी भी दूर सही

अपनी बौछारों से जीवन देता है

सपनों की भी एक मंजिल होती है

जो जीवन के नए द्वार खोलती है

बिखर जाती है कुछ पुरानी बातें

शमाँ में नई लहर नई सोच डोलती है

पल पल बदलता है जहाँ का मेला

बागे बहार पाते हैं वही जो झूझते हैं
साहस भरा हो जिनमें, राहें ढूँढते हैं।

*****

वक्त अपने चक्र के साथ आगे बढता जा रहा था। ठाकुर जसवंत सिंह को शहर के सभी बड़े डॉक्टर के द्वारा इलाज कराया गया लेकिन बढ़ती उम्र और चिंता उनके शरीर को क्षीण करती गयी।

संग्राम ने हर प्रयास किया परंतु दिन ब दिन ठाकुर जसवंत की हालत बिगड़ती चली गयी। बेटी और बहिन को पता तो वे सभी आकर बस अपनी प्यार और संवेदना प्रकट करते और समझाते कि बीस साल गुजर जाने के बाद भी जो वापस नहीं आया, घर की, पिता भाई की याद नहीं आदि ऐसे मौहर की चिंता उनको नहीं करना चाहिए। लेकिन पिता का दिल तो बच्चों के लिए अंतिम सांस तक धड़कता रहता है।

ऐसा भी वक्त आया कि ठाकुर जसवंत सिंह का देहांत हो गया, शहर में आकर सभी कारोबार ठीक था लेकिन बढती उम्र ने संग्राम से उसका साथ उसकी एक सुरक्षा स्वतंत्र हो गयी। अफसोस था संग्राम को और ललिता को कि मौहर का इतना बठोर दिल नहीं देख सका था। दोनों ने वर्षो पहले से ही मन में बिठा लिया था कि मौहर रूककर चला गया, बेड़िनी को लेकर और अब वह कभी वापस नहीं आयेगा।

समय और जिन्दगी को साथ–साथ ही चलना पड़ता है। संग्राम और ललिता का जीवन भी इसी तरह फिर आगे बढ गया।

*****

नैना का सफर

मौहर सिंह को अपनी बढती कंपनी की ग्रोथ से कई कामों से खुद को अलग कर लिया और उन कामों के लिए अपने भरोसेमंद लोग नियुक्त कर दिए।

मौहर आधी उम्र के करीब था बिन्दा घरवार के साथ मौहर और नैना का भी पूरा ख्याल रखती। नैना पढने में हमेशा अव्वल रही। अब वह कॉलेज जाने की राह देख रही थी। नैना का सपना था, समाजशास्त्र का पूर्ण अध्ययन करें।

मौहर ने कभी भी नैना की इच्छा का विरोध नहीं किया...वह जानता था कि बचपन से कॉलेज जाने तक नैना ने पढ़ाई के साथ देर सारी अन्य विषयों की किताबें पढ़ी है। उसने अपने कमरे को लाइब्रेरी बना दिया है।

किताबों के ढेर में बैठी बिंदा ने कई बार पूछा कि क्यों इस तरह कितारों के बीच बैठ कर पढ़ती रहती है।

नैना ने कहा था – माँ मैं ज्यादा से ज्यादा जानकारी जानना चाहती हूँ... जब बिना जानकारी के ज्ञान का कोई महत्व नहीं है।

बिन्दा खुश कर बोली थी – मुझे अच्छा लगता है, जब तू इस तरह की बातें करती है।

मुझे भी बहुत कुछ तूने ही सिखाया है।

नैना ने एक दिन पूछ लिया – माँ आपने पढ़ाई क्यों नहीं की ? बिन्दा ऐसे सवाल पर कुछ देर चुप रही लेकिन खुद को संभालते बोली।

गाँव में कहाँ पढ़ाई को इतना मान देते थे। और फिर लड़कियों को ज्यादा पढ़ाना हीं नहीं चाहते, तब घरवाले। बिन्दा और नैना की कभी–कभी होने वाली बातों से नैना जान गयी थी कि उसकी माँ सच तो कहती है लेकिन पूरा नहीं। कई बार ऐसा भी हुआ कि नैना ने गाँव का नाम नाना–नानी के नाम, गाँव को नहीं जाती ? आदि बिन्दा से जुड़े ऐसे सवाल होते ताकि नैना अपनी माँ को घर के बारे में जान सकें। बिन्दा कुछ नहीं बोलकर नैना को टाल देती एक दिन नैना जब कॉलेज से वापस आई, आते ही वह बिन्दा से बोली,

माँ...

हाँ क्या बात है, सब ठीक है ना ?

हाँ सब ठीक नहीं है...बस बार–बा मेरे मन मे ंएक सवाल आता है, जिसका उत्तर तुम ही दे सकती हो।

बिन्दा नैना की बात सुनकर सहज सी गयी, वह समझ गई कि नैना फिर ऐसा पूछने वाली है जो वह आज तक उसे नहीं बता सकी थी।

ऐसा क्या सवाल है ? जो तू आते ही पूछने लगी... हाथ मुँह धोले, कुछ खा ले, फिर बात करेंगें।

नैना बिन्दा की आँखों में देखकर बोली। मेरी प्यारी माँ हो ना तुम... बस एक बात मुझे पूछनी है। बिन्दा पूछती है।

क्या ?

नैना कहती है।

बस मुझे ये बताओं कि इतनी सालों तक पापा और न तुम गाँव क्यों नहीं गये ?

बिन्दा ठिठक जाती है...चुप है।

नैना पूछती है

माँ क्या हुआ...बताओ ना।

बिन्दा धीरे से।

न...ना जाने दो....फिर बता दूँगी

नैना बिन्दा का हाथ पकड़कर...

माँ क्या कुछ ऐसा ही कि तुम मुझे बताना नहीं चाहती, उसे भूलना चाहती हो।

बिन्दा चुप रही फिर बोली।

हाँ...

और कुछ भी है जिसे मैं नहीं चाहती कि तू कभी जान सके।

नैना – गंभीर हो जाती है, पूछती है

ऐसा क्या हुआ ? ऐसा क्या है वहाँ ?

बिन्दा....

नैना मेरी बेटी...कुछ बाते होंती हैं जो सबके लिए नहीं केवल कुछ के लिए ही अच्छी होती हैं...वह सब मैं भुला चुकी हूँ... और अब याद भी करना नहीं चाहती।

कहते–कहते बिन्दा की आँखें नम हो जाती हैं, नैना बिन्दा को देख कहती है।

ठीक है माँ, मुझे माफ कर दो, मुझे ऐसा कुछ नहीं पूछना चाहिए लेकिन मेरे मन में तो ये सवाल कई बार आया...लेकिन पूछ ना सकी। मुझे नहीं पता था कि इस बात से तुम्हें दुख होगा...मैं तुम्हें दुखी नहीं देख सकती। बिन्दा के गले लगती है।

रोज की तरह सामान्य सा दिन मौहर नैना, बिन्दा साथ बैठकर नाश्ता करके बैठे हैं, तभी नैना कहती है, पापा मेरे लायक कोई काम हो तो बताना, मुझे अच्छा लगेगा।

मौहर हंसते हुए, तुम काम करोगी, सब तो है काम करने के लिए, तुम बस अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो। नैना वैसे तुम पढाई पूरी करके क्या करोगी ? कंपनी संभालोगी या और कुछ सोचा है। बिन्दा बोलती है। हाँ कभी बताया नहीं हमारी बेटी क्या करना चाहती है ?

नैना – मैं तो बस...अभी तो पढाई पूरीकर लूँ...फिर सोच के बता दूँगी।

मौहर कहता है, जैसा तुम चाहो... मैं चलता हूँ (मौहर सिंह चला जाता है, बिन्दा और नैना भी नाश्ते की टेबल से उठकर चले जाते हैं, नैना अपने कमरे में जाकर वापस आती है, जैसे वह कुछ ढूँढ रही है, मौहर के कमरे में जाती है, बड़बड़ाती है. ..ना जाने पढ़ते–पढते बुक कहाँ रख दी ? मौहर के टेबुल पर रखी फाइलें किताबों में किताब ढूँढ रही है तभी उसकी नजर एक लाल कवर की डायरी पर जाती है, डायरी...बुदबुदाती है। डायरी लेकर बैठ जाती है और खोलकर पढने लगती है जैसे–जैसे पेज पढकर पलटती है उसकी आँखों में आश्चर्य और चेहरे पर उदासी छा जाती है। नैना डायरी के पन्ने पढ़ चुकी होती है तभी बिन्दा आ जाती है।

बिन्दा–नैना कॉलेज नहीं जाना क्या ? नैना खुद को संभालती है और डायरी को अपनी जगह रखते हुए कहती है, जाना है, माँ...अपना ध्यान रखना....कहते हुए चली जाती है, झट से वापस आकर बिन्दा से लिपट जाती है। बिन्दा पूछती है क्या हुआ... नैना...नैना। नैना कहती है, तुम सबसे अच्छी माँ हो, जो तुम बोलती नहीं, सब सहन करके चुप रहती हो।

बिन्दा – ऐसा क्यूँ कह रही है ?

नैना – बस ऐसे ही, मन में आया कह दिया माँ. रियली तुम बहुत अच्छी हो।

कहते हुए कमरे से बाहर चली जाती है, बिन्दा एक पल सोचती है, फिर होठों पर एक मुस्कान आती है और बोलती है। बड़ी हो गयी है समझदार भी।

लेखक

जो सिर्फ बेटी भी थी

थी एक आँधी,

रूढियों को हिलाने वाली

अस्मत को बचाने वाली

माँ की चुप से समझना सीखा

सपनों में बदलाव का रंग घोलना सीखा

आँखों में नई नहीं, एक आग थी

डायरी में लिखे सामने कई सवाल थे

किसने कहा बेटियाँ कमजोर होती हैं

वो एक शक्ति है, हर रोज जवाब देती है

उसका जनम एक दस्तक था

जिसने एक चिंगारी जला दी

चल पड़ी उम्मीदों की डोर लेकर

आगे समाज में एक ज्वाला ला दी

वो क दिन क्रांति लेकर आएगी

हर नारी को वो सम्मान दिलाएगी

एक बेटी बेडिनी की एक पास नहीं एक प्रश्न है हम सभी से क्रूा. हम तैयार है उसके साथ खड़ा होने को ?

*****

एक डर एक साहस

जो बातें उसे अपने पिता और माँ के बारे में आज तक पता नहीं था, वह यकायक डायरी पढने के बाद सब जान गई थी। वज कॉलेज में तो आ गई लेकिन उसका मन अपनी माँ बिन्दा की बेडिनी होने और गाँव के हालत जनकर परेशान था, कि माँ ने किस तरह से युवा होने तक की जिन्दगी जी पाई होगी।

पिता के प्रति और सम्मान उसके मन में आने लगा, वह जान गई थी कि एक जमींदार का बेटा केवल इसलिए घर से दूर चला आया कि वह इंसान इंसान के बीच कोई फर्क नहीं मानता था।

उसे कई बातें याद आती कि माँ बचपन मं एक असहाय माँ की बेटी की कहानी सुनाती थी, जो माँ की इच्छा के लिए परी बनकर आ जाती थी। बेटी की परी देखकर माँ का दिल भर आता और खुश हो जाती।

वह समझ गयी कि माँ उसे ये कहानी क्यों सुनाती थी, इसलिए कि माँ अपने जीवन में किसी से भी अपनी खुशी के लिए एक शब्द न बोल सकी। विद्रोह न कर सकी उसे जो प्रथा मंजूर नहीं थी. फिर भी घुट–घुट कर उस प्रथा की भेंट चढने के लिए मजबूर थी।

माँ की सादगी सीधे स्वभाव और दुनियां से अनजानी से उसके पिता ने आकर साहस और हौसला दे दिया, हाथ थामकर साथ में जीने का वादा कर, हर सुख छोड़कर अपनी मेहनत पर एक

परिवार बसाया, नैना ने सोच लिया कि उसकी माँ चुप रही लेकिन वह चुप नहीं रहेगी। ऐसी अमानवीय प्रथा के लिए उससे जो हो सके वह करेगी।

सोचते—सोचते बहुत समय गुजर गया। तब नैना को ख्याल आया कि क्लास का समय तो समाप्त हो गया। वह कॉलेज भवन से बाहर आकर एक ओर बैठ गयी ताकि अपने मन को एकाग्र कर सके।

क्लास का ही सहपाटी गंभीर स्वभाव और सादगी पसंद का पूरा नाम था, सुदर्शन त्रिपाठी जो नैना के साथ ही समाजशास्त्र का शोध छात्र जिसे नैना के विचारों, क्लास में किसी विषय पर बात करने के तरीके और उसकी समझदारी के साथ नैना के स्वभाव कहे गये छोटे भाषणों ने उसे बांध लिया।

वह हमेशा चाहता कि वह नैना से बातें करे लेकिन कभी ऐसा मौका नहीं मिल सका, आज तो उसे एक ओर बैठी नैना दिखाई पड़ जाती है, वह आता है और पूछता है।

हैलो नैना..यहाँ अकेली चुपचाप क्यों बैठी हो ?

नैना दे देखा— ओ सुदर्शन...बस ऐसे ही।

सुदर्शन सहज स्वर में, आपको देखकर लगता है कि कॉलेज आपके लिए किताबों का मंदिर है। दोस्तों की भीड़ से आपको कोई मतनब नहीं।

नैना हल्की गंभीरता से— दोस्त मिलते हैं, खो भी जाते हैं, पर किताबें जब मिलती हैं, हमें कुछ ना कुछ दे जाती हैं।

सुदर्शन चौंकते हुए—वाह...ऐसा सोचने वाले लोग बहुत कम मिलते हैं. पर कभी कभी किताबों से ज्यादा एक सच्चा इंसान भी हमें बहुत कुछ सीखा सकता है।

नैना थोड़ी मुस्कान के साथ –अच्छी सोच है, सुदर्शन।

उठकर खड़ी होती है। वैसे सुदर्शन कुछ कहना चाहते हो ?

सुदर्शन – धीरे से ईमानदारी से। बस इतना की अगर नैना आप चाहो तो मैं आपकी किताबों के बीच एक दोस्त बन सकता हूँ ? नैना के चेहरे पर एक मुस्कान आती है। मैं आपके बारे में कुछ जानती नहीं ...हाँ इतना जानती हूँ, टैलेंन्टेउ और एक अच्छे इंसान हो।

सुदर्शन–धीरे से, ये मेरा जवाब नहीं है...कुछ तो कहो।

नैना – दोस्त तो बन जाते हैं, लेकिन तब जब दोनों के विचार मिल जाएं।

सुदर्शन – मैने क्लास में तुम्हारी हर बात हर टॉपिक पर सुना है...सच कहूँ तो मुझे बहुत अच्छा लगा जब–जब तुमने कुछ भी बोला है।

नैना– हम तो रोज ही मिलते हैं, बाकी बातें कल कर लेंगें... अच्छा लगा आपसे मिलकर।

बातों करते हुए नैना धीरे–धीरे आगे बढती है।

सुदर्शन– लगता है, आपको जल्दी घर जाना है ?

नैना पूछती है, क्लास तो खत्म हो गई...आप भी हो...

सुदर्शन बीच में ही कहता है।

नहीं अभी मुझे लाइब्रेरी जाना है। कुछ बुक्स देखती है।

लेखक

ओस की बूँदों, सा पारदर्शी

किताबों का सा सच्चा यह मेल
नजरें बोली दिल ने सुना
खामोशी ने लिख दिया खेल
विचारों की राह पर चलकर
दो मन अचानक मिल गये
नजरें बोली, होंठ चुप रहें
पर सपनों के आंगन खिल गए
ये रिश्ता कोई शोर नहीं
न ही भीड़ का उत्साह
ये तो आत्मा की गहराई है

*****

पहली मुलाकात

नैना और सुदर्शन फिर मिले, अचानक नहीं, सुदर्शन ने नैना से कुछ कहने की चाह थी जो कह दी। नैना आपसे बात करना जैसे कोई किताब खोलकर खुद को पढने जैसा है।

नैना सुनकर मुस्कुरा दी और चली गयी थी क्लास में लेकिन फिर मुलाकात हुई क्लास खत्म होते ही सभी बाहर निकल रहे हैं। सुदर्शन और नैना साथ–साथ बाहर निकल रहे हैं। एक सामाजिक विषय पर दोनों के बीच चर्चा शुरू हो जाती है चलते–चलते बातें कर रहे हैं।

सुदर्शन – आज सर ने कहा कि शिक्षा से ही समाज में बदलाव हो सकता है, मैं मानता हूँ कि सबसे बड़ी ताकत किताबों में हौ, बिना शिक्षा के आदमी अधूरा सा है।

नैना –(सुदर्शन की बाते ंसुन उत्साहित होकर बिल्कुल सही।) शिक्षा सिर्फ ज्ञान नहीं देती वो सोचने समझने का हैसला देती है, मुझे तो लगता है जो इंसान पढ़ लिख लेता ळै, वो समाज की आँखें खोल कसता है।

सुदर्शन, सर हिलाते हुए। और सबसे जरूरी, वो अपने डर को तोड़ देता है बोलने का साहस आ जाता है। नैना, गंभीर स्वर में, हाँ, डर ही तो सबसे बड़ा कैद खाना है। कुछ क्षण दोनों खामोश चलते रहते हैं, फिर सुदर्शन माहौल हल्का करता है।

सुदर्शन, हंसते हुए, तो जब भी कोई बहस होगी, हम दोनों, तब दोनों एक ही टीम में होंगें। नैना हल्की सी हंसी को दबाते

हुए, जरूरी नहीं... मैं तो हमेशा सही पक्ष के साथ ही रहूँगी, चाहे वो आपके खिलाफ ही क्यों ना हो।

सुदर्शन– हंसते हुए, तो मुझे हमेशा सच बोलना पड़ेगा...ताकि आप मेरी तरफ ही रहें. वैसे मुझे झूठ और दिखावटीपन से नफरत सा है।

नैना, सुनकर अच्छा लगा।

सुदर्शन, तो हम एक साथ एक पक्ष में ही रहेंगें ?

नैना–हाँ, क्यों नहीं...उस दिन आपसे एक सवाल किया था, शायद उसका ये ही जवाब हो।

सुदर्शन मुस्कुराता है, नैना भी मुस्कुराती है, दोनों हंसते हैं, इस हंसी में आत्मीयता की बुनियाद रखी है।

लेखक

जागी जिज्ञासा विचारों का मेल हुआ

दोनों ने एक दूजे को जाना

बढने लगा आत्मिक लगाव दोनों का

सच्चे दोस्त को दोनों ने पहिचाना

सुदर्शन और नैना दोनों के बीच विचार मिलने लगे और दूरियाँ कम होने लगी थी, वो दोनों बैठ कर एक एक टॉपिक पर बातें करते और इन्हीं बातों से एक दूसरे को समझने लगे थे।

सुदर्शन ने चारों तरफ देखा पर आज नैना दिखाई नहीं दे रही थी, उसे अहसास हुआ कि हो ना हो लाइब्रेरी में हो... वह उसी तरफ बढ गया। लाइब्रेरी के एक कोने में... चारों तरफ सन्नाटा।

नैना एक किताब पढती नजर आती है...सुदर्शन चुपचाप जाकर कहता है।

ये किताब आपकी पसंद की है मैने भी पढ़ी है।

नैना – हैरानी और खुशी से। सच ? फिर तो आपको पता होगा कि इसके समये सुन्दर हिस्सा कौना है ?

सुदर्शन – धीरे से। वो हिस्सा जहाँ लेखक कहता है कि सच्चे रिश्ते आत्मा से बनते हैं, चेहरे से नहीं।

नैना का चेहरा लालिमा लिए मुस्कुराता है। कुछ कह नहीं पाती, लेकिन उसकी आँखें बोल उठती है।

धीरे–धीरे से दोनों का रिश्ता आकार लेने लगता है, सुदर्शन नैना को विचारों का सम्मान करता था। वो न तो किसी हीरो की तरह बोलता था न ही कोई नायक की तरह बनना चाहता था। वो सिर्फ नैना की बराबरी में चलना चाहता था। दोनों ने एक दूसरे से कोई वादा भी नहीं किया, सिर्फ साथ बढते हुए सपनों की समान गति थी सुदर्शन नैना की ओर देख रहा है, नैना देखती है और पूछती है।

क्या सोच रहे हो।

सुदर्शन धीरे से, मन कुछ कहना चाहता है, पर

नैना – मन में कोई बात है, तो कह दो हम तो दोनों दोस्त हैं...यदि नहीं कहना चाहो तो...

सुदर्शन – (जल्दी से बीच में बात को पूरा करते हुए) मैं चाहता हूँ आपको बताना....

नैना – सच कहूँ तो मैं तुमसे प्रेम नहीं कर रहा, मेरे मन में आपके लिए सम्मान है, मैं बस तुम्हारी राह का एक हिस्सा बनना चाहता हूँ।

नैना – सुदर्शन क्या ये सब...सच कह रहे हो...

सुदर्शन – मुझे पता है कि आपके विचार ओर आपकी सोच जैसा यहाँ किसी और मैं नहीं है और मैं ऐसे विचारों का पूरा सम्मान और सपोर्ट करता हूँ। सच कहूँ तो – आपकी आभा और आपका साहस और कुछ कर पाने की तमन्ना से मैं पूरी तरह परिचित हो गया हूँ।

नैना– मुस्कुरा कर चुपचाप सुन रही है। बस अपनी राह का हिस्सा बना लो, इसे मेरी ख्वाहिश समझो या फिर आत्मा की आवाज।

नैना सुदर्शन के नजदीक आकर खड़ी होती है दांया हाथ आगे बढाते हुए।

मुझे अच्छा भरोसा, तुम्हारा साथ सुदर्शन झेंपते हुए– हाथ आगे बढाता है दोनों के हाथ मिलते हैं, दोनों मुस्कुराते हैं।

नैना–आपको कुछ पता है, मैने अपना थीसिस बदल दिया है।

सुदर्शन–हाँ पता है, ''महिला अधिकार और सामाजिक भूमिका. ..'' यही ना ?

नैना – बस...अब मैने सोच लिया है। इसी पर रिसर्च पूरी करूँगी...

सुदर्शन– मुझे खुशी होगी...

*****

लेखक –

भावना थी मन की कोमल कली
एक सपना प्यार बना, आँखों में चमक जली,
क्या कोई समझेगा उसे उसकी बात ?
क्या प्यार बन पाएगा, जीवन भर का साथ
जानी थी उसने पीढा अपनी माँ की
समझा था मन और पिता के जज्बातों को
वर्षों तक चुप रही कुछ ना बोली माँ
ना जाने खौफ ने कितना जगाया रातों को

सूर्यकांत परिवार

आज छुट्टी का दिन था। सुदर्शन सुबह देर से जागा उसने देखा उसकी माँ, देविका त्रिपाठी उसे आवाज दे रही है। सूर्यकांत त्रिपाठी शहर के माने माने व्यापारी हैं और वह पूरी तरह अपने धर्म के प्रति गहरी निष्ठा बनी रहती है, धार्मिक कार्यक्रमों और धार्मिक कर्मकाण्ड, धार्मिक अनुष्ठान वह घर पर ही करते रहते हैं, और सामाजिक धार्मिक कार्यों में बढ़ चढ़कर दान देकर हमेशा प्रोत्साहित करते रहे हैं।

सुदर्शन उनका इकलौता पुत्र है और पुत्र की इच्छा से ही कैरियर चुनने की सहमति त्रिपाठी ने दी है। देविका त्रिपाठी धार्मिक प्रवृत्ति की महिला हैं, वह सुदर्शन को बहुत प्रेम और उसका ख्याल रखती है। आज जब पति–पत्नि दोनों बैठे थे तभी त्रिपाठी ने अपनी पत्नी को बताया कि सुदर्शन की पढ़ाई तो एक साल में पूरी हो जायेगी, क्यों ना कई लोगों ने शादी के लिए रिश्तों का जिक्र किया है। तो सुदर्शन की राय पूछकर फैसला लिया जाए। यही सोच सुदर्शन को बुलाने के लिए देविका आवाज देती है। सुदर्शन नीचे आता है, पास आकर बैठता है।

आज छुट्टी थी सोचा हम लोग बैठकर कुछ देर बात करेंगें। (सूर्यकांत कहता है।)

सुदर्शन नींद के झोंके में ही।

हाँ छुटटी है, इसलिए देर तक सोता रहा वरर्ना पूरे हफ्ते ना जाने फुर्सत ही नही मिल पाती।

देविका – मालूम है दिनरात पढ़ाई करता है, थीसिस है, हम समझते हैं इसलिए सोचते है और तुझे कुछ बोलते भी नहीं।

त्रिपाठी धीरे से, तुमको हमारी बिजनेस पसंद नहीं है, यदि तुम रिसर्च करना चाहते थे, कर लो, बस हम दोनों चाहते हैं कि तुम खुश रहो। परमात्मा की कृपा हमारे छोटे से परिवार पर बनी रहे ।

सुदर्शन – (पूछता है), बस एक महीने के बाद मेरा सपना पूरा हो जाएगा, आप दोनों खुश होंगे जब मैं युनिवर्सिटी में पढ़ाया करूँगा।

त्रिपाठी – क्यों नहीं, खुशी तो होगी ही।

देविका – बोलती है, हम तो सोच रहे थे, एक साल के बाद तुम्हारी इच्छा पूरी होगी, हमारी भी इच्छाऐं हैं, माँ–बाप होने के नाते कुछ।

सुदर्शन– पूछता है, आपने माँ कभी अपनी इच्छा बताई नहीं, मैं पूरी करूँगा कहिए क्या इच्छा है ? देविका त्रिपाठी को देखती है, त्रिपाठी कहता है?

सुदर्शन– बेटे हर माँ–बाप चाहते हैं कि बच्चे बड़े हो जाऐं और दुनियाँ को समझने लगे। तब...

सुदर्शन–तब क्या पापा।

देविका – समझाते हुए, तब उसकी शादी ब्याह माँ–बाप को करके परिवार में खुशियाँ और बढानी चाहिए। सच कहूँ तो मैं चाहती हूँ कि बहू घर में आए, मुझे इस घर की जिम्मेदारी से कुछ राहत मिले।

सुदर्शन– ओ समझा....मेरी शादी की बात, कहना चाहते हैं आप ? शादी... तो करनी ही होगी, सबको करनी होती है, जीवन के लिए और परिवार के लिए भी लेकिन इतनी भी जल्दी क्या है?

सूर्यकांत त्रिपाठी – बहुत से रिश्ते आ रहे हैं... सोचा तुम एक बार हां कहो मैं तो...आगे बात बढायेंगें।

सुदर्शन – गंभीर होकर, क्या आप मेरी शादी, मेरी मर्जी वगैरह या मेरी पसंद के वगैरह करेंगें।

सूर्यकांत त्रिपाठी– नहीं, इसलिए तो तुम्हें बताया, पहले तुम्हारी पसंद ही होगी।

सुदर्शन–पापा, हैं, मुझे शादी की जल्दी नहीं है, और यदि कोई लड़की मेरे मन को अच्छी लगी तो जरूर बताऊँगा।

सूर्यकांत त्रिपाठी– ये जो रिश्ते हैं, उनको देखो और अपनी पसंद लगे, और जो पसंद हो वही रिश्ता करेंगें।

सुदर्शन– थोड़ा वक्त चाहिए पापा...मुझे सोचने के समय दीजिए।

देविका–शादी में भी बहुत समय लगेगा, तुम हाँ कहो तो बात आगे बढाऐंगे बहुत पीछे पड़े हैं... वो सब।

सुदर्शन–मुझे कोई पसंद आ जाए तो ?

(सजग होकर पूछता है।)

देविका – तुम्हारी इच्छा को कब हमने नहीं माना!

सुदर्शन–ठीक है, बस थोड़ा वक्त दे दो, जब तक मेरा थिसिस का काम भी पूरा कर लूँगा, ज्यादा नहीं, कुछ महीने ...(कहते हुए खड़ा हो जाता है।) मैं जाता हूँ....

दोनों एक दूसरे को देखते हैं, सुदर्शन जा चुका है,

देविका – (धीरे से) यदि इसकी कोई पसंद की लड़की होगी तो ठीक ही होगी

सूर्यकांत त्रिपाठी– सोचते हुए, सुदर्शन समझदार है, एज्युकेटेड है... उसकी जो भी पसंद होगी ...अच्छी ही होगी।

*****

दर्द और छिपे आँसू

नैना के हाथ में डायरी है, वह कईबार उसे पढ़ चुकी है, आज उसका मन भर गया है, कई सवाल लगातार उसके मन में उठ रहे हैं, वह साहस जुटाकर कमरे से बाहर आकर देखती है कि उसके पिता मौहर सिंह बैठे अखबार पढ़ रहे हैं और बिन्दा रसोई में कुछ काम कर रही है। नैना रसोई में जाती है, बिन्दा देखकर पूछती है कि उसे कुछ चाहिए, नैना बिन्दा का हाथ पकड़कर कहती है।

माँ चलो आपसे कुछ बात करनी है।

बिन्दा यह सुनकर नैना के साथ उसी तरफ ले आती है जहाँ मौहर सिंह बैठा है।)

बिन्दा पूछती है, नैना, यहाँ क्यों ले आई, जो कहना था, वहीं कह देती ?

मौहर देखता है, पूछता है।

क्या बात हे बिन्दा ?

नैना – बैठो माँ ? (बिन्दा बैठ जाती है और एक ओर नैना बैठती है, नैना गंभीर है।)

नैना की गंभीरता देख–मौहर सिंह पूछता है, तुम्हारी तबियत ठीक है ना बेटा ?

नैना (सीधे पूछती है।) माँ–बाबा, ये क्या है... (डायरी दिखाती है।) क्यों छुपाया मुझसे आपने... आज तक ? मौहर सिंह यह

देख सन्न रह जाता है. बिन्दा डायरी तो देखती है, लेकिन समझ नहीं पाती कि क्या बात है ?

नैना बोलते जा रही है। आपने कभी नहीं बताया, कि आप ठाकुर घराने से हैं, और मेरी माँ बेडिनी है?

क्यों नहीं बताया मुझे ?

बिन्दा ये सुनकर परेशान सी हो जाती है, मौहर सिंह को जैसे डंक लग जाता है, शांत नैना की आँखों में आँसू आने लगते हैं... अपना चेहरा ढक लेती है।

दोनों हाथों से खुद को चुप करने की कोशिश करती है।

मौहर भारी कदमों से उठता है।

मौहर गंभीर और टूटा हुआ सा स्वर में

नैनाये सब तुझे बचाने के लिए छुपाया, तेरी माँ को समाज को बेडिनी कहा, पर मेरे लिए वो मेरी आत्मा थी। हाँ मैं ठाकुर घराने का था। पर जाति का अहंकार मुझमें तनिक भर भी नहीं था, वह सब छोड़कर, मैने तेरी माँ का हाथ थामा। क्योंकि सच्चा और आत्मा से किया प्रेम, किसी का मोहताज नहीं होता।

(मौहर की आवाज कांपती है। बिन्दा रोते–रोते नैना के पास आती है।)

बिन्दा–(टूटे स्वर में)

बिटिया, मैने तुझसे सब छुपाया क्योंकि मेरे मासूम दिल पर बोझ नहीं डाल सकती थी।

तेरे पापा ने मेरा हाथ पकड़ा और समाज की नजर में वो गुनाहगार हो गए।

हम ठाकुरों के घर नहीं लौटे ? क्योंकि वहाँ सिर्फ तिरस्कार मिलता है।

नैना, अपनी रोती माँ को देख, उसे ढांढस देती है, मौहर सिंह गंभीर स्वर में।

हमने शहर चुन लिया, उनसे दूर तकि तू सिर्फ हमारी बेटी, नैना कहलाए। न कि किसी जाति या प्रथा की छाया।

नैना फूट–फूट कर रो पड़ती है, कुछ क्षण सन्नाटा पसर जाता है, फिर कांपती आवाज में बोलती है। पर माँ–पापा...

आप दोनों ने इतने साल चुप रहकर कैसे बिता पाए ?

क्या कभी पछतावा नहीं हुआ ?

मौहर की आँखों में आँसू...स्वर में छुपाता है।

दर्द तो हुआ...बेटी।

पर पछतावा कभी नहीं हुआ।

अगर उस दिन जाति। समाज और दुनिया का डर चुन लेता।

तो शायद इंसान कहलाने लायक भी नहीं रहता। तेरी माँ मेरा गर्व है।

और तू हमारी सबसे बड़ी जीत।

(मौहर नैना को चेहरा दोनों हाथों में थाम लेता है बिन्दा आँचल से आँसू पोछती है, तीनों एक दूसरे के गले लगाते है।)

नैना (सिसकते हुए) दृढ़ता से। मैं आप दोनों की बेटी हूँ। इस सच पर मुझे शर्म नहीं आती है. गर्व है, यब अब मेरा बोझ नहीं. ..मेरा साहस है। मैं इसे कभी भी छिपाउंगी नहीं, जीऊँगी।

बिन्दा – मेरी पहिचान तो झूठ थी, इन्होंने मुझे एक पहिचान दी और तुमने हमारी खुशियाँ और जीने की आशा...

(तीनों एक दूसरे से गले लगे, एक दूसरे को पकड़े हुए हैं।)

लेखक – दीपक की लॉ, मन की शांति से, आँसुओं का धुल गया बोझ, प्रेम ने दिया एक आकार, बेटी ने थाम लिया साहस का सहकार।

दोपहर ढल रही है। पेड़ों के बीच से छनते हुए हल्की रौशनी जमीन को छू रही है। नैना अकेली खड़ी है, हाथों में कुछ किताब थामें। तभी सुदर्शन आता है उसके हलक कदम है, लेकिन आँखों में स्पष्टता है।

सुदर्शन – धीरे से, माफ करना, मैने ही बुलाया था, और मैं लेट आया हूँ।

नैना – कहाँ थे ?

सुदर्शन – लाइब्रेरी में...ये बुक लेनी थी।

नैना – में देख रही हूँ, तुम्हारे चेहरे पर कोई नया उजाला सा है, जैसे किसी बंद खिड़की से रौशनी उतर आई हो।

नैना – मुस्कुराते हुए, हाँ कुछ बातें थीं, लेकिन सच ने सामने आकर मुझे चोट दी उसी ने मुझे मजबूत भी बना दिया।

सुदर्शन–क्या हुआ? मैं समझा नहीं ...

नैना–सुदर्शन तुम सुनोगे तो समझ जाओगे, शायद मैं सिर्फ तुम्हें ये बता रही हूँ।

सुदर्शन– क्या मैं कोई बेगाना तो नहीं हूँ तुम्हारा दोस्त हूँ, सच्चा दोस्त।

नैना – देख रही है,,

सुदर्शन –हाँ नैना...सच कह रहा हूँ।

नैना, धीरे से, मेरे माता–पिता ने समाज से डर कर नहीं प्रेम के लिए जीया है जीवन, उनकी जिजीविका मेरी शक्ति है।

(साँस भरकर)

हाँ, मैं डरना नहीं चाहती, मेरा अतीत, बोझ बनकर अब मेरे साथ चलना भी चाहे तो चले, पर वह मुझे तोड़ नहीं सकेगा, मैं वही बनूँगी जो मैं हूँ,।

सुदर्शन – नैना, मैं समझ नहीं पाया, अतीत कौन सा अतीत।

नैना, कहती है, मेरे पिता ठाकुर घराने के थे, और मेरी माँ...... ऐ बेड़िनी। पिता ने समाज, घर, प्रतिष्ठा सबको ठुकरा कर.. एक इंसान के नाते. मेरी माँ का हाथ थामा, खुद को और माँ को नया जीवन दिया

सुदर्शन – (कहता है) इसमें बुरा क्या हुआ या बोझ क्या....एक इंसान ने दूसरे इंसान को समझा, जाना और अपना लिया...मैं कहूँ तो...ये....

हमको सोच बदलनी होगी। एक अच्छी बात है...जमाना बदल गया है।

नैना – पूछती है, याद आया, तुम मुझसे कुछ कहने वाले थे।

सुदर्शन – मेरे माता–पिता ने आज मुझसे विवाह की बात छेड़ी थी...लेकिन मैने कहा मेरी राह मेरी होगी...और मेरी राह...

नैना – रूक क्यों ये ? सुदर्शन...बोलो।

सुदर्शन – मेरी राह...तुमसे ही शुरू होती है।

नैना – क्या तुम...मुझे अपनाओं ? उस अतीत के साथ....जिसे चाहकर भी मैं बदल नहीं सकती।

सुदर्शन – धीरे से, पर दृढ स्वर में, तुम्हारा अतीत कोई छाया है, और छाया रौशनी को नहीं रोक सकती। तुम्हारी पहचान, तुम्हारी सोच है, तुम्हारा साहस है। मुझे तुम्हारा सच चाहिए... तुम्हारा मन चाहिए, तुम्हारा साथ चाहिए, बस इतना ही।

नैना – सोचती है, एक गंभीर सी मुस्कान, सुन लो, सुदर्शन, मैं तुम्हारे साथ हर राह पर चलूँगी, कठिन हो या सरल, पर ये यात्रा हम दोनों की होगी, हमारी होगी।

सुदर्शन – मेरी भी ये ही इच्छा है। हम जहाँ भी जिस राह पर जाए, साथ जाए। साथ ही चलें, अपनी मंजिल की ओर।

नैना – एक बात पूछूं, क्या ये सब जानकर तुम्हारे माता–पिता राजी होंगें।

सुदर्शन– (गंभीर होकर) मेरी जिन्दगी की राह कैसी हो और कोई हमसफर हो, ये मेरा फैसला है, मेरा फैसला मानना या ना मानना उन पर है, पर मेरा अटल है। कोई अब डिगा नहीं सकता क्योंकि मैं बस तुम्हारा साथी बनना चाहता हूँ। सब कुछ खोकर भी।

(सुदर्शन हाथ बढाता है। नैना उसका हाथ थाम लेती है।)

दूर मंदिर की घंटिया ंबज उठती है। हवा जैसे फूलों की खुशबू लेकर चल रही हो।

दोनों धीरे चले जा रहे हैं

सुदर्शन– चलते हुए कहता है, अब कोई राह हमें अलग नहीं कर पायेगी।

अब रास्ता कैसा भी हो, हम साथ रहेंगे।

नैना, सांस भरते हुए, हाँ, हर मोड़ पर तुम्हारे साथ रहूँगी सच ये है, भले ही मंजिल धुँधली क्यों ना हो, पर हम दोनों मिलकर उसे साफ करेंगे, और अपनी मंजिल तक चलते रहेंगे।

दूर आसमान में पक्षियों का झुण्ड उड़ता है, जैसे दोनों की नई यात्रा का संकते दे रहा हो।

लेखक

छुपे हुये पन्नों का राज जब खुला,

तो जिन्दगी की किताब रौशन हो गई

दो आत्माऐं, दो धड़कने

अब एक राग में बंध गई।

अभी तो हाथ जुड़े हैं

कल ये कदम भी जुड़ेंगे

सपनों की आहट कह रही है

नई दुनियां के द्वार खुलेंगे।

*****

विश्व विद्यालय प्रतियोगिता

युनिवर्सिटी लेबल पर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन होने वाला है, जिसका नोटिस सभी कॉलेजों में भेजा गया था। नैना और सुदर्शन के हेड ऑफ डिपार्टमेंट के प्रोफेसरों ने रिसर्च स्कालरों मं एक नाम ही प्रस्तावित किया, जो इस भाषण में एक नाम ही प्रस्तावित किया जो इस भाषण प्रतियोगिता में हिस्सा लेकर उनके कॉलेज का सम्मान दिला सकती थी। वह नाम था, नैना मौहर सिंह का। जब यह खबर कॉलेज में फैल गई तब नैना को तब पता चला, जब उनके सहपाठियों ने उसकी सफलता के लिए शुभकामनायें दी। नैना हैरान थी कि उससे अधिक अध्ययनशील और बुद्धिमान अन्य भी थे, लेकिन उसका नाम प्रस्ताव पर नैना ने खुद जाकर अपने गाइड का शुक्रिया किया। नैना वापस आ रही है, तभी सुदर्शन सामने से आकर (खुशी से) मुबारक हो नैना, मुझे अभी पता चला कि तुम।

नैना–खुश होकर, हाँ सच में, मुझे भी इसका कुछ पता नहीं था, लेकिन मैं खुश हूँ, इस प्रतियोगिता में एक हिस्सा बनकर ...तुम क्या सोचते हो?

सुदर्शन–सच में तुम डिजर्व करती हो नैना, और मुझे यकीन है, तुम ही इस कम्पटीशन की विनर होगी, शुरू से तुम एक अच्छी डिवेटर रही हो।

नैना–सुदर्शन के नजदीक आकर, हो सकता है, मैं उस समय अपनी भावनाओं को नहीं संभाल सकूं लेकिन जो सच है वह बोलूंगी जरूर...लोग समझे या नहीं।

सुदर्शन –समझाता है, जरूर...नैना सच तो हमेशा गहराई में रहता है, झूठ की परतों के नीचे, वक्त पर वह झूठ को खतम करके सामने आता ही है, सच तो सच ही होता है। सच कहने में कोई गिला या शिकवा क्यों?

नैना–खुशी से, टॉपिक भी तो मेरे मन के करीब हे...

सुदर्शन–जानता हूँ, तुम्हारे विचार और तुम्हें मैं अच्छी तरह समझता हूँ।

नैना–मैं घर जाकर माँ–पापा को बताती हूँ वो सुनकर खुश होंगे।

सुदर्शन –हाँ में सर हिलाते हुए मेरा तो मन बैचेन है, तुम्हार भाषण सुनने के लिए।

नैना – हंसते हुए, जब भी हम मिलते हैं, भाषण ही तो देती हूँ, क्या मन नहीं भरता ?

सुदर्शन–ये विचारों से भरने वाला मन है, जो भरता ही नहीं तुम कहती हो, मुझे सच मानों बहुत अच्छा लगता है...मैने सच्चा दोस्त खोजने में कोई गलती नहीं की।

नैना, हंसकर, धत्....इसमें गलती हुई है।

सुदर्शन–(अचानक आश्चर्य से) क्या ?

नैना – खोजने में देरी की।

दोनों हंसते हैं, और धीरे–धीरे बात करते हुए चले जाते है। नैना घर आकर बिन्दा को बताती है कि कैसे कॉलेज ने उसका नाम प्रस्तावित किया है। बिन्दा यह सुनकर खुश है।

*****

बिन्दा की खुशी

बिन्दा : माथा चुमते हुए, मुझे बड़ी खुशी मिलती है जब तुम खुश होती हो, भाषण में तुम्हारा नाम... इसलिए कि तुम मेरी बेटी हो, जो समझ सकी है, एक ऑरत की जिन्दगी को।

नैना – धीरे से, माँ, सच बताना तुमने क्यों कभी नहीं कुछ कहा, बस चुप ही रही।

बिन्दा – मैं चुप रही, लेकिन अब मुझमें शक्ति आ गई है, और ये शक्ति मुझे तुने दी है, मेरी आवाज भी तो तू ही है ना। नैना बिन्दा के गले लग जाती है। तुमने बड़ा त्याग किया है माँ अपने प्रेम और समाज के लिए, मैं जान सकती हूँ, कि तुम कितने दर्द छुपाये रहीं।

बिन्दा जो भाग में था, हुआ, उनके लिए तो मैं आग में भी साथ जा सकती हूँ, तेरे पापा ने मेरे जीवन के लिए सब त्यागा, फिर मैं क्यूँ ना साथ निभाऊँ। तभी मौहर सिंह की आवाज आती है, बिन्दा, बिन्दा और नैना को देखकर,

क्या बात है, माँ बेटी क्या बात कर रही है? भई हमने तो पोलिस्टर की नई मशीनें लगवा दी है। अब सूती कपड़ा नहीं. ..मैडम की (बिन्दा को देखते हुए) कंपनी में पोलिस्टर बनने लेगा। क्या सच में बहुत अच्छा किया, नैना कहती है पापा, आपने एक अच्छी खबर सुनाई और अब मैं एक अच्छी खबर बताती हूँ।

मौहर सिंह (बिन्दा की तरफ देखता है) सुनाओ, जल्दी सुनाओं.

नैना – युनिवर्सिटी लेवल के लेक्चर कम्पीटीशन में स्कॉलर्स की ओर से मुझे सिलेक्ट किया है। मौहर सिंह दौड़कर नैना का माथा चूमता है।

मुझे यकीन था, तुम हम दोनों की एक दिन ताकत बनोगी

नैना – आपकी बेटी हूँ ना, आपसे और माँ ने कभी कुछ बोला ही नहीं. चुप रहे।

मौहर सिंह–कहता है, मैं चुप रहा सहा भी समाज का दर्द लेकिन तुम्हारी माँ..जितना बहादूर नहीं था...मजबूती से मेरे साथ खड़ी रही और मुझे शक्ति देती रही। आज जो कुछ भी हूँ. वह बिन्दा के कारण ही है।

बिन्दा (धीरे से), मुझे डर तो था, लेकिन उसी दिन डर खतम हो गया जब साथ चलने लगे।

नैना – सॉरी पापा माँ...हम सभी सीरियस बातों पर आ गये।

मौहर सिंह– याद आया... मशीनों का स्विच बिन्दा तुम ऑन करोगी।

नैना – यस माँ.... करोगी ना।

बिन्दा धीरे से हाँ, मैं सर हिलाती है, मुस्कुराती हुई बिन्दा के पास नैना और मौहर जाकर तीनों एक दूसरे के हाथ पकड़ते है। नैना की आँखों में नई चमक और चेहरे पर लाली देख बिन्दा समझ नहीं सकी कि अचानक कुछ महीने में नैना में परिवर्तन आने लगे है। एक माँ और औरत के नाते अहसास था. यही सोच. वह नैना के कमरे की तरफ जाती है।

*****

एक डर

नैना कुछ किताबों के खोले, कुछ पढ़ रही हैं हल्की सी आहट सुन नैना पलटकर देखती है, बिन्दा आकर उसके पास बैठ जाती है।

नैना—पूछती है, क्या हुआ सोई नहीं।

बिन्दा – नींद नहीं आई. सोचा तुम्हारे पास जाकर बैठूँ... बैठ जाऊँ...और कुछ बात करूँ।

नैना– हाँ...हाँ (किताब एक तरफ रखती है।)

बिन्दा—बेटी. सच बताना. क्या तुम किसी से कुछ...महसूस करती हो ?

नैना – (हैरानी से) ये तुम क्या पूछ रही हो माँ ?

बिन्दा – माँ की आँखें किताबें नहीं पढ़ सकती लेकिन चेहरा पढ़ लेती ळै।

नैना – माँ – क्या तुम मेरी उड़ान से डरती हो।

बिन्दा – हाँ...मैं नहीं चाहती कि जो मैने सहा है, वह तुम कभी सहो जो मेरा गुजरा अतीत है।

पहली बार नैना ने माँ की आँखों में डर देखा।

नैना – मैं तुम्हारी बेटी हूँ... तुम चुप रही लेकिन मुझे न चुप रहना आता है, और न अपनी मंजिल तक जाने तक रूकना।

बिन्दा–तुम दुनियां को जानती हो, कैसी निर्दयी है...सब चुपचाप जुलम करती भी है और देखती भी है।

नैना – (समझाते हुए) जमाना बदल रहा है और वक्त लगेगा बदलने में इसे...किसी को तो आगे आना ही होगा। एक बात कहूँ माँ।

अब तुम बोलना सीखो जो बोलना चाहती हो. उसे बोल दो... सच है तो बोलोगी...सच तो सच ही रहता है।

बिन्दा – समझती हूँ...तेरे पापा ने मुझे जीने की शक्ति दी है और तूने मुझे एक अहसास कराया है, कि चुप रहकर दर्द दुख सहते रहना ठीक नहीं है। तुम जो भी करोगी चाहे जीवन साथी हो या जिन्दगी का लक्ष्य सोच समझकर करोगी। मुझे भरोसा है।

कहते हुए बाहर जाने गलती है।

नैना – माँ भूलना मत... कल पापा के ऑफिस जाना है.... नही तो मशीने यही लानी पड़ेगी...स्विच ऑन करने।

दोनों हंसती है।

*****

लेखक

जिन्दगी का दर्द सह लिया उसने

चाह नहीं उसकी और किसी को मिले

सदियों से जो बोझ सीने पर ढोती रही

अब कभी जरूर टूटेंगे ये सिलसिले

कलेजा चीर के देखो, तो एक चाह निकलेगी
बच्चों की खुशी के लिए बस आस निकलेगी
मजबूर असहाय क्यों न हो, माँ का दिल माँ का है
रिश्ता है अपनेपन का ऐसी करूणा त्याग कहाँ मिलेगी।

*****

प्रेम की नई कड़ी

सूर्यकांत त्रिपाठी और पत्नी देविका त्रिपाठी दोनों बातें कर रहे हैं, तभी सुदर्शन आता है,

सुदर्शन, बैठते हुए, पापा...आप दोनों के लिए एक इन्वीटेशन है।

सूर्यकांत त्रिपाठी– किस बात का ?

सुदर्शन – युनिवर्सिटी... पूरी बात बताता है और वह चाहता है कि वो दोनों उस प्रोग्राम में आऐं।

देविका – (सोचते हुए) हम क्या करेंगे वहा, हम क्या समझेंगें भाषण–वाषण।

सूर्यकांत त्रिपाठी – तुम भाषण देने वाले होते तो हम जरूर आते...बेटे का भाषण सुनने।

सुदर्शन– आपका वहाँ आना इसलिए जरूरी है क्योंकि....

दोनों सुदर्शन को देख रहे हैं, जो कहते–कहते रूक गया है आप उससे मिल सकोगे, जिसको मैं पसंद करता हूँ।

सूर्यकांत त्रिपाठी– (खुश होकर) घुमा फिराकर क्यों कह रहे हो... देखा देविका मैने कहा था ना...सुदर्शन जब भी किसी लड़की को पसंद करेगा....वह कोई जरूर...

देविका, पूछती है, कौन है तुम्हारी पसंद ?

सुदर्शन – मेरे साथ ही रिसर्च स्कॉलर है, पिता की टैक्सटाईल कम्पनी है, ठाकुर परिवार से है...(एक सांस में कहता है।) उसका नाम नैना है।

देविका – सुदर्शन से पूछती है, स्वभाव कैसा है उसका ?

सुदर्शन – धीरे से, उसकी सभी रेस्पेक्ट करते हैं, समझदार है और सादगी से रहना पसंद करती है।

सूर्यकांत त्रिपाठी – खुशी से, अच्छी तो है, जब तुमने पसंद की है तो सोच समझकर फैसला लिया होगा।

सुदर्शन –बस, आपको और कुछ नहीं जानना?

देविका – ओर क्या जानेंगें ...

सुदर्शन 'यही की लड़की कौन है ?

देविका – अभी तो बताया वही है ना ?

सुदर्शन – नहीं माँ. उसकी माँ बेड़िनी है ?

सूर्यकांत त्रिपाठी – जोर से, क्या ? बेड़िनी की बेटी है वह ? वही हे कॉलेज की लड़की, बेटा तुम जान रहे हो कौन है ?

सुदर्शन, धीरे से, मुझे सब पता है कि पिता ठाकुर और माँ बेड़िनी जाति की है, लेकिन मेरे लिए यह कोई उसकी पहचान नहीं है, उसका अतीत नहीं, उसकी आत्मा है, और मैं उसी से प्रेम करता हूँ, उसी को चाहता हूँ।

देविका – क्रोध से, सुदर्शन, तुम्हें होश है, कि एक ब्राहमण खानदान का बेटा बेड़िनी की बेटी से शादी करेगा ? लोग क्या कहेंगें? हमारी इज्जत, प्रतिष्ठा, सब मिटटी में मिल जायेगी।

सुदर्शन – (गहरी सांस लेकर) माँ इज्जत अगर दूसरो ंकी नजरों में जीने का नाम है तो वह पल पल बदलती है, लेकिन

इंसान की आत्मा और सच्चाई कभी नही बदलती। मैं किसी जाति से प्रेम नहीं करता, मैं इंसान से प्रेम करता हूँ...

देविका चिंतित सी सुन रही है,

सूर्यकांत त्रिपाठी– (समझाते हुए) हमने तुम्हें पढ़ाया लिखाया, तुम्हारी हर इच्छा पूरी की है आजतक, अच्छे संस्कार दिए, ताकि तुम समाज में नाम कमाओ, ओर तुम यही करोगे, हमे बदनाम करने के लिए... हमारी नाक नीची करने के लिए।

सुदर्शन – (धीरे से गहराई भरी बातें), सच है, आपने मुझे पढ़ाया, सही तो सिखाया कि सच्चाई से कभी समझौता मत करना, आज जब मैं सच्चाई पर खड़ा हूँ तो क्या आप मुझे रोकेगे।

अगर मेरी पसंद से आपकी प्रतिष्ठा टूटती है तो ये प्रतिष्ठा झूठी है।

देविका – कठोर होकर, सुदर्शन, क्या कहे जा रहा है ?

सूर्यकांत त्रिपाठी– (कठोर स्वर में) ये तेरी जिद है, बेटा, समाज ऐसे रिश्ते को कभी नहीं मानेगा।

सुदर्शन– (आँखों से चमक दृढ स्र में) पापा, अगर समाज किसी को सिर्फ उसके जन्म और जाति से तौलता है, तो ऐसे समाज की परवाह में नहीं करता, मेरे लिए जाति नहीं, इंसानियत बड़ी है। नैना को अपनाना ही मेरी इंसानियत है और यही मेरा धरम है।

एक सन्नाटा फैल जाता है, माता की आँखें भर आती हैं, पिता गहरी सोच में डूब जाते हैं। सुदर्शन–धीरे से कहता है।

सदर्शन – पापा आपने एक बार कहा था, इंसान को अपनी आँखों से देखो, दूसरों की बातों से नहीं। तो आप एक बार

बस एक बार...खुद देखिए, उसे खुद सुनिए, फिर निर्णय कीजिए।

मैं बस इतना कहना चाहता हूँ, कि आप उसकी बातें अपने कानों से सुनो उसके शब्द आपको छुयेंगे।

सूर्यकांत त्रिपाठी–हम क्यों जाएें ?

सुदर्शन – आप अपने नजरिए से सिर्फ जाति देख रहे हैं, मैं चाहता हूँ कि आप एक बार उसे एक आवाज की तरह सुनिए फिर खुद फैसला करना, कि क्या इंसानियत सच में छोटी हो सकती है।

देविका चुप है, पिता सोच में है, पिता की आँखों में कठोरता है, लेकिन भीतर कही हलचल है, मैं कह रहा हूँ पापा मम्मी, आप एक बार चलिए, और सुन लीजिए...उसे विचारों को।

फिर आप जो भी निर्णय लेंगें, उसे मान लूँगा।

कहते हुए सुदर्शन अपने कमरे की तरफ चला जाता है।

लेखक

इंसान अपने उन विचारों से अन्य विचारों पर सहमति नहीं दे पाता जो सत्य और मानवहित में है। वह अपने विचारों के अनुरूप ही अपनी दुनियां बसाए रखता है।

*****

नैना का भाषण

कॉलेज का सभागार भरा हुआ है। कई कॉलेजों के स्कॉलर, प्रोफेसर, लेक्चर्स के साथ विद्यार्थी है। सुदर्शन और नैना के माता–पिता भी आए हैं। प्रथम पंक्ति में बिन्दा और मौहर सिंह के साथ प्राचार्य व अन्य बैठे हैं। तीसरी पंक्ति में त्रिपाठी परिवार है। बिन्दा और मौहर की तरफ देखती है क्योंकि वह असहज सी है, पहली बार इतने बड़े कार्यक्रम में वह है। मौहर सिंह धीरे से बिन्दा के कान में कुछ कहता है बिन्दा हल्दी सी मुस्कुरा देती है।

मंच पर बड़े अक्षरों में लिखा है।

''महिला और समाज, इतिहास से वर्तमान तक'' एक व्यक्ति मंच पर आता है, माइक पकड़कर उद्घोष करता है।

आज इस भव्य और विचारों के संगम स्थान पर आप सभी का स्वागत है। जैसा कि जानते हैं, सभी कि सालभर तक कई प्रतियोगिताऐं आयोजित की गई हैं। प्रत्येक कॉलेज की ओर से आई प्रविष्ठियों को क्रमशः देखा गया और अंततः सभी में से एक प्रविष्ठ को चुना गया है। हमारे कॉलेज के लिए यह सम्मान है कि इस प्रतियोगिता का अंतिम पढाव यहाँ आयोजित हो रहा है...हमें खुशी है कि हमारे कॉलेज की ही एक स्कॉलर छात्रा नैना मौहर सिंह को आमंत्रित करता हूँ।

हॉल में दोनों ओर कैमरे, पत्रकार और मीडिया के संभावित लोग खड़े हैं। यह सुन बिन्दा के चेहरे पर खुशी और एक तेज

उभरता है। मौहर सिंह खुशी से तालियाँ बजा रहा है, तालियों की गड़गड़ाहट के बीच मंच पर नैना हल्की रंग की साड़ी पहने आती है। गर्व से एक नजर सामने देखती है उसकी आँखें बिन्दा और मौहर सिंह पर रूक जाती हैं, वह मुस्कुराती है हाथ जोड़कर सबको नमस्कार करती है।

बिन्दा यह देख खुश होती है, उसकी आँखें गीली हो जाती हैं, और मौहर सिंह की आँखो ंमें गर्व से चमक आ जाती है।

सुदर्शन नैना के आने के बाद अपनी माँ और पिता को धीरे से कहता है कि वह है नैना। नैना भी आँखों में दृढता है, पर होठों पर हल्का सा कंपन।

नैना माइक के पास आकर अपना भाषण शुरू करती है।

नैना (धीरे लेकिन साफ स्वर में) आदरणीय, गुरूजन, मेर साथियों, और इस सभा में उपस्थित सभी आत्माओं को मेरा प्रणाम। आज विषय है, महिला और समाज इतिहास से वर्तमान तक।

जब हम इतिहास के पन्नों को पलटते हैं तो हमें दो तस्वीरें मिलती हैं। पहली–वैदिक युग की। लगभग 1500–1000 ई.पू.) जहाँ गार्गी और मैमैयी जैसी विदुषियों ने पुरूषों के ज्ञान को चुनौती दी। जहाँ स्त्री देव पाठ कर सकती थी, यज्ञ कर सकती थी, और समाज में बराबरी से खड़ी हो सकती थी। और पुरूषों के समान ही माना जाता था। दूसरी तस्वीर, उत्तर वैदिक काल की 1000–500 ई. पू. जहाँ धीरे–धीरे नारी के अधिकार छीन लिए गये स्त्रियों की शिक्षा पर रोक लगने लगी, उपनयन संस्कार प्रथा भी धीरे–धीरे पुरूषों तक सीमित रह गई। इससे स्त्रियाँ सीमित रह गई। इससे स्त्रियों को घरेलू भूमिका तक रह गई विधवाओं को तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाने लगा।

पुर्नविवाह वर्जित हो गए। इसी युग में स्त्री मानव नहीं वस्तु या संपत्ति की तरह हो गयी।

कई सामाजिक मान्यताऐं ऐसी कि बाल विवाह और शिक्षा से बंचित करके जीवन में फैसले नहीं ले सकती थी।

इसी काल में सती प्रथा, जिसमें स्त्री को पति के साथ जीवित जला दिया जाता था।

विवाह को कन्यादान कहा गया यानि जैसे किसी वस्तु का दान किया जा रहा हो। आप हैरान होंगें कि जिन प्रथाओं का जन्म हुआ वह कितनी अमानवीय थी, आज सोचकर हृदय कांप जाता है।

देवदासी प्रथा– कम उम्र की लड़कियों को भगवान के नाम पर समर्पित कर दिया जाता था।

दासी प्रथा– जैसा कि मैने पहिले बताया। दासी रखैल, राजाओं, सामंतों और बड़े जमीदारों के यहाँ स्त्रियों को दासी के रूप में रखा जाता था। उनका उपयोग मनोरंजन और यौनसुख के लिए रखा जाता था।

बहूमूल्य प्रथा – कुछ जातियों में क्षेत्रों में पुरूष लड़के के परिवार को पैसा देकर विवाह करता था मानो स्त्री है वस्तु या सौदे की चीज मानी गयी।

देवदासी प्रथा

स्त्रियों को एक मानव नहीं वस्तु समझकर पुरूषों ने प्रथाओं के माध्यम से अपनी निजी वस्तु बना दिया था।

संक्षिप्त में तो उत्तर वैदिक काल में मध्यकालीन भारत एक स्त्रियों की स्थित निरंतर गिरती रही।

सभागार में बैठे सभी लोग चुपचाप गंभीर होकर नैना का भाषण सुन रहे हैं। बिन्दा, मौहर, त्रिपाठी परिवार और सुदर्शन सभी उत्सुकता से सुन रहे हैं। नैना कहती है, जो वेदों में विदुषी थी, वही बाद में मंदिरों की दासी, युद्ध में लूट जैसी वस्तु पति की चिता में अग्नि बनकर रह गई। नैना थोड़ा स्वर तेज करके कहती है, लेकिन सबसे बड़ा सवाल ये कि स्त्रियों के साथ इतना अमानवीय व्यवहार होने के बाद भी ऊँच नीच की अस्पृश्यता का विकास होता गया और पूरे मानव समाज को जातियों में बांट दिया जो आज तक आते–आते जातियों से उपजातियों में वांट दिये गए। क्यों स्त्री को देवी माना गया तो क्या केवल मंदिरों में मुर्तियों के लिए ? क्या असली जीवन में उसे एक वस्तु बना देना है। प्रथा और परंपरा के माध्यम से ? धर्म ने एक डर और नरक और स्वर्ग की बातों से इन प्रथाओं को और अधिक मजबूत बना दिया क्या ये ही मानवता और मानवीयता है कि जो जगत को जन्म देती है, जो माँ, बहिन पत्नी होती है, वह मात्र एक वस्तु है, उसका कोई जीवन मूल्य नहीं, क्या उसे अपने फैसले लेने का अधिकार नहीं मिलना चाहिए? सदियों से उसने अपने आँसूओं को बहा कर अपनी चुप हो खुद को जलाकर एक मौन और दर्द भरा जीवन जिया है। क्या हम अभी भी यहाँ तक आने के बाद भी स्त्री को वह दर्जा क्यों नहीं दे सकते जो वैदिक काल में था ?

मैं क्षमा चाहूँगी कि विषय है ही ऐसा कि मुझे आपके समक्ष सभी संदर्भों के साथ प्रस्तुत करना पड़ा है। लेकिन इतिहास को जाने बिना हम भविष्य को नहीं बना सकेंगे। वर्तमान तो हमें वही देगा जो हम अतीत को देख समझकर आगे भविष्य में ताने बाने बनायेंगें।

स्त्री की कोख को समाज उपजाऊ मानता है। और उसके आँसूओं को बेकार!

सभा में एक सन्नाटा, कुछ छात्र सन्न कुछ अध्यापक गहरी सोच में पत्रकारों के कैमरे लगातार भाषण को कवर कर रहे हैं नैना की आँखें भींग जाती हैं। वह कांपती आवाज में बोलती है। आज मैं चाहती हूँ कि आप सब उस माँ को देखें जिसने मुझे जन्म ही नहीं दिया स्वाभिमान दिया। माँ....माँ।

बिन्दा यह सुन एक पल कुछ समझ नहीं पाती, मौहर उठकर विन्दा का हाथ पकड़कर उठाता है। बिन्दा सहमी सी उठ खड़ी होती है।

माँ–कृपया मंच पर आइऐ।

बिन्दा धीरे–धीरे अपने पल्लू को संभाले मंच की तरफ बढती है। पूरा सभागार चुप और एकाग्र होकर देख रहा है। बिन्दा के कदम भारी हैं, चेहरा झुका हुआ। मानो हर कदम सदियों के बोझ से दबा हो। मंच पर बिन्दा आती है तभी सभागार में तालियाँ पूरा सभागार खड़े होकर बजाता है। पहली बार मंच पर खड़े होकर बिन्दा उपर देखती है। आँखों में आँसू बहते हैं, लेकिन अब उनमें लज्जा नहीं बल्कि शोख है।

नैना माँ का हाथ पकड़कर ऊँचे स्वर में।

आप जानेंगें कि मेरी माँ आज तक बेड़िनी नहीं, बल्कि माँ बनकर इस मंच पर खड़ी है और मैं आप सबसे कहना चाहती हूँ – जाति और परंपरा कभी भी इंसानियत से बड़ी नहीं हो सकती।

अगर इतिहास ने स्त्री को बांधा है तो भविष्य उसे आजाद करेगा।

सभा तालियों से गूँज उठता है, मौहर, त्रिपाठी और तालियाँ बजाकर बात का समर्थन करते हैं। सुदर्शन की आँखों में चमक है, जैसे उसे अपने संघर्ष का उत्तर मिल गया हो। नैना फिर धीरे से– मैं सिर्फ बेटी नहीं इंसान हूँ, मेरी माँ सिर्फ बेड़िनी नहीं. एक धड़कन है और समाज अगर बदलेगा, तो यही से बदलेगा... जब बेटियाँ बोलने लगेगी...

नैना की आवाज में एक संकल्प और एक बुलुंद सी आवाज... सदियों की पीढ़ा पहली बार भरे सभागार में आवाज लोहे सी गूँज रही थी। मेरा साहस, ये मेरी माँ है–जो खुद चुप रही लेकिन उसने मुझे स्वाभिमान से जीना सिखाया, खुद पीड़ा देखी. दर्द सहे लेकिन मुझे स्वतंत्र फैसले लेना सिखाया, उनका मौन ही मेरी आवाज है। नैना हाथ जोड़कर सभी को फिर एक बार प्रणाम करती है, बिन्दा भी हाथ जोड़े सभी ओर देख हाथों को माथे पर रख, सम्मान देती है, तालियाँ बजती रही, धीरे शांत होने लगी। नैना–बिन्दा का हाथ पकड़कर मंच से नीचे आने लगी तभी मौहर सिंह आकर दोनों को अपने गले लगाता है। फिर एक बार तालियाँ बजती हैं। सभी के चेहरों पर एक सोच की लकीर और जेहन में स्त्री का वह रूप, जो नैना ने अपने भाषण में जिक्र किया।

एक युवक नैना, मौहर, बिन्दा के पास आता है वह नैना को एक कार्ड देता है, और कहता है, मेरा नाम प्रसून है, मैं सोशल वन चैनल का संपादक हूँ...कृपया हो सके तो थोड़ा वक्त दीजियेगा। आपका भाषण अच्छा लगा।

नैना– कार्ड लेकर, जी थैंक्यू...जरूर।

*****

लेखक

जब अंधेरी रात में अपने पांव पसारे
तो एक नन्हा दीपक जगा
और उसकी लौ में
सिफ़ घर आँगन ही नहीं
युगों से जकड़ी बेडियाँ पिघलने लगी
आँसू जो अब तक बह ना सके
आज इतिहास की आवाज बन गए
और स्त्री का मौन
आत्मा का शंखनाद बनकर
भविष्य की राह रौशन कर गया

*****

गर्व के क्षण

नैना के भाषण और उसके साहस जो देखा, जो आत्म विश्वास, मौहर और बिन्दा ने पहली बार अपनी बेटी की जुबान से सुना वह गदगद थे।

घर आकर दोनों ने उसे गले लगाकर ढेरों आशीर्वाद देकर, विचारों पर अटल रहने और आगे बढ़कर समाज में जागरूकता फैलाने के लिए प्रेरित किया।

नैना खुश थी लेकिन उसके मन में भविष्य की राह बन रही थी।

नैना – आपका आशीर्वाद तो मुझे सदा ही मिलता ही रहा है, ये मेरी शक्ति तो आप दोनों हैं। जिसके कारण मैं अपने भीतर छिपे बोझ और एक तड़फन को सभी के बीच रख सकी।

मौहर सिंह पूछता है, तुमने आगे क्या सोचा है बेटी।

नैना – दृढता से। पापा अब मेरा एक ही लक्ष्य है कि मैं एक संस्था बनाकर ऐसी महिलाओं की सहायता करती रहूँ, जिनको समाज ने तरह–तरह की परंपरा और प्रथाओं के कारण दुख–दर्द झेले हैं। उन्हें मैं सम्मान का जीवन देना चाहती हूँ।

बिन्दा – धीरे से, नैना, मैंने कभी सोचा था कि मैं अपने दुःख को चिल्लाकर गाँव वालों के सामने कहूँ, लेकिन, जुबान जैसे वर्षों से चुप थी। चुप ही रही, लेकिन आज मुझे बड़ी खुशी मिली कि तुम मेरी वही जुबान बनकर, इस दुनियां के सामने

हो। मुझे गर्व ही नहीं गौरव का अहसास होता है कि तुम हमारी बेटी हो।

मौहर सिंह—गंभीर स्वर में, वह एक समय था कि चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता था मैं भी, बस चुप रहकर सभी के प्यार को दहलीज पर छोड़कर निकल पड़ा था, एक बेवस पंक्षी की तरह तब ना कोई मंजिल थी और न ही कोई रास्ता....

बिन्दा गंभीर सी मौहर को देख रही है, जैसे उसे अपना अतीत सामने आ गया हो।

नैना – चुपचाप... अपने पिता की गंभीर और गुजरे दर्द को सुन रही है।

मौहर कहे जा रहा है।

बस एक ताकत थी मेरे साथ तुम्हारी माँ... बस...शायद तुम सोचती होंगी... मैं क्यूँ चुप रहा। इसलिए कि... मैं उस समाज में जीना ही नहीं चाहता था जो प्रतिष्ठा, धन और झूठी शान की खातिर इंसान को ना समझे।

नैना आकर मौहर का हाथ पकड़ती है।

नैना – पापा...जो समयानुसार गुजर गया, वह अब मत याद करों, वह चला गया। आज मैं और माँ जो कुछ भी हैं आपकी हिम्मत और प्रेम का फल है।

तीनों के चेहरे पर धीरे—धीरे मुस्कान आने लगती है।

कॉलेज सभागार सें सभी लोग बाहर चले गये हैं सुदर्शन अपने पिता और माँ को साथ लेकर अपनी कार तक आता है।

सुदर्शन—पापा, आप दोनों चले जाऐंगें ? या मैं आपको छोड़ दूँ ?

देविका – सवाल पूछती है, क्या तू घर नहीं चलेगा ?

सुदर्शन–नहीं, मुझे अभी लाइब्रेरी जाना है कुछ किताबें लेकर आ जाऊँगा।

सूर्यकांत त्रिपाठी–हम चले जायेंगें।

सुदर्शन – ठीक है।

कहते हुए दोनों के चेहरों को पढ़ता है कि सभा से निकलने के बाद उनके चेहरों पर एक सोच ने डेरा डाल रखा है।

सूर्यकांत त्रिपाठी–पत्नी देविका को साथ लेकर, कार ड्राइव कर रहे है। दोनों ठीक सामने चुपचाप देख रहे हैं तभी सूर्यकांत त्रिपाठी देविका से पूछता है।

देविका – ये वही लड़की है जिसे सुदर्शन ने बताया था।

देविका – हाँ हाँ तो वहीं।

त्रिपाठी – उसके विचार क्या हमारे धर्मग्रंथों से भी बड़े नहीं हैं ? शायद वही लड़की है, जिसे हम जाति की बेडियों में बांधकर ठुकराने चले थे।

देविका – गंभीर स्वर में, सच कह रहे हो, जब वह माँ को लेकर स्टेज पर खड़ी थी, मुझै लगा जैसे मेरी आँखें खुल रही हैं। दरअसल उसकी दूरदर्शिता और विचार... सुदर्शन की पसंद. ..जमाने के साथ तो देखें, उसकी पसंद सही है।

*****

लेखक

कल तक जो लोग जाति और परंपरा की दीवारों के भीतर खुद को सुरक्षित मानते थे, वे आज नैना के शब्दों से हिल गये हैं। जब सत्य की आवाज उठती है तो केवल आँखों में नहीं, अंतरात्मा में उतरती है, त्रिपाठी दंपत्ति का मन परिवर्तन एक परिवार की कहानी नहीं बल्कि उस समाज की आहट है जो धीरे–धीरे जागने लगा है।

बंधनों की लकीरें, पत्थरों सी सख्त थी

पर सत्य की बूदें टपकी, टपकती रहीं

एक दिन वही बूंदे, सत्य बन गई।

और दीवार जो अटूट समझती थी

धीरे–धीरे रेत की तरह बिखरने लगी

सच की गूँज जब दिल से उठी,

तब किसी की आवाज नहीं,

वह समाज की आत्मा बन जाती है

बोल पड़ी नैना आज, फूट पड़ी सत्य पर खड़ी

न शर्म कोई न डर, बस एक आँधी सी अडी।

कह दी हर वो बात, जो सदियों से दबाई गयी

हर बेबस बेटी की आँखों से जो बहाई गयी

कहा उसने गोना ही नहीं, इज्जत की ख्वाहिश हूँ।

तालियाँ बज उठी तब, कई आँखें नम हो गई

कुछ सोच में पड़े, कुछ आत्माऐं शर्मिंदा हो गईं

बेटियों की आवाज बनी, जलता एक दीपक थी
लौ के आगे जिसकी मूरत वह भी एक बेटी थी

*****

पत्रकार का इंटरव्यू

नैना अभी कॉलेज पहुँची ही थी कि एक स्थानीय पत्रकार प्रशांत अपने एक साथी के साथ माइक आदि लेकर अपने अखबार के लिए हाथों में नोटबुक और आँखों में जिज्ञासा लिए आती नैना को देख नजदीक जाकर कहता है।

पत्रकार – नैना जी नमस्ते, कल आपका भाषण सुना, सुनकर दंग रह गया, आपको मैने अपना कार्ड दिया था। बस...हो सके कुछ बातें आपसे कर लें।

नैना देखती है कि पत्रकार को आकर नैना से बात करते देख कुछ सहपाटी ओर कॉलेज के छात्र कौतुहल वश आ जाते है।

नैना – यहाँ बात करें।

पत्रकार – हो सके तो, उधर पार्क में बैठकर आप चाहें तो।

नैना – ठीक है।

पत्रकार के साथ नैना क्लास के सामने ही बने छोटे पार्क में आकर बैठ जाते हैं। कुछ लड़के लड़कियाँ दूर से दोनों को देख रहे हैं।

पत्रकार –नैनाजी, आपने कल जो बात कहीं क्या आप बतायेंगी कि आप परंपरा और समाज को इतनी गहराई से कैसे देख पाती हैं, आपकी बातें सीधे मन को छूती हैं।

नैना – (मुस्कुराकर) धन्यवाद! दरअसल, मैने अपनी माँ को देखा है। वैदिक युग में स्त्रियों को यज्ञ करने, शास्त्र पढ़ने का

अधिकार था। वे सभाओं में वाद–विवाद करती थीं। पर उत्तरवैदिक काल आते–आते वही स्त्रियाँ पर्दे और बंधनों में कैद कर दी गयी। मेरी माँ भी उसी कड़ी का हिस्सा है। समाज की बनाई कैद का.....

पत्रकार – उत्सुक होकर, क्या आप मानती हैं कि आज भी वही परंपरा किसी नए रूप में जीवित हैं।

नैना – गंभीर होकर, हाँ, आज भी जाति और मान मर्यादा के नाम पर स्त्रियों की स्वतंत्रता छीनी जा रही हैं। माँ को बेड़िनी बनाकर प्रथा जिन्दा रखी गयी, वह भी उसी परंपरा की छाया है। मेरा मानना है कि समाज तभी बदलेगा, जब हम हर बेटी को बराबरी देंगें सिर्फ अधिकारों में नहीं, सम्मान में भी।

पत्रकार उनके हर शब्द को लिखते हुए ठहर जाता है उसके चेहरे पर विस्मय है।

पत्रकार – नैना जी, आपके विचार एक आंदोलन की शुरूआत जैसे है। मुझे लगता है कि आने वाले दिनों में आपकी आवाज हर तक जायेगी क्योंकि आपकी आवाज में कसक है, एक दर्द और शोषण है। क्या मैं ये सब छाप दूँ ?

नैना – दृढ स्वर में, क्यों नहीं? आवाज दबाने से खतम नही होती और सच की आवाज समाज तक पहुँचनी चाहिए।

पत्रकार – एक अंतिम प्रश्न, आपने अपनी माँ को स्टेज पर बुलाया कैसा लगा था उस वक्त आपको ?

नैना – गंभीरता से, वो मेरी माँ है, वह बेडिनी है और मैं उनकी बेटी, वह चुप रही, सहती रही, दर्द को आँसुओं से पिघलाती रही, लेकिन वही मेरी माँ, मेरा आत्मविश्वास और साहस है, वो बोल ना सकी उन्होंने सहा है, अपने जीवन में, देखा है अपने

आस–पास, पर आज मैं उनकी आवाज हूँ। वह संघर्ष ना कर सकी, बेडियों के कारण क्या हर बेटी इसी तरह बेडियों में जकड़ी रहेगी? क्या स्त्रियों को जीवन जीने तक का अधिकारनहीं मिलेगा ? अवश्य मिलेगा जब, ये आवाज आगे और बढेगी तब यही सब आवाजें मिलकर ऐसा सूर्य बन जायेगी, जिसकी तपिस से सारी बेड़ियाँ टूट जायेंगी...पिघल जायेंगी।

पत्रकार कृतज्ञ भाव से सिर झुकाता है।

आपका धन्यवाद।

पत्रकार द्वारा नैना का इंटरव्यू होने के बाद नैना को और भरोसा जाग जाता है, वह जानती है कि उसकी पीढ़ा, उसका विश्वास व्यर्थ नहीं जायेगा। उसके शब्द उसकी सोच, एक दिन समाज की धड़कन बनेगी।

*****

लेखक

एक पत्रकार की कलम ने देखा, वह सच था

ना नमक था न मसाला, बस आँसू और हक था

जब समाज की आँखें बंद हों तब एक सच्चा पत्रकार, उन्हें खोजने के लिए आवाज देता है, आगाह करता है, सवाल पूछता है आहट करता है, यही तो पत्रकार का फर्ज है जो समाज में एकता, समानता, अपनत्व, प्रेम ओर अधिकारों के लिए सदा सजग रहकर अपनी बात कहता है।

*****

ताजा खबर

सुबह के अखबार में नैना का दिया इंटरव्यू छपा और पूरे शहर के साथ अन्य कई प्रदेश के अखबारों में भी नैना के भाषणों पर अपनी राय देकर उसे समाज के हित में बताया, स्त्रियों की स्वतंत्रता के लिए उठ खड़ी हुई एक युवा की चर्चा की जो अपने विचारों से समाज को जाग्रह करना चाहती है, जो स्त्रियों के जीवन को समानता और सम्मान दिलाने की बात कहती है।

सूर्यकांत त्रिपाठी अखबार पढ़ रहे हैं, तभी देविका आकर बैठती है।

सूर्यकांत त्रिपाठी – आज के इस अखबार में नैना की बातें छपी हैं।

देविका – बातें तो अच्छी ही कहीं थी, औरत को भी सम्मान मिलना चाहिए? हजारों वर्षों से कई परंपरायें टूट रही हैं, क्यों नहीं ये भी टूटे ?

सूर्यकांत – तुम सही कह रही हो, यदि हम जातिवाद, परंपरा ही करते रहेंगे तो एक दूसरे को घृणा ही करते रहेंगें और विवाद होते रहेंगे।

देविका – एक बात पूछूं, हमने तो वंश देखा था, विचार नहीं।

सूर्यकांत – लड़की में वो संस्कार से हैं वश से नहीं। हमने वंश देखा, विचार नहीं।

देविका – धीरे से, आपको लगता है कि सुदर्शन की पसंद गलत है?

सूर्यकांत – गंभीर होकर, जब तक उसे देखा नहीं था, सुना नहीं, समझा नहीं, तब तो मन में था लेकिन अब नहीं।

देविका – कल सुदर्शन, ज्यादा बात नही कर रहा था।

सूर्यकांत – अपने मन की बात सुना दो उसे खुश हो जायेगा और हम भी। अखबार में नैना का छपा इंटरव्यू से मौहर सिंह और बिन्दा को बड़ी खुशी मिलती है, वो दोनों बिन्दा को एक अच्छी बेटी और एक शक्ति कहकर प्रेरणा देते हैं कि वह जो चाहती है, वह करें वह दोनों उसके साथ छाया की तरह से है।

विन्दा – धीरे से, नैना वो तुम्हारा दोस्त कभी नाम नहीं बताया तुमने।

मौहर सिंह – उत्सुक होकर, क्या, नैना तुम्हारा कोई दोस्त भी है।

नैना – जी पापा।

मौहर सिंह – कौन है क्या नाम है ?

नैना – मेरे साथ ही स्कॉलर है, नाम सुदर्शन है, अलग सा है, सबसे उसके विचार उसकी सोच।

मौहर सिंह– तभी तो तुम्हें वह पसंद है, क्योंकि तुम भी तो सबसे अलहदा हो।

बिन्दा – धीरे से, बेटी तुम पर हमें पूरा भरोसा है, जो भी करोगी, ठीक ही करोगी।

नैना – माँ, कैसी बातें करती हो, मैं दुनियां को समझती हूँ... आप चिंता ना करें।

बिन्दा – माँ हूँ ना...जो दर्द मैने सहे हैं, वो कहीं तुम ना सहो. बस।

नैना – माँ, ऐसी कोई बात नहीं है,।

मौहर सिंह – (सांसे लेते हुए), मुझे गर्व है, और भरोसा भी, एक दिन अपने मित्र को मिलवाओगी नहीं ...?

नैना – क्यो नहीं... जब आप कहें।

अगले दिन नैना कॉलेज जाने को तैयार हो रही है कि टेबल पर पड़े अखबार की एक खबर पर उसकी निगाह पड़ी। मुंशी पाढ़ा गाँव में तेरह वर्षीय लड़की का गोना कराया गया।

नैना झट से अखबार उठाती है, हाथ कांपने लगते हैं वह भागकर बिन्दा के पास आती है और अखबार सामने रखकर,

माँ, ये वही गाँव है ना

बिन्दा – क्या हुआ।

नैना – मुंशी पाढ़ा।

बिन्दा – झट से, मुंशी पाढ़ा... हाँ...वही गांव है।

नैना – वहीं परंपरा, वही गाँव, वही लोग अब एक बच्ची और।

बिन्दा सिहर जाती है, कुछ नहीं बोलती फिर नैना से कहती है।

अब बस बहुत हो गया...हम कल ही गाँव चलेगें।

चुप रहकर बेटी बचा नहीं सकी, अब बोलकर किसी और की बेटी को बचाना ही होगा।

*****

लेखक

वस्तु समझा स्त्री को और है वो कौन,
क्यों झुके वह, और क्यों रहे वह मौन
गाँव की बेटियाँ, चुप रह सिसक रही थी
वक्त आया आज वह चुप रह कुछ पूछ रही थी
कभी मन के अंधेरे, उजालों में बदल जाएगा
उठेगी एक चिंगारी तो अंधेरा मिट जाएगा
सुन खबर पीढ़ा बिन्दा की कई गुना हो गई
आँखें नम थी लेकिन शक्ति चौगनी हो गई

*****

गाँव वापसी

अगली सुबह होने तक बिन्दा को नींद नहीं आई, नैना जान गई थी कि उसकी माँ का साहस और दूसरों के दर्द को पहचान लिया है, वह सो न सकेगी, रातभर। नैना अपने कमरे से बाहर आई तो देखा बिन्दा तैयार होकर उसी को बुलाने आ रही है। नैना समझ गयी कि माँ को गाँव जल्दी पहुँचना है। वह भी झटपट तैयार हो गयी। दोनों जब जाने लगी तभी मौहर सिंह आता है और कहता है,

बिन्दा, मेरा मन कहता है कि मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा, तुम दोनां जा सकती हो तो मैं क्यों नहीं ? मैं पीछे क्यों हटूँ... तभी नैना समझाते हुए।

पापा, माँ की इच्छा वर्षों बाद ऐसी है जो वर्षो पहले ना हो सकी थी, मैं उनके साथ हूँ, माँ का दर्द मेरा संकल्प है, मैने तो बस सुना ही है कि ऐसा होता है, मैं जाकर देखना चाहती हूँ, कि ऐसे लोगों को, जो अपनी बेटियों की जिन्दगी का सौदा कर देते हैं।

मौहर सिंह – धीरे से, तो क्या मैं अपने पलायन और अपने फैसले की तुलना ही करूँ ?

बिन्दा – मौहर को समझाते हुए, ऐसा आप क्यों सोच रहे हैं. पच्चीस वर्षों से क्या क्या न बदला होगा, मुझे तो बस गोना की चिंता है, उसे रोकना है अब मेरा काम है अपने ही गाँव के बीच जाकर।

मौहर सिंह–मैं भी साथ खड़ा रह सकता हूँ ? बिन्दा।

नैना – पापा, प्लीज मुझे नहीं लगता कि अभी आपको वहाँ जाना ही चाहिए। यहाँ भी आपके पास कई काम हैं जो आप ही कर सकते हैं। नई मशीनें हैं, नये आर्डर हैं, आपको कुछ दिन इसे देखना होगा।

मौहर कुछ सोचता है, दोनों को देख रहा है,

नैना – पापा, मैं हूँ माँ के साथ, क्या आपको ऐसा लग रहा है कि, मैं वहाँ जाकर सब ढंग से डील नहीं कर पाऊँगी।

मौहर सिंह, ऐसा कुछ नहीं बेटी... ठीक है, मुझे तो तुम पर पूरा भरोसा ही है, बेटी।

लेखक

समय की धूलने कितने ही सच ढक लिए

वह माँ जिसने वर्षों दर्द छिपाऐ, आज उठ खड़ी हुई

जो सपनों को लेकर जीती रही, वह माँ की आवाज बनी

मौहर पलायनवादी नहीं बनना चाहता था, इस पल

नैना नहीं चाहती की पिता को वही दृश्य दर्द दें

शायद यही क्षण दृढ़ है, जब डर की जड़े टूटेंगी

और संकल्प का वृक्ष अंकुरित होगा।

*****

गाँव की डगर

ड्राइवर एक कार कच्चे रास्ते से ले जा रहा है, बिन्दा देख रही है कभी इधर तो कभी उधर कभी लहलहाते पेड़ ओर हरियाली से भरे बाग थे वह अब दिखाई नहीं दे रहे थे।

बिन्दा मुस्कुराती है

सब बदल गया

नैना – माँ परिवर्तन तो होता है, परिवर्तन ना होता तो इंसान इतना आगे कैसे विकास कर पाता।

(बिन्दा देखती है उसके दाहिने ओर वही पुराना बरगद का पेड़ नजर आता है, वह कुछ पल के लिए अतीत में खो जाना चाहती है, लेकिन खुद को संभालती है।)

बिन्दा – नैना को बताते हुए, बस हम आ ही गये हैं, एक ओर इशारा करती है, वो पेड़ों के पास मंदिर है वही गाँव है।

नैना समझ रही है कि इतने सालों के बाद उसकी माँ की कुछ यादें वापस आ गई होंगी वह बिन्दा से कहती है।

नैना – माँ, पहले कहाँ जाना है।

बिन्दा – सीधे गाँव ही चलेंगे।

कार गाँव के नजदीक पहुँचती है, गाँव के लोग कार को आता देखते हैं, और आती हुई कार को अपनी ओर आते देख एक

कौतुहल से इकठठे हो जाते हैं, इन्हीं के बीच बिसना भी है जो बूढा हो चुका है।

एक बुजुर्ग – बिसना...कौन आया है कुछ पता है?

बिसना – अभी तो नहीं पता राधो, ठाकुर सा होंगें, पन्द्रह साल हो गये...याद आई होगी सो आए होंगें।

कार रूकती है, कार से नैना उतरती है, सभी देख रहे हैं एक लड़की शहरी कपड़े पहने हैं, वह कुछ नहीं समझ पाते, एक दूसरे को प्रश्न करते नजर आ रहे हैं। नैना दरवाजा कार का खोलती है, ड्राइवर आकर दरवाजा खोलने में नैना का सहायता करता है, बिन्दा नीचे उतरती है, झक साफ और कलफवाली महंगी साड़ी और शॉल ओढे हैं. विश्ना की नजर बिन्दा पर जाती है, बिन्दा हाथ जोड़कर गाँव वालों को प्रणाम करती है, धीरे–धीरे विश्ना राधो को साथ लेकर आगे बढता है, जैसे जैसे वह नैना और बिन्दा के पास आता है वैसे–वैसे बिन्दा के चेहरे को देखकर सोचता है कि कहीं बिन्दा तो नहीं।

विश्ना – हाथ जोड़ते हुए, राम...राम।

बिन्दा – धीरे से, कैसे हो विश्ना काका ?

नैना भी प्रणाम करती है।

विश्ना – खुश हो जाता है, अब मैं जाना, तुम बिन्दा ही हो ?

बिन्दा – हाँ, ये मेरी बेटी।

विश्ना – परमात्मा सदा खुश रखें आओ...

बिन्दा – काका मैं यहाँ आई हूँ, बस अभी एक काम कर दो, पूरी पंचायत गाँव की चाहिए...यहीं।

विश्ना – (आश्चर्य से) पंचायत, मैं समझा नहीं...बिटिया।

नैना –(समझाते हुए) काका. आप बस पंचायत बुलवा लो, बाकी आप खुद जान जायेंगे।

विश्ना कुछ लोगों को इशारा करके चलता है, तभी विन्दा कहती है।

मुखिया को भी बुलवा लो।

विश्ना – अच्छा...अच्छा....

कुछ बुजुर्ग औरतें और आदमी आकर दोनों को एक झोपड़े में चारपाई पर बिठाते हैं।

बिन्दा और नैना एक बुजुर्ग महिला के साथ लेकर अपने घर जाती है, घर टूट चुका है, महिला बताती है कि उसकी माँ तीन साल पहले ही बीमारी से चल बसी और उसके नाना, एक बरस पहिले बहुत उम्र हो गयी थी. वो भी चल बसे...नैना – माँ बिन्दा को ढांढस बंधाती है।

बिन्दा – ये होना ही था... क्या करते... मजदूर रहकर पूरा जीवन ऐसा ही गुजर गया... हर गरीब मजदूर की जिन्दगी... दर्द से शुरू होती है और दर्द में ही खत्म हो जाती है।

नैना – (धीर बंधाती हुई) माँ. ये दुनियां का चक्र जहाँ, बड़ा छोटा गरीब, अमीर, दो खानों में बंट कर चलती रहती है।

तभी विश्ना और दो लोग आकर बताते हैं कि पंचायत बैठ रही है, दोनों उसी ओर चल पड़ती है।

लेखक,

जब गांव की बेटी, जो माँ है, बोल उठती है तभी से प्रथा की कब्र खुदने की तैयारी शुरू हो जाती है। जब तक जागृति नहीं आती तब तक सत्य तक का रास्ता तय ही नहीं होता। वर्षों की मानसिकता को शब्दों से ज्यादा अनेकों लोगों की राय ज्यादा असर करके, एक बदलाव ला देती है।

*****

चौपाल पर एक आवाज

पंचायत बैठी है, दोपहर का समय है, गाँव के सभी बुजुर्ग पुरूष और महिलाओं के साथ छोटे बच्चे और बच्चियाँ भी पहली बार इतनी भीड़ को देख चुपचाप देख रहे हैं।

दो बुजुर्ग विश्ना और मुखिया एक तरफ बैठे हैं तो सामने बड़े उंचे स्थान पर नैना और बिन्दा बैठी है।

एक लड़की उम्र लगभग पन्द्रह साल की है, आँखों के बीच डरी हुई सी बैठी है, कोई समझ पाए कि एक अधेड़, गरीब व्यक्ति बीच में आकर खड़ा होकर चिल्लाता है।

ई गोना तो हमारी रिवाज है, मुखिया जी, सबकी बेटियों का होता आया है, अब हमारी बिटिया का क्यों नहीं? इसे जीवनभर घर में रख कर कौन पालेगा ? हमें बताइ देऊ... आज हम का करें ?

मुखिया – (हाथ उठाकर कहता है), रिवाज से भागना, आसान नहीं है, सुना है, इसी गाँव की लड़की जो ठाकुर के जाल में फंस गयी... भाग गई थी उसको क्या आपत्ति हे, उनकी बात तो सुनिए पहिले।

नैना – (खड़ी होकर), मुखिया जी, आप कहने को तो झट से कह गए. क्या मुखिया के नाते कभी गोना रिवाज के आगे और कभी कुछ सोच पाए।

बिन्दा चुप बैठी सुन रही है, भीड़ में फुसफुसाहट होती है।

बिन्दा – (कहती है), मैं ही हूँ, मेरा नाम सभी जानते होंगें बिन्दा हूँ, मुझे मुंशी काका की पोती की तरह मैं भी इसी जाति की हूँ....(जिसकी तरफ वो इशारा करके कहती है) जो लड़की सामने है। मैने अपने छोटे से जीवन में कई सहेलियों का गौना होते देखा था और ये भी देखा कि जिनकी वह बेटियाँ थी वह फिर कभी वापस आपने माँ–बाप को नहीं देख सकी।

मुखिया और पूरा गाँव शांत होकर सुन रहा है,। बेटी को एक वस्तु समझकर गौना के नाम पर बेचा दिया। मुखिया जी, आप के सामने था यह सब। माँ–बाप गरीब थे लेकिन उनकी माँ की ममता और पिता का प्यार तो गरीब नहीं था। वो लड़कियाँ आज तक क्या कभी गाँव आई, मुझे पता नहीं ?

एक आदमी चिल्लाकर कहता है

ये तो भाग गई थी, जमींदार के लड़के के साथ, अब यहाँ क्या बोलने आई है।

विश्ना – सभी सुनो, बिन्दा शहर से आई है, आप सभी से बात करने, सब जानते हैं कि वह गाँव की लड़की ही थी लेकिन...

(तभी बिन्दा बीच में बोलती है।)

रूकिए विश्ना काका, मैं बताती हूँ, मैं भागी थी क्योंकि मैं एक चीज की तरह, बिकना नहीं चाहती थी, कुछ पैसों के लिए. मैं वस्तु नहीं एक जीती जागती लड़की थी और आज यहाँ आई हूँ, क्योंक अब यहाँ कोई भी लड़की किसी की बेटी नहीं बिके।

मुखिया– (उठकर कहता है) ये गौना है, पुरूखों का नियम है, ये आज का नहीं, हमारे बाप दादों से चली आ रही रस्म है इसे तोड़ोगे तो, समाज बिगड़ेगा, बिपदा आएगी, जीवन मुश्किल होगा।

नैना, कहती है। मुखिया जी, पहले तो औरतें सती भी हुआ करती थी, क्यों ये क्यों नहीं होती रसम, कई और भी प्रथाऐं हैं, देवदासी, वो क्यों बंद है मालूम है, क्योंकि अंग्रेजी राज ने ये सभी बंद करवा दी है। आपको जरा भी लड़कियों के जीवन की चिंता और सरकार का खौफ नहीं है।

मुखिया सुन चुप है, तभी बिन्दा फिर आँखों में आँसू और साहस लिए कहती हैं,

समाज तब बिगड़ा जब औरत की देह को वस्तु बना दिया गया, विपदा तभी आने लगी, जब कोई भी गैर अनजाना आकर पैसा देकर यहाँ की बेटियों को ले गया। जो वापस तक नहीं आया...

मुखिया जी, क्या वो जो लोग लड़कियाँ ले गए उनका पता ठिकाना आपको मालूम है...यदि है तो उनके माँ–बाप को उनकी लड़की से आज तक क्यों नहीं मिलवाया ओर यदि कुछ नहीं पता तो क्या आप इस रिवाज के ठेकेदार हैं केवल।

मुखिया – (कड़े शब्दों में), बिन्दा क्या बोले जा रही हो ।

नैना – सही बात की है, यदि आज मेरे पापा यहाँ होते तो आप इतनी ऊँची आवाज ही नहीं करते।

मुखिया चुप होकर सुन रहा है,

वो नहीं आए, हम देख रहे है ंकि आप जैसे लोग किस तरह से झूठे रिवाजों और अमानवीय प्रथा को बढ़ावा दे रहे हैं। बेटियों को माँ बाप ने बाजार में चढा दिया एक रिवाज, परंपरा के नाम पर। अब बिगड़ने का डर नहीं है, अब बदलने का वक्त है।

बिन्दा– (उँचे स्वर में), इस गाँव की बेटियों के आप गोना कराते हैं क्या आपने कभी अपनी किसी बेटी का गोना कराया?

मुखिया–विन्दा।

विन्दा–नहीं कराया, आपके चिल्लाने या नाराज होने से मुझ पर या मेरी बेटी पर कोई असर नही होगा। आपने इस गाँव के अनपढ़ गरीब लोगों को ये रिवाज अपनाने को कह दिया। आपने इसे खुद अपनाया है।

मुखिया बगले झांकने लगता है भीड़ आंगन में खुसुर–फुसुर कर रही है, बिन्दा फिर कहती है।

आपकी किताबों में आपकी कथाओं में देवी कहलाती है, फिर एक लड़की के शरीर को क्यों नीलाम करते हो ? बेटी से पीछा छुड़ाना चाहते हो, वो क्या आपकी औलाद नहीं है ? उसका कसूर इतना बस कि वह बेटी होकर पैदा हुई। क्या उसका मन उसकी इच्छा कुछ नहीं? उसका जीवन उसकी शिक्षा कुछ नहीं।

वह लड़की जो डरी सहमी थी उसकी आँखों में चमक आ जाती है, उसका पिता बार–बार अपनी बेटी की तरफ देख रहा है, कुछ आँखें बिन्दा की तरफ देख रहा है। कुछ औरतें बिन्दा की बात पर अपनी सहमति पर सर हिलाती है।

बिन्दा उठकर उस लड़की के पास आती है, उसका हाथ पकड़ती है और कहती है। ये लड़की आपकी नहीं है, किसी परंपरा या रिवाज की नहीं हैं, ये अपने सपनों की है, जो, वह रोज देखती है, उसे स्कूल चाहिए, सिन्दूर नहीं, किताब चाहिए कोई सौदा नहीं, जीवन खुशहाल चाहिए, अंधेरी गलियाँ या नरक नहीं ।

नैना – (धीरे से कहती है), पाप और पुण्य का फैसला तो ताकतवर ही करते आए हैं और कमजोर पर थोपते रहे हैं। पापी ने कभी अपने पाप को नहीं माना गरीब को इतना डरा दिया कि वह ठीक से जी भी नहीं पाएं। हमेशा ऐसी बातों को बढ़ावा दिया गया अनीति, अधर्म, हत्या और बल से, अब बेटियाँ बिकेंगी नहीं पढ़ेंगी।

विश्ना – बेटी, तुम नहीं कह रही हो, मैं बूढा हो गया लेकिन दुनियां बदल गई, हम वहीं खड़े हैं।

मुखिया– (धीमी आवाज में), पंचायत ने सब सुना अब इस पर विचार करेगी।

बिन्दा – (आखिरी प्रहार करते हुए), सोचिए जरूर, लेकिन याद रखिए हम चुप नही बैठेंगे, क्योकि कोई एक लड़की खड़ी हो जाए तो एक दिन पूरी पीढ़ी खड़ी हो जाएगी।

अन्य पंच – (हाथ जोड़कर), बेटी हमें इतना बता दिया जो कभी किसी ने नहीं बताया, अब फैसला तो वही होगा, जो सभी के लिए हित में होगा।

नैना – (जाते–जाते) मुखिया जी, सुन लीजिए ये रिवाजें, ये परंपरायें बनी बनाई ऐसी है कि कुछ लोग अपने फायदे के लिए इसे चलाऐं रखना चाहते हैं लेकिन यह याद रखिए कि समाज को खुद सुधारना ही ठीक होगा। सरकार न ही आए यहाँ तक तब तक सब ठीक ही है।

मुखिया यह सुन कहता है।

बेटी हमने सुन लिया सब, समझ भी लिया, पंचायत को फैसला तो करने दो।

बिन्दा हाथ जोड़कर सभी को नमस्कार करते हुए

मैं यहाँ आई हूँ, वापस जा रही हूँ लेकिन मेरा नाता है इस गाँव से, आती रहूँगी जो मुझसे होगा वह यहाँ की बेटियों के लिए करूँगी... चलो बेटी।

दोनों कार की तरफ बढ़ती हैं, बिश्ना, मुखिया व अन्य कार तक हाथ जोड़े आते हैं, विदा करते है।

लेखक,

कुछ लोग चिंतित थे कि यदि प्रथा चली ही नही ंतो उनको कौन पूछेगा ? भूखे मर जाऐंगे। एक सवाल खुद से किसी ने पूछा कि एक इंसान अपनी बेटी को पैसा लेकर बेचता तो क्या वह क्या नरक नहीं है ? जो मुखिया कई गाँवों में इस प्रथा से सम्मान और दान पाता था वे आंदोलन के खिलाफ उग्र होना चाहते रहे लेकिन सरकारी नियमों बिन्दा की चौकसी और गाँववालों के हृदय परिवर्तन से वे ऐसा कुछ नहीं कर सकेंगे। यह विद्रोह नहीं, न्याय की दस्तक थी, जो पूरे गाँव ने सुनी, देखी, हर गाँव वासी सोचने पर मजबूर था, परंपरा बिखरने को थी, विश्वास बनने लगा था, जज्बातों, प्रेम, अपनेपन के साथ एक भविष्य अच्छा हो बेटियों का भी।

*****

हृदय परिवर्तन

सुदर्शन के माता–पिता बैठक में बैठे हैं। दोनों के चेहरे पर गंभीरता है, पर भीतर एक संतोष भी है।

सूर्यकांत त्रिपाठी – (धीरे से), नैना बेड़िनी की बेटी है, यह सच है, लेकिन सबसे बड़ी बात उनके विचार, उसका साहस है। मैने अपनी आँखों से वह रौशनी देखी है जो किसी कुल की मर्यादा से भी ऊँची है।

देविका – (मुस्कुराते हुए पर आँखें भीगी हैं), हाँ...मैने भी देखा, वह औरों जैसी नहीं है। वह निर्भय है, निश्चल और सत्यता के करीब है। उसकी बातें, जैसे जीवन को नई दिशा देती है। अब मैंने मन बना लिया है वह मेरी बहू बनेगी।

पिता – (थोड़ा, गंभीर होकर), तो सुदर्शन को बता दें।?

देविका – सहज स्वर में कहती है, हाँ पर याद रखना, ये फैसला हमने दबाव में नहीं, दिल से लिया है।

तभी सुदर्शन बैठक की तरफ आता दिखाई देता है दोनों आवाज देकर बुलाते हैं। सुदर्शन आकर बैठता है।

सूर्यकांत त्रिपाठी– (कहता है), बेटा, हमें एक बात कहनी थी हमने सोचा कि हमें फैसला करना ही था, सो।

सुदर्शन – (गंभीर होकर), आप मेरे पेरेन्टस हैं, आप जो समझे फैसला करें, ये मैं पहले कह चुका था, आपका बेटा होने के नाते, मैं मान लूँगा।

देविका – (मुस्कुराकर), हमें नैना पसंद है।

सुदर्शन क्षणभर चुप है, फिर धीरे से

नैना वही नैना, जिसके विचारों की मैं कद्र करता हूँ, जिसको आपने देखा और सुना है।

देविका – (धीमें स्वर में), हाँ, बेटा वही नैना, चाहे लोग कहें कि वह बेड़िनी की बेटी है, पर हमारे लिए वह एक माँ और समाज की बेटी सी ही है वह तेरी जीवन संगिनी बने तो हमें खुशी भी होगी और गर्व भी।

सुदर्शन यह सब सुन खुश होता है, वह चुपचाप झुककर अपने माता–पिता के पैर छूता है, सूर्यकांत त्रिपाठी उठता है और कहता है

सूर्यकांत – सुदर्शन रूको दो मिनट....

देविका और सुदर्शन दोनों देखते ही थोड़ी देर बाद उसके पिता के हाथ में एक लिफाफा है, वह देते हुए। लो इसे नैना को देना, हम उसकी पहिचान के साथ ही स्वीकार करते हैं।

सुदर्शन खुश होकर लिफाफा लेकर चला जाता है।

लेखक,

दुनिया में अच्छे विचारों और अच्छे बोलों से ही इंसान का व्यक्तित्व और पहचान होती है जाति या वंश देखकर किसी की सही पहिचान कैसे की जा सकती है ?

*****

नैना अपनी सहपाठी से बात कर रही है तभी सुदर्शन आता है, नैना देख लेती है और अपनी बातें पूरी कर सुदर्शन से पूछती है।

नैना – आज जल्दी आ गये ?

सुदर्शन खुश है, उसका चेहरा खिला खिला सा है। खुश लग रहे हो, कुछ खास।

सुदर्शन –जी, आज मेरे जीवन का ये खास ही दिन है, जो जीवन भर भुल नहीं सकूँगा।

नैना (धीरे से) – हमसे शेयर नही करोगे।

सुदर्शन – नैना जी, मैं तो हर पल, सब कुछ आपके साथ ही शेयर करना चाहता हूँ और ये मुराद मेरी पूरी भी हो गयी।

नैना – आश्चर्य से, क्या... बताओ ना।

सुदर्शन लिफाफा नैना की ओर बढाता है, उत्सुकतावश नैना झट से लिफाफा खोलती है पढ़ती है। (तुम्हारे विचार ही तुम्हारी पहचान है, हमारे घर के दरवाजे हमेशा खुले हुए हैं। हम चाहते हैं कि तुम हमारे परिवार का हिस्सा बनो, हमें गर्व होगा।)

नैना पढ़कर कुछ पल आँखें बंदकर मन ही मन खुश होती है, सुदर्शन नैना को खुश देख मुस्कुराता है।

नैना – (लिफाफा अपनी किताब में रखते हुए), तो अब समझी. ..मैने पढ़ लिया है और संभाल कर रख लिया है।

सुदर्शन – (मुस्कुराते हुए), नैना जी, मेरे मम्मी पापा आपके पैरेंटस से मिलना चाहते हैं,

नैना – पापा तो फ्राइडे को घर पर ही रहते हैं।

सुदर्शन – ओ.के. समझ गया... दोनों एक दूसरे को देख मुस्कुराते है।

लेखक

विचारों का मेल ही जीवन का प्रारंभ है

दो मन, दो दिलों का एक आरंभ है

सफर में कोई संग भी ना हो तो क्या

बस दो ही हैं चाहे फिर कुछ हो तो क्या

मंजिल पानी है तो साथ–साथ जाएंगे

ठान ली है, अपनी मंजिल तक पहुँच जाऐंगे।

*****

बदलाव की बहार

सुदर्शन अपने माता–पिता के साथ आता है। मौहर सिंह और बिन्दा पहले से बैठे हैं। वातावरण गंभीर है। सूर्यकांत त्रिपाठी और देविका दोनों को प्रणाम करते हैं।

सूर्यकांत त्रिपाठी – (धीरे से), जी मैं सूर्यकांत, ये मेरी पत्नी देविका।

मौहर सिंह – (आदर से), स्वागत है, बैठिए।

बिन्दा – धीरे से, सुदर्शन, तुम मेरी बेटी के बारे में जानते हो।

सुदर्शन – (आदर से कहता है), जी हम साथ ही रिसर्च कर रहे हैं।

सूर्यकांत त्रिपाठी– हाथ जोड़ते हुए, हम यहाँ आपसे मिलने के साथ–साथ कहने आए हैं, हम किसी जाति दहेज या बंधन से नहीं, नैना बेटी का हाथ मांगने आए हैं।

कमरे में सन्नाटा, मौहर और बिन्दा एक दूसरे को देखते है। नैना की आँखों में वर्षों दबा बोझ आँसू बनकर आँखों में तैरने लगता है।

देविका – दोनों को देखकर, दोनों एक दूसरे को जानते हैं, समझते हैं हमारा बेटा है, उसकी चाह, उसकी खुशी, हमारी खुशी है। हमारी इच्छा है कि नैना हमारे घर की बहू बेटी बने।

बिन्दा – कंपकपाती स्वर में, आज तक सिर्फ लोगों के ताने की सुने हैं पहली बार सम्मान के शब्द सुने।

धीरे–धीरे चेहरे पर राहत और गर्व उतरता है।

मौहर सिंह–गहरी आवाज में, मैने सोचा भी न था कि ऐसा दिन देखूंगा... जिन्हे समाज ने दुत्कारा उनको अपने से अलग समझा, बेड़िनी कहकर अपमान किया, आज समाज के लोग, हमारी बेटी का हाथ मांगने आए हैं। ये हमारे लिए खुशी के साथ, यह बदलाव का एक कदम है।

सुदर्शन चुपचाप सुन रहा है।

बिन्दा – कहती है, अगर आपका इरादा है तो जान लीजिए, रिश्ता सिर्फ एक परिवार से नहीं जुड़ रहा, यह समाज की बेडियों को तोड़ने वाला रिश्ता होगा।

सूर्यकांत त्रिपाठी – धीरे से, हम जानते हैं कि समाज में यदि परिवर्तन लाना है तो बुराई, निदा, अपयश और अपमान को छोड़ आगे आना ही होगा। परिवर्तन तो तभी होगा, हम चाहते है। कि समाज में ऐसी बेडियाँ टूटें।

देविका – (सहानुभुति से) हम जानते हैं और इसी सोच के कारण हमने नैना को चुना है, हमें बहू नही घर की रौशनी चाहिए, और वह रौशनी नैना ही है।

तभी नैना एक ओर से आती है सुदर्शन देखता है वह गंभीर है। मौहर और बिन्दा नैना को देखकर।

मौहर सिंह – आओ नैना, देखो कौन आए हैं ?

नैना –हाथ जोड़कर सूर्यकांत त्रिपाठी, देविका को नमस्कार करती है।

धीरे से कांपती सी आवाज है।

माँ–मैने सब सुन लिया है, पापा देखो, जंजीरे तो टूटेगी एक दिन...

शायद कोई बेटी इस नाम से नहीं जानी जाएगी।

सूर्यकांत त्रिपाठी–सच कहा बेटा, जब हम बदलेगें तो समाज बदलेगा।

नैना दोनों की तरफ मुस्कुराती है, सुदर्शन धीरे से उठता है, नैना के पास जाता है, इन दोनों के माता–पिता कुछ दूरी पर हैं। दो कदम आगे बढाकर।

सुदर्शन – धीरे से, दृढ आवाज में

नैना आपके विचारों ने मुझे बदल दिया उन विचारों का ही फल है कि हम सभी यहाँ एक साथ बैठे हैं।

जो सपना आपने देखा है, मैं उसे अपना सपना बनाना चाहता हूँ। हर कदम पर साथ हूँ मैं आज मेरे माता–पिता यहाँ हैं, उन्होंने तुम्हें स्वीकार किया है। लेकिन पहले तो मैं ही स्वीकार किया है।

नैना चुप सुनती हुई सुदर्शन को देख रही, नैना की आँखें गीली हो गयी हैं। पर होठों पर हल्की मुस्कान भी है।

नैना–धीरे से, सुदर्शन मैं हमेशा सोचती थी कि बेड़िनी की बेटी होने का मतलब सिर्फ तिरस्कार, सिर्फ अपमान, पर आज पहली बार लगा है कि मेरे विचार मेरी पहचान बन सकती है। अर तुम सचमुच मेरे साथ हो। तो शायद यह समाज बदल सकता है।

सुदर्शन – एक कदम आगे बढकर, भावुक स्वर में, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ...नैना न सिर्फ आपके लिए. बल्कि उन सभी

बेटियों के लिए, जो आज भी अपने हिस्से के सपने दबाकर बैठी है।

नैना की आँखों में आँसू हैं, लेकिन होठों पर मुस्कान है, बिन्दा, मौहर, यह सब सुन उनके चेहरे पर गर्व झलकता है, सूर्यकांत त्रिपाठी और देविका दोनों खुश है।

लेखक,

कभी कभी दो इंसानो ंका मिलन सिर्फ निजी रिश्ते का बंधन नही होता,

बल्कि समाज की जकड़न को तोड़ने वाली चिंगारी भी बनता है

सुदर्शन नैना का साथ आना

सिर्फ एक प्रेम कहानी नहीं

ये उन पुरानी बेड़ियों को तोड़ने का उद्‌घोष है जो औरतों के केवल परंपरा का बोझ मानती रही, आज उनकी आँखों में आँसू गिरे सिर्फ व्यक्तिगत नही, बल्कि, पीढियों से दबे आँसुओं का बह जाना।

सदियों से जकड़ी जंजीर

आज पहली बार ढीली पड़ी

कलंक की राख में

आशा की कौंपल फूटी

जहाँ ताने थे

यहाँ अब रिश्ते खड़े हैं

चुप थी जहाँ
वहाँ अब आवाज ने ली
नैना कोई नाम नहीं
नैना एक संकल्प है
जो अंधेरों को चीरकर
सूरज की ओर बढ़ रही है

*****

प्रशासन की दस्तक

अखबारों में मुंशीपाढ़ा में होने वाले गोना रिवाज की खबरें लगातार छप रही थी, नैना का इंटरव्यू कई बार, कई अखबारों ने छापा और प्रशासन को इस ओर ध्यान देने के लिए कहा, आज मुंशीपाढ़ा की पगडंडियों पर हलचल थी ढोल–नगाड़े नहीं बल्कि प्रशासनिक गाड़ियों का शोर था। गाँव के बच्चे, बूढे, सभी जिज्ञासू होकर दौड़े, औरतें घर काम छोड़ उसी ओर दौड़ पड़ी।

गाँव के बीचों बीच जिलाधीश, महिला आयोग की अध्यक्ष और पुलिस अधिकारी पहुँच चुके थे। भीड़ जमा हो गयी, गाँव के सभी लोग दूर खड़े संकोच से देख रहे थे। मानो ये सब उनके लिए ऐसा पहली बार देखा जो था।

मुखिया और विश्ना भी आ गऐ थे।

जिलाधीश ने सभी को देखा और ऊँची आवाज में कहा, मुंशीपाढ़ा वालों आप सभी सुन लो जो यहाँ पुरानी प्रथा, गोना, चल रही है, जिससे छोटी–छोटी बच्चियों को आप लोग बेच देते हो आज से वह खत्म समझी जायेगी।

सभी यह सुन खुश भी होते हैं, और अचंभित भी।

किसी भी लड़की को अब बेचा नहीं जाएगा न ही उसकी जिन्दगी का सौदा होगा।

मुखिया सन्न और डर से कांपता हुआ, यह सरकार का आदेश है।

भाषण के बाद महिला आयोग की प्रतिनिधी आगे आकर औरतों की तरफ देखकर कहा

आपकी बेटियाँ अब स्कूल जायेंगी। यही मुंशीपाढा में जल्दी स्कूल खुलेगा, कलम उनके हाथ में होगी, बेडियां या जंजीरें नहीं।

भीड़ में कानाफुसी होने लगी, कुछ बुजुर्ग सिर झुकाए चुप खड़े रहे, औरतों ने पहली बार खुशी की बात सुनी जो राहत की सांसे ले रही थी जबकि मर्दों की आँखों में शर्म और हैरानी दोनों थी। एक माँ उस बच्ची को गले लगाकर रोने लगी जिसे बिन्दा, नैना के आने से गोना होने से बचा लिया था। वह बुदबुदाई।

मेरी बेटी अब बेची नहीं जायेगी वह पढेगी....पढेगी।

फिर जिलाधीश ने युवकों, बुजुर्गों की तरफ इशारा कर कहा–

यहाँ के लोग अब, सुन लें गाँव में ही मजदूरी का काम मिलेगा, सरकारी योजनाओं में पहला इन्हें हक दिया जायेगा।

पुलिस अधिकारी ताली बजाते हैं तो सभी तालियाँ बजाने लगते हैं, उन तालियों में सबसे ज्यादा कंपन बेड़नियों की आँखों से बहते आँसुओं का था, मुखिया विश्ना से डर कर कुछ कह नहीं पाए।

लेखक,

जैसे बंजर जमीं पर

पहली बारीश की बूँदें पड़ी
वैसे ही मुंशीपाढ़ा में
आज उम्मीद का अंकुर फूटा।
जैसे टूटी जंजीरे
धूप से लिपट जाऐं
वैसे ही बेड़नियों का दर्द
आज आसमान से मिल गया

*****

मुंशीपाढ़ा में प्रशासन द्वारा चेतावनी से उन लोगों को कान खड़े हो गये, जिनकी रोजी रोटी ऐसी ही परंपरा से चली आ रही थी, उन्हें कभी अहसास नहीं था कि अंग्रेज सरकार आते ही ऐसे आदेश देगी लेकिन फिर भी गरीब, मजलूम ओर अनपढ़ लोंगों को डर ओर धर्म के भम्रजाल में फंसाने के लिए सभी ने एक चाल चली। परंपरा को बचाने के लिए ऐसे परंपरावादी लोगों ने मिलकर गाँवों के बीच एक बाग में रात को मिलकर बातें करके फैसला लेने का प्लान बनाया।

पास के एक गाँव के बाग में चुपके से मशालें जलाई गयी, भीड़ में शहरी दलाल, परंपरावादी लोग जो खुद को धर्मात्मा कहते थे, कुछ ऐसे लोग जो गाँवों में गोना देवी, परंपरा और रिवाज के नाम पर कराते आए थे। सभी एक जगह इकठ्ठे थे।

एक आदमी – गहरी आवाज में, सुनो सब लोग, सरकार ने गोना, रिवाज सभी बंद करने का आदेश दिया है। ये गोना नहीं रहेगा, तो हम क्या करेंगें पीढियों से हम इन्हीं सबको

करके अपना घरबार चलाते रहे और सम्मान भी पाते रहे हैं। अब सरकार ने ये बंद कर दिया तो हम क्या करेंगें

दूसरा व्यक्ति जो दलाल है, (दांत पीसते हुए)

अरे मेरी बात सुनो, सरकार क्या जाने हमारी रिवाज, वो आए और औरतों को पढ़ाने–लिखाने की बातें करके चले गये, अगर ये सच हो गया, सब लड़कियाँ पढ़ने–लिखने लगी तो हमारी जीना मुश्किल हो जाएगा। कोई सवाल करें हम क्या जवाब देंगें। मुझे लगता है, कुछ करो सब वरना भूखा ही मरना पड़ेगा।

बीस पच्चीस लोग है सभी हाँ में हाँ मिलाते है।

एक बोला – हमें अपने बड़े बूढों की कसम हे ये गोना बंद नहीं होगा, चाहे सरकार कितने ही हुक्म निकाल दे।

दूसरा आदमी – हम ऐसा क्यों नहीं कर सकते, फिर गोना चालू रखें। होंगें जरूर, कभी सभी तो हमारी बातों से ही फैसला करते आए हैं। बस उनको देवी भगवान डर, पीढ़ी, रिवाज की याद दिलानी है। फिर देखते कौन रोक सकेगा ?

सभी लोग चुपचाप चर्चा तो कर रहे थे लेकिन उनको डर था सरकार का, जल्दी जल्दी बातें करके वे सभी रात के अंधेरे में अपने–अपने गतंव्य की ओर चले गये।

लेखक,

समाज में परिवर्तन केवल कानून से नहीं आता, बल्कि विरोध और संघर्ष से ही रास्ता साफ होता है। परंपरा का बोझ चाहें कितना भी भारी हो, जब समय और न्याय की आवाज उठती हो तो, वह परिवर्तन करके ही रहती है।

परंपरा की आग जलाकर जो लोग अपने स्वार्थ को सैंक रहे थे, अब वही आग उनके लिए काल बनेगी।

परंपरा की राख से अब नई सुबह का सूरज निकलेगा। घोड़ों और जीपों की आवाज से गाँवों के बीच सन्नाटा टूट गया, जिलाधीश और अन्य पुलिस अफसरों को इन्फार्मर ने बता दिया था, उसकी सूचना पर गाँव गाँव जाकर पुलिस ने मीटिंग करने वाले अधिकतर लोगों को घेर कर गिरफ्तार किया और हथकडियाँ कर दी।

जिलाधीश की सख्त आवाज सबने सुनी ये सरकार का कानून है, कोई उसे तोड़ेगा नहीं यदि तोड़ेगा तो जेल की सलाखें उसकी इंतजार कर रही है। कोई ऐसी पंरपरा, प्रथा नहीं चलेगी जो मानवता को खत्म करती हों।

पढना चाहिए सबको, सरकार सब कुछ करेगी, पढ़ने के लिए। चेतावनी है लास्ट, अंतिम सभी सुन लो।

गाँव के लोग और औरतें दूर खड़ी सब सुन रही थी वो लोग भी देखे, जो जीपों में हथकड़ी लगे पुलिस के पहरे में चुपचाप खड़े थे। उनकी आँखों में एक डर था, सरकार के कड़े कानून पालन के आदेश हो चुके थे।

लेखक,

जब पिजड़ें में जीता पंक्षी को खुला आसमान में उ़ड़ने का अवसर मिलता है, त बवह पंख खोलकर पूरी ताकत के साथ ऊँचें आसमान तक उड़कर, औरों की तरह खुद को खुश पाता है कैद नहीं।

*****

सफलता का नया मोड़

आज दोनों परिवारों में खुशी का दिन है। दो दिन पहले ही परिवरों ने अपनी आँखों से सुदर्शन और नैना को विद्यावाचस्पति (पी.एच.डी.) की डिग्री मिलती है। दोनों ही परिवार आज उसी खुशी में साथ बैठकर दोनों के विवाह की बात करने के विचार से मौहर सिंह के बंगले पर ही बैठे है। सुदर्शन और नैना पास के कमरे से आकर बैठते हैं। दीवार पर नैना की डिग्री लेते समय का फोटो लगा है।

बिन्दा (फोटो देखकर) हमारी मेहनत रंग लाई...नैना के पी.एच. डी. की डिग्री हाथ में है। अब कोई नफरत से नहीं देख सकेगा। एक सपना पूरा हुआ अब।

सूर्यकांत त्रिपाठी (मुस्कुराते हुए) सुदर्शन की भी मंशा पूरी हो गई। हमेशा कहता था आज पूरा हो गया। नैना तो समझदार ही नहीं एक सच्चा विचार है।

नैना (हल्की सी मुस्कान के साथ) लेकिन शहरी सोच) पापा–माँ, डिग्री तो मिल गई क्या ये ही आते हैं ? या यह शुरूआत है ?

थोड़ी देर बाद ही एक व्यक्ति एक लिफाफा लेकर आता है मौहर सिंह उठकर उससे लिफाफा लेकर –

युनिवर्सिटी का लेटर है, (खोलता है) और पढ़ता है।)

बेटी, तुम्हें विश्वविद्यालय से प्रोफेसर पद का प्रस्ताव आया है।

सुदर्शन खुश होता है, नैना इतनी खुश नहीं, सुदर्शन के माता–पिता बधाई देते हैं और बिन्दा खुश होकर कहती है।

अच्छी बात है, हमारी बेटी प्रोफेसर बनकर, बच्चों को पढायेगी, दुनिया समाज की बातें सिखायेगी, हमारी शान है, हमारी नैना।

देविका (नैना से बोलती है।) अब सोचने की क्या बात है नैना ? इतना बड़ा मौका है।

सुदर्शन – नैना तुम सच में इस लायक हो।

पत्र आने और प्रोफेसर के पद नैना को मिलने की खुशी में दोनों परिवार अन्य कोई चर्चा न कर सके और त्रिपाठी परिवार विदा लेकर अपने घर आ गया। ये सभी घर पहुँचे ही थे कि एक व्यक्ति आकर सुदर्शन को लिफाफा देता है।

सुदर्शन – (लिफाफा खोलकर पढ़ता है।) पापा–मम्मी मुझे भी कॉलेज में लेक्चरर बनने का प्रस्ताव आया है।

देविका (खुशी से) क्या....

सूर्यकांत त्रिपाठी – ये खुशी की बात है, अभी तो नैना के कदम भी घर में नहीं पड़े, उसने पहिले ही दोनों को इतना अच्छा ऑफर मिलना बहुत खुशी की बात है।

सुदर्शन खुशी से दोनों को पैर छूकर – पापा मैं अभी आया, नैना को ये बताने जाता हूँ।

सुदर्शन घर से सीधे नैना के घर जाकर बताता है।

नैना – वंडरफुल.... हम दोनों को युनिवर्सिटी प्रबंधन ने इस लायक समझा।

सुदर्शन – नैना, मैने देखा, तुम खुश नहीं हुई ? यह तो वही है, जिसकी हमने कल्पना की थी।

नैना – (धीमे स्वर में) हाँ...पर क्या केवल यही मेरी मंजिल है। सुदर्शन ? मैने जो दर्द देखा है, जो आवाजें अब भी दब रही है, क्या सिर्फ प्रोफेसर बनकर उन्हें बदल पाऊँगी ?

सुदर्शन – (नैना का हाथ थामते हुए) परिवर्तन सिर्फ सड़कों पर नहीं होता नैना। किताबों से, कक्षाओं से, विचारों से भी तो क्रांति उठती है। शायद यह डि ग्री और यह पद वही हथियार हैं जिनसे तुम और ऊँचा उड़ सको।

नैना (मुस्कुराकर पर दृढ़ता से) शायद, पर मुझे तय करना होगा कि पद मेरी सोच को बांधेगा या और बड़ा आकाश देगा।

सुदर्शन – ठीक है, तुम जैसा चाहो, मैं हर कदम पर साथ हूँ। छाया की तरह।

*****

लेखक

सफलता के शोर में भी अक्सर एक सन्नाटा पलता है। डिग्रीयाँ और प्रस्ताव हाथ में हो तब भी आत्मा पूछती है।

क्या यही अंतिम पढ़ाव है या बस अगला पढ़ाव। नैना की आँखों में यही प्रश्ना था।

क्या कुर्सी उसे बांधेगी या यही पंख बनकर उसे और ऊँचाई तक ले जाऐगी ? शायद जीवन का असली संघर्ष यही है। सपनों को नौकरी में बदलना या नौकरी को सपनों की सीढ़ी बना देना।

*****

आन्दोलन की गूँज

पुराने सोच और रूढ़िवादी विचारों को प्रोत्साहित करने वाले लोग अब फिर एक बार एक गाँव में गोना, रिवाज को बचाने की कोशिश करते है। पुलिस को खबर मिलती है और वह आकर हस्तक्षेप करती हैं। समझाती है, कुछ लोगों को सरकारी फरमान न माने वाले लोगों को जबरन भड़काने के जुर्म में गिरफ्तार कर लेती है।

यह खबर सुनकर सभी गाँव के लोग खुश होते हैं और सरकारी स्कूलों के कामों में और बड़ चढ़कर हिस्सा लेने लगते हैं।

गाँव–गाँव में बिन्दा की चर्चा और सरकारी फरमान से औरतों में एक शांति का संचार होने लगता है। स्कूल बनने और बच्चों को पढ़ाने का सपना और तीव्र होने लगता है। गाँव की बच्चियाँ अब पढ़ने की जिद करने लगी है। बुजुर्ग भी नई पीढ़ी के अच्छे भविष्य को विचार करने लगे हैं।

*****

लेखक

जब लोगों के मन में जीवन के प्रति ही भय का निर्माण कर दिया जाता है, तब भय से लोग इतने डरे रहते हैं कि आदी हो जाते हैं। अतीत और भविष्य और वर्तमान में कोई घटना

नहीं होती, पर मन पर हमेशा डर बना रहता है। जो उनके वर्तमान से भविष्य तक के लिए।

जब कि जो गुजर गया, वह अतीत याद क्यों करना। वर्तमान में डर क्यों ? मात्र भविष्य के लिए ? जो चिंता ऐसी व्यर्थ है।

*****

एक कदम और

विश्वविद्यालय का सभागार है, सभी विभागाध्यक्ष और फेकल्टी के सदस्य उपस्थित हैं। नैना आगे की पंक्ति में बैठी है। कई स्कॉलर एक ओर बैठे हैं, जिनके आगे सुदर्शन एवं दो अन्य स्कॉलर बैठे हैं। वातावरण औपचारिक है लेकिन उत्सुकता से भरा है।

वाइस चांसलर (गंभीर स्वर में) साथियों जैसा कि सभी को पता है कि इस वर्ष अन्य वर्षों की भाँति युनिवर्सिटी के कॉलेजों में ख्याति पाई है। कई क्षेत्र ऐसे हैं जिनमें विश्वविद्यालय को नई पहिचान मिली है, जो पूर्व की अपेक्षा अधिक सफलता रही है। आज मैं एक नाम विशेषरूप से लेना चाहता हूँ। डॉ नैना मौहर सिंह, इन्होंने अपने भाषणों और विचारों से प्रिंटिंग मीडिया ने उनको और विचारों का स्वागत किया। इससे हमारे विश्वविद्यालय का मान बढाया है, बल्कि समाज की सोचा को भी झकझोरा है।

सभागार में धीमी तालियाँ नैना झिझकते हुए उठती है।

वाइस चांसलर – (नैना की ओर देखते हुए) आपके विचारों में वह आग है जो अंधेरों को रौशनी में बदल सकती है। परंतु क्या हम केवल प्रशंसा तक ही सीमित रह जाऐं। क्या हमारे विश्वविद्यालय में महिलाओं की आवाज को सही आकार देने के लिए हम महिला फेकल्टी और छात्राओं को एक सुरक्षित स्थान और सहयोग देने की ठोस पहल कर सकते हैं ? डॉ

नैना मौहर सिंह आज कॉलेज की एक प्रोफेसर है–जो इनकी योग्यता और समक्षता का प्रमाण है।

कुछ विभाग प्रमुख सहमति में सिर हिलाते हैं एक दो चुप है।

एक विभागाध्यक्ष (हिचकिचाते हुए) यह विचार अच्छा है, लेकिन संसाधनों और परंपराओं की बाधाऐं भी है सर।

वाइस चांसलर (दृढ़ स्वर में) डॉ मेहरा– परंपराऐं तभी जीवित रहती हैं, ज बवे इंसान को आगे बढ़ाऐं यदि परंपरा बाधा बने तो शिक्षा के नाम पर उसे बदलना होगा।

डॉ नैना जैसी छात्राऐं हमारे विश्वविद्यालय की ताकत है और हमें उनकी ऊर्जा को दिशा देनी होगी।

सुदर्शन एवं अन्य सभी यह सुनकर तालियाँ बजाते है। सभागार में जोरदार तालियाँ गूँजती हैं। नैना के चेहरे पर एक चमक है, जो मुस्कान में दिख रही है। नैना धीरे से उठकर दृढता से

आदरणीय कुलपति महोदय, और सभी प्राध्यापकगण, मेरे लिए यह क्षण केवल सम्मान नहीं है, बल्कि जिम्मेदारी का भी है। मैने जब होश संभाला तभी से विचारों को समझना शुरू कर दिया था, मेरे पास कोई मंच नहीं था। मैने दर्द, आँसू, तड़पन को देखा है, समझा और मेरे विचारों को नई शक्ति मिली और ये ही विचार मैने जहाँ भी कुछ कहने को मिला, कह दिए मुझे लगता है कि इन विचारों को हर कोई इंसान मानेगा जो इंसानियत की परिभाषा को जानता होगा।

आज जब आप सबके सामने खड़ी हूँ तो महसूस कर रही हूँ कि मेरी नही, इस हर लड़की की आवाज यहाँ खड़ी है। जिसे बोलने का हक नहीं मिला।

कुछ महिला लेक्चरर व फेकल्टी से जुड़े लोगों की आँखें भर आती हैं। माहौल संवेदनशील हो जाता है। नैना फिर कहती है।

यदि विश्वविद्यालय हमें हमारे विचारों को सही स्थान देकर उसे एक स्थान देता है, जहाँ विचारों को बिना डर के बोला जा सके और गढ़ा जा सकें तो मुझे यकीन है, हम समाज की जड़ता को बदल सकेंगे। क्योंकि शिक्षा तभी सार्थक होगी जब वह मौन को वाणी और कमजोर को ताकत दें।

वाइस चांसलर गर्व से सिर हिलाते हैं, अब फिर एक बार तालियाँ बजने लगती हैं। सभी के चेहरों पर एक विचार की छाया झूम रही है।

*****

लेखक

जब आवाजें दीवारों से टकराकर लौट आती हैं तो दीवारें ऊँची लगती हैं। जिस दिन आवाज दीवार को चीरकर बाहर निकलती है उसी समय दीवार की नींव हिलने लगती है। शायद शिक्षा का असली सौंदर्य है, जहाँ विचार किताबों से निकलकर इंसानों की आँखों की चमक बन जाऐं।

*****

विश्वविद्यालय द्वारा कॉलेज कैम्पस में ही एक ऑफिस अलॉट होता है, जिसके उद्घाटन के लिए मान्यवर और प्राध्यापकों के साथ कॉलेज की छात्रायें और महिला कर्मचारी भी शामिल हुऐ।

इस दिन नैना और सुदर्शन के परिवार भी मौजूद रहे। मन से बच्चों के भविष्य के लिए आशीर्वाद दिया।

ऑफिस के बाहर बोर्ड लगाया गया, जिस पर लिखा था – ''महिला संरक्षण एवं अधिकार केन्द्र'' नीचे डॉ. नैना मौहर सिंह एवं प्राधानाचार्य के साथ सुदर्शन त्रिपाठी का भी नाम था।

नैना खुश थी कि अब वह यहाँ से अपने कार्यों के सफर को सुचारू और तन्मयता से करेगी। कार्यालय खुल जाने की खबर, स्थानीय और कुछ बड़े प्रिंट मीडिया द्वारा कवर की गई ताकि अपने अधिकार, संरक्षरण और शोषण के विरूद्ध इस संस्था की सहायत और सहयोग प्राप्त कर सकें।

*****

सम्मान की पहली सीढ़ी

सुदर्शन और नैना, कार्यालय के कामों, रोज आने वाली शिकायतों के साथ गाँव दूर दराज से भी शिकायतें आने लगी थी।

नैना और बिन्दा को हर रोज कोई ना कोई संस्था निमंत्रण देकर उनको कार्यक्रम में उपस्थित रहकर विचार व्यक्त करने का आग्रह किया जाता।

एक सुबह सुदर्शन नैना को बैठा देख रहा जो कुछ कागज पढ़ रही है। अचानक नैना देखती है।

नैना – क्या...देख रहे हो ,

सुदर्शन – कुछ नहीं...तुम्हें देखकर मुझे सदा ही लगातार काम करने की प्रेरणा जो मिलती है।

नैना – (मुस्कुराकर) हाँ...काम तो करना ही है, अब एक ही लक्ष्य है, जिसे पूरा करना है। याद आया पापा कह रहे थे ... आपको पिताजी ने आकर ...जल्द विवाह करने की बात कही है।

सुदर्शन – (धीरे से) हर माँ–बाप तो ऐसे ही सोचते हैं वो तो चाहते हैं कि लेकिन...

नैना – लेकिन क्या ?

सुदर्शन – मैने ही समझाया और बताया कि अभी जिस काम को लेकर हम दोनों आगे बढ रहे हैं। एक आधार बन जाने के बाद कुछ सोच पाऐंगे।

नैना – (मुस्कुराकर) मुझे, ऐसा कोई एतराज नहीं है...बस.... कुछ दिन बाद फैसला तो करना ही होगा।

सुदर्शन – नैना...मैं जानता हूँ कि तुम कैसे समय के साथ खुद को ढाल लेती हो। तब समय तुम्हारे साथ ही चल पड़ता है।

नैना – जब मन की शाक्ति–साहस और दृढ़ संकल्प बन जाता है तो वक्त भी साथ देने लग जाता है।

तभी एक व्यक्ति आकर कुछ लिफाफे नैना के टेबल पर रखकर चला जाता है।

सुदर्शन पास आकर आई हुई सभी डाक को पढ़ते हैं उन्ही में एक लिफाफा जिलाधीश का होता है।

*****

लेखक

सच्चे प्रेम को मंजिल तभी मिलती है जब समाज उसे राह देता है। आवाज जब सच्चाई से जनम ले तो पत्थर दिल भी पिघल जाते हैं। एक सच्ची आवाज, हजारों लाखों तक पहुँचकर अपना असर छोड़ती है।

*****

जिला स्तर पर सम्मान

शहर के हर परिवार में बिन्दा और नैना के चर्चे होने लगे, जो बुद्धिजीवी और समाज सेवी संस्थाऐं थी उन्होंने नैना के विचारों का खुलकर समर्थन ही नहीं किया, अपने विचारों से समाज में जागरूकता लाने के लिए मंच भी दिया।

प्रशासन के द्वारा भी गरीब, शोषित और दबे कुचले लोगों के उत्थान के लिए कई योजाऐं लागू की जाने लगी। देश में आजादी के बाद बनी प्रथम केन्द्रीय सरकार द्वारा योजनाओं को पूरे देश में लागू करने उनका क्रियान्वयन करने के लिए आदेश जारी किए गये।

नए भारत का बदलाव और समता, समानता और बंधुत्व के साथ देश और देशवासियों के जीवन की तरक्की के लिए हर जिला, गांव, तहसील स्तर पर प्रशासन चुस्ती से काम करने लगा था।

प्रशासन को कई संगठनों द्वारा जनता के हितकारक कार्यों की जानकारी भी मुहैया कराई जाने लगी। इन्हीं कार्यों में, नैना की संस्था का भी बड़ा योगदान बनता जा रहा था।

नैना सुदर्शन की टीम अब शिकायतें, फरियाद आने पर मौके पर जाकर उनकी शिकायतों का निपटारा अपने विचारों से करती, जो मानव जीवन के लिए थे। जहाँ–जहाँ ये टीम पहुँची, लोगों ने दिल खोलकर स्वागत किया।

कईबार कुछ लोगों ने विरोध भी किया लेकर जनता की मांग और स्त्रियों की आवाज के समक्ष वे टिक ना सके। या तो चुप हो गए या पुलिस के दबाव और सरकारी आदेशों से डरकर नैना के कारवां को रोकने में असफल रहे।

बिन्दा और नैना की ख्याति इतनी हो गई कि नैना के घर पर स्त्रियाँ और पुरूष आकर अपनी दर्द और दुख बयां करने लगे।

आने वाले हर किसी का पूरा ख्याल रखती बिन्दा, उन्हें साहस देती और खुद की शक्ति को समझने के लिए प्रोत्साहित करती।

वह खास दिन जब जिला मुख्यालय के सभागार में जिले से वरिष्ठ अधिकारियों और हजार स्त्री पुरूषों से भरे सभागार में बिन्दा और नैना को मानव सेवा के लिए सम्मानित किया जाना था। दूर गाँव से कई पुरूष और स्त्रियाँ भी दोनों को सुनने, समझने के लिए आ गई थी। कार्यक्रम के प्रारम्भ में जिलाधीश ने मंच पर आकर कहा –

आज हम उन दो साहसी महिलाओं का सम्मान कर रहे हैं, जिन्होंने परंपराओं की जंजीर तोड़कर बेटियों के लिए नई राह बनाई हैं श्रीमती बिन्दा और उनकी बेटी डॉ नैना।

तालियों की गड़गडाहट

बिन्दा की आँखों में आँसू हैं, नैना माँ का हाथ थामें हुए (धीरे से) बेटी ये सम्मान मेरे लिए नहीं तुम्हारे लिए है। मेरे आंसुओं का जो बोझ था तुमने आवाज दी।

नैना–(धीरे से बिन्छा से कहती है।) नहीं माँ, मैं हमारी दोनों की साझा जीत है, आँसू और समाज जब मिलते हैं तभी बदलाव आता है।

बिन्दा और नैना मंच पर आती हैं, मौहर सुदर्शन और सूर्यकांत इस दृश्य को देख खुशी से भावुक हो उठते है।

दोनों के मंच पर आते ही उपस्थित पत्रकारों के कैमरे उस क्षण को कैद करने के लिए तैयार हो जाते हैं जिसका सभी को इंतजार है।

जिलाधीश अपने हाथों से, जिलाधीश ''मानवता पुरस्कार'' बिन्दा को देते हैं, तालियों की गड़गड़ाहट होती रहती है। एक पुरूस्कार नैना को देते हैं। दोनों माँ बेटी मानवता पुरूस्कार लेकर मंच पर खड़ी है। कैमरे उनको कैद कर रहे हैं। नैना को माइक पर कुछ कहने क`लिए जिलाधीश आग्रह करता है। नैना—माँ की तरफ देखती है और फिर अपने पिता और सुदर्शन को भारी भीड़ लेकिन एकदम शांत वातावरण सभी की निगाहें नैना पर हैं।

नैना (मंच से अपना भाषण शुरू करती है।) माननीय जिलाधीश महोदय, उपस्थित सभी अधिकारीगण, मान्यवर अतिथि और मेरे सभी भाई बहनें।

यह सम्मान मेरा नहीं है, यह उन सभी माँओं की आँखों के आँसुओं का सम्मान है, जिन्हें गोना जैसी कुरीति ने लहू—लुहान किया। यह सम्मान उन बेटियों का है, जिनके सपने दहलीज पार करने से पहिले ही कुचल दिये गऐ। (थोड़ा रूककर) मैं आज यहाँ खड़ी हूँ, क्योंकि मेरी माँ ने अपनी चुप्पी को तोड़ा और मैने अपनी आवाज से सच कहने की हिम्मत की। आज अगर शिक्षा, बराबरी और इज्जत मिल रही है, तो यह कानून की वजह से नहीं, बल्कि उस साहस की वजह से है, जो समाज की जड़ों में बदलाव की लहर ला रहा है।

मैं एक बेटी होकर वचन देती हूँ कि मेरी लड़ाई खत्म नहीं होगी हर गाँव, हर घर की बेटी को पढ़ाई और आजादी मिले। यही मेरी सबसे बड़ी जीत होगी। मानवता की जीत होगी। इंसानियत की जीत होगी।

(नैना के भाषण के बाद अधिकारी उठकर तालियों से नैना के विचारों का समर्थन करते हैं। बिन्दा को गर्व से अपनी बेटी नैना पर जो उसे ममता भरी नजरों से निहा रही है।

*****

लेखक

संघर्ष की पहली जीत वही होती है, जब समान अपनी चुप्पी तोड़कर साहस को पहचान देता है, जिला स्तर पर सम्मान एक माला या प्रशस्ति पत्र नहीं, बल्कि उस आवाज की पहली गूँज है, जिसने सदियों पुरानी परंपरा को चुनौती दी। बिन्दा और नैना के लिए यह सम्मान उनके जीवन का नहीं, बल्कि उनकी जाति की हर उस बेटी का है जो कभी बेची गई, रोती रही और चुप कराई गई।

*****

मुख्यमंत्री के हाथों पुरूस्कार

नैना की संस्था का काम करने के लिए कई स्वयंसेवी पुरूष और महिला आगे आने लगे। जिले के हर गाँव से शहर और शहरों से अन्य शहरों तक ये जन जागृति का अभियान हर ओर पहुँचने लगा। हर शहर में स्वयंसेवी संस्थाओं और समाज सेवियों ने नैना की आवाज को एक धार दी इसे हर गाँव तक पहुँचाने का काम किया। वक्त के साथ कारवां चल पड़ा था और प्रशासन सार्वजनिक स्थानों पर नैना के जन जागरण का मिशन एक नए मोड़ से गुजर रहा था। हर दिन अखबारों में एक खबर नैना की संस्था से जुड़ी होती ही थी।

प्रदेश की राजधानी में नैना और बिन्दा के चर्चे होने शुरू हो गए। धीरे सभी खबरों का संज्ञान प्रदेश स्तर पर सामाजिक मंत्रालय तक पहुँचने लगा और एक दिन ऐसा भी आया, जब प्रदेश के मुख्यमंत्री ने बिन्दा और नैना को ऐसे सामाजिक जागरूकता और मानवहित के कार्यों को सम्मानित करने का निश्चय किया।

राजधानी के भव्य हाल में मुख्यमंत्री मंच पर बैठे हैं, कैमरों की रौशनी चारों तरफ मीडिया, मंच पर नैना को बुलाया जाता है। नैना, बिन्दा को भी साथ लाना चाहती है, लेकिन बिन्दा आँसूओं से भीगी, मंच पर नैना को ही जाने को कहती है।

मुख्यमंत्री (पुरूस्कार देते हुए) डॉ नैना मौहर सिंह, आपके विचारों ने समाज को जनजन को सोचने समझने और मानवजीवन जीने के लिए नया विचार दिया आपने न सिर्फ अपनी माँ का दर्द दुनियाँ को बताया, बल्कि हजारों बेटियों को नई दिशा दी है। आप प्रदेश की हर बेटी की प्रेरणा है। हमारे कदमों को सहारा दे।

मुख्यमंत्री उठकर नैना के कंधे पर हाथ रखते है।

मुख्यमंत्री– हम सभी आपके विचारों के साथ है।

(यह क्षण कैमरों में इतिहास की तरह कैद हो गया।)

*****

लेखक

समाज की भीड़ में जब एक बेटी खड़ी होकर अपनी माँ का दर्द आवाज बना दे तो वह आवाज सत्ता तक पहुँचती है। नैना सिर्फ एक पात्र नहीं, वह एक प्रतीक बन चुकी है। उस संघर्ष की जहाँ प्रेमख, परंपरा से जीतता है और जहाँ साहस हर परंपरा को ढहा देता है।

आवाज बंद दीपक बनी,

तो अंधेरों की दीवारें गिर पड़ी

नैना के स्वर में माँ की पीढ़ा थी

उस पीढ़ा ने शासन तक रास्ता खोल दिया

सम्मान की माला सिर्फ गले में नहीं थी

वह उन बेटियों के सपनों में खिली
जो अब सिर उठाकर जीना चाहेंगी
सत्ता की चौखट पर जब विचार
झुककर सलाम करता है, तब
इतिहास नया लिखा जाता है

*****

सभा कक्ष का माहौल

सभा कक्ष तालियों की गूँज से गूँजता हुआ कैमरों की फ्लैश, मुख्यमंत्री मुस्कुराते हुए कहते हैं।

मुख्यमंत्री – डॉ नैना, आज हमें गर्व है कि इस राज्य की बेटी ने न सिर्फ कुरीत के खिलाफ आवाज उठाई बल्कि पूरी पीढ़ी की सोच को बदलाव दिया।

डॉ नैना– आप हमें अपने शब्दों से नई दिशा दो।

मुख्यमंत्री माइक, नैना को सौंपते हैं, नैना नीचे बैठी बिन्दा को देखती है, जो खुशी से नैना को देख रही है। सभागार शांत हो जाता है।

नैना –माननीय मुख्यमंत्री जी, उपस्थित सभी मान्यवर, एंव आदरणीय मंत्रीगण एवं अधिकारीगण और मेरे प्रिय साथियों, यह क्षण मेरे लिए सपना नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी है। मैने अपनी माँ की आँखों में अन्याय देखा है, और उसी ने मुझे सिखाया कि चुप रहना, सबसे बड़ा अपराध है।

आज मुझे सम्मान मिल रहा है, असल में सम्मान तब होगा, जब राज्य की हर बेटी, खुले आसमान के नीचे अपने सपने पूरे कर सकेगी।

हमारा समाज तभी आगे बढेगा जब शिक्षा और बराबरी का हर घर की नींव बन जायेगी।

मैं मुख्यमंत्री जी का आभार व्यक्त करती हूँ कि उन्होंने मेरी छोटी सी कोशिश को इतना बड़ा मान लिया।

ये तो शुरूआत है, एक ऐसे भविष्य की जहाँ परंपरा हमें रोके नहीं बल्कि बदलते जमाने के साथ कदम बढाऐ बेटियों को समान समझा जाए, वह पढ़े लिखे समाज में पुरूषों के समान रहे।

धीरे–धीरे हर प्रदेशभर में नैना की ख्याति होने लगी थी। नैना और सुदर्शन काम में इतनो मशगूल हुये कि एक दूसरे के जीवन के बारे में भूल गए कि वो दोनों कभी अच्छे मित्र बनकर आगे बढते गए और परिवारों ने चाहा कि दोनों का विवाह हो, लेकिन संस्था के बढ़ते कामों से सुदर्शन बस सब भूलकर नैना के साथ एक हमसफर एक छाया की तरह सदा साथ देता रहता।

नैना सुदर्शन के विचारों और व्यक्तित्व को जानती थी, उसे पता था कि एक दिन जब मिशन का लक्ष्य पूरा होगा त बवह अपने खुद के जीवन के बारे में सोच सकेंगें।

नैना को लगातार मिलने वाले सम्मान और पुरूस्कारों में, संयुक्त राष्ट्र संस्था द्वारा सम्मानित करने के लिए बुलाया जाता है, जहाँ संयुक्त राष्ट्र संस्था के प्रतिनिधी विदेश के सभागार में नैना को सम्मानित करते है।

यह पहलीबार कि बिन्दा नैना, सुदर्शन और मौहर सिंह, विदेशी धरती पर आकर अपनी संस्था की ओर से प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

नैना मंच पर है–हाथ में अंतर्राष्ट्रीय पुरूस्कार चारों तरफ विभिन्न देशों के लोग एवं प्रतिनिधी खड़े होकर तालियाँ बजा रहे है।

नैना (अपने भाषण में कहती है।) आप सभी का धन्यवाद, ये सम्मान में अपनी माँ को समर्पित करती हूँ, क्योंकि उन्होंने ही मुझे एक शक्ति दी, विश्वास दिया और मुझे बोलनाा सीखाया।

और मैं इसे हर उस बेटी को समर्पित करती हूँ जिनकी किस्मत को परंपरा ने बेड़ियों में बांध रखा है। आज यह आवाज सिर्फ भारत की ही नहीं पूरे संसार की है।

(सभी तालियाँ बजाते हैं, कैमरे बिन्दा के आँसू और मुस्कान कैद करते हैं। सुदर्शन मंच के पास खड़ा है, उसके चेहरे पर खुशी है। बिन्दा—मौहर यह सब देख खुद को नैना जैसी बेटी के माता—पिता होने पर गर्व कर रहे है।

*****

लेखक

हर आँसू की एक भाषा होती है और हर संघर्ष की एक गूँज, जब वह गूँज सीमाओं को पार कर जाती है, तो यह मानवता की आवाज बन जाती है।

नैना का अंतर्राष्ट्रीय सम्मान इस बात का गवाह है कि एक गाँव की बेटी का दर्द भी विश्व के दिलों को छू सकता है।

यह जीत न किसी देश की है, न किसी समाज की।

यह जीत स्त्री की है, इंसान की है और प्रेम की है।

*****

सुदर्शन और नैना के दोनों परिवार मिलते हैं और दोनों के विवाह के लिए उचित समय तय करते हैं, ताकि दोनों उस तिथि को उपलब्ध रहें। परिवारों को पता है कि दोनों ही अपने संस्था के कार्यों में इतने व्यस्त हैं कि उनको अपने जीवन के बारे में ख्याल ही नहीं आ पाया।

सामाजिक रीत रिवाजाअें और पारिवारिक अपेक्षाओं को देखते हुए दोनों का विवाह करना होगा फिर दोनों परिवार चिंता मुक्त हो सकेंगें।

मौहर और बिन्दा ने सहमति जताई और नैना से बात करने की मंशा जाहिर कीस। सूर्यकांत और देविका ने भी सुदर्शन से सलाह करके एक तिथि जानने की बात कही। दोनों परिवार को पता है कि नैना और सुदर्शन दोनों ही इसका सही जवाब दे पाऐंगे।

बातों के बीच मौहर ने बताया कि कल नैना को पश्चिम के कुछ गाँवों ने मिलकर सभी की है, जहाँ से वापस आने के बाद वह सलाह मशविरा करेंगें।

*****

जागरूकता सभा

चार गाँवों की स्त्रियाँ, बच्चे, बच्चियाँ और बड़े बुजुर्ग जवान बच्चों की भारी भीड़ एक ओर चौपाल पर कुछ चारपाईयाँ, पास ही गाँव के मुख्य और बुजुर्ग व्यक्ति सभी की नजरें उसी ओर आने वाले रास्ते पर टिकी हैं।

आ गए वो आ गए।

स्त्रियों के चेहरों पर एक मुस्कान और नैना को सुनने की आतुरता झलक रही है। चौपाल के पास आकर रूकती है। नैना और सुदर्शन उतरती है। मुख्य लोग आगे जाकर दोनों का स्वागत करते है। नैना तेजी से चौपाल पर जाकर भीड़ को देखकर हाथ जोड़कर नमस्कार करती है।

नैना (आवाज में एक ताकत सी है) भाईयों बहिनों, आपने पुकारा था और हम आ गए। मुझे खुशी है कि आप सब यहाँ आए हैं, मुझे सुनने के लिए। मैं भी आपकी जैसी हूँ किसी की बेटी।

सभी स्त्रियाँ लड़कियाँ और बुजुर्ग बड़े तल्लीनता से सुन रहे हैं।

मुझे कुछ यहाँ की बहिनें मिलने आई थी उनसे तब मुझे उनसे बात करने का मन था लेकिन उन्होंने ही न्यौता दिया। मैं आ गई मुझे पता है कि आपका दर्द और आँसू मैने इनको अपने घर में ही देखा है। और समझा जाना कि स्त्रियों को ही क्यों इतनी सजा दी जा रही है। अनेक परंपराओं और रिवाजों के

नाम पर प्रथा के नाम पर इनका जीवन क्यों जीवन नहीं समझा जा रहा।

जब कोई सामाजिक प्रथा के साथ ईश्वर की इच्छा या स्वीकृति को जोड़ दिया जाता है तो उस प्रथा के लोगों के मनो में बैठ जाती है। उसकी जड़ें बुद्धि की बजाय भावनाओं में दृढ़ता से अपनी जड़ें जमा लेती है।

देश के अधिकांश लोग हमेशा धार्मिक सामाजिक आधार पर महिलाओं की शिक्षा पर उनके पढ़ने पर घोर विरोधी रहे हैं और अभी भी वो विरोध करते रहेगें।

मैं आप सबसे पूछना चाहती हूँ कि क्या लड़कियों को शिक्षा नहीं मिलनी चाहिए ?

स्त्रियों के झुंडों में कई अपनी सहमति सिर हिलाकर और कई हाथ उठाकर देती हैं। कुछ बुजुर्ग भी सिर हिलाकर सहमति प्रकट करते है।

हम चाहते हैं कि हमारा समाज अच्छा हो उन्नति करे तब हमको लड़कियों की शिक्षा से इंकार नहीं करना चाहिए।

हम अशिक्षा का कारण गरीबी को मानते हैं, अधिकांश लोग, जो गरीब हैं, निम्न जातियाँ हैं उनके लिए प्रबल विरोध क्यों ?

इसलिए कि वो आपको डर, पुर्नजन्म की आशाऐं दिखाते हैं। नरक स्वर्ग का डर और लालच देते हैं। जिससे आप उनके बनाए गए नियमों के बीच जीवन भर भटकते रहो अनक प्रथाऐं समाप्त हुई लेकिन अभी भी जारी है। जिनका विरोध होना चाहिए।

क्या कोई धर्म इंसान को इंसान नहीं मानता ? उसे सम्मान और समानता का पाठ नहीं पढ़ाता है। कोई भी धर्म ऐसा नहीं

कहता, बस हम बिना शिक्षा के ज्ञान न होने से इन बातों को समझ नहीं पाते।

हमारी माँऐं और बहिनें नम्र होकर अपने दुखों को सहन करती आई हैं। क्या उनका दर्द दुख ऐसे ही बना रहेगा ? हमे सोचना होगा? जो इस जगत की जननी है, जिसको देवी की तरह पूज्यनीय मानकर पूजा की जाती है। वह दुखी क्यों है? क्यों दर्द सहन कर रही है?

स्त्री पर ही अत्याचार शोषण क्यों ? जिन धार्मिक किताबों को पूज्य माना जाता है उन्हीं में से एक में लिखा है –

''जहाँ स्त्री का सम्मान नहीं होता वहाँ यज्ञीय अनुष्ठान निष्फल हो जाते हैं।''

फिर स्त्री धर्म के नाम पर उसके हिस्से में केवल दुख दर्द और चुप रहकर आँसू बहाऐं क्यों ?

इसलिए कि वह स्त्री है ? लड़कियों को बोझ क्यों समझा जाता है ? क्या लड़कियाँ पुरूषों के बराबर काम नहीं कर सकती? नहीं स्त्री शसक्त है। शक्तिशाली है। उसे तो जनम के साथ ही शक्ति प्राप्त होती है। वह पुरूषों के समान हर काम कर सकती है।

गाँव के सभी स्त्री पुरूष लड़कियाँ सुनकर आपस में कानाफूसी करते नजर आ रहे हैं।

हमें उस शक्ति का प्रयोग करना ही होगा। उन सभी बुराईयों जो स्त्री को दुख देती है। उनका विरोध करना होगा।

हमें अपनी मानसिक विरासत में मिली कई ऐसी बातों को हटाना होगा, जो स्त्रियों के साथ भेदभाव और उपेक्षा करती है। मैने जो कहा वो सही है?

सभी लोगों की एक आवाज – ''सही है''।

कठोर सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियाँ जो जीवन जी रही हैं, दर्द से भरा है वह आँसूओं से हर क्षण को जिया जा रहा है।

हम एक साथ मिलकर ऐसी प्रथाओं का विरोध करेंगें, जो स्त्रियों के जीवन को नरक बनाती है।

समाज और देश की उन्नति के लिए सभी चाहें पुरूष हों या स्त्री, शिक्षा–सम्मान और समानता देकर ही हम नव भारत का निर्माण करने में अपना सहयोग कर पायेंगें।

मैं सभी बहिनों और माँ ओं से कहकर जा रही हूँ कि जल्द ही इस गाँव में या नजदीक गाँवों में जो स्कूल है उनमें अपनी बच्चियों को पढ़ाऐं उन्हें नया जीवन दें।

हम सब मिलकर, सरकार के सहयोग से एक जागरूकता की मशाल को जलाऐं रखेंगे। जिससे सभी का कल उज्जवल और समान हो।

(हाथ जोड़कर) धन्यवाद।

लोगों की तालियों आवाजें और बच्चियों की आवाजें

''हम स्कूल जरूर जाऐंगें दीदी ? हम स्कूल जाऐंगे।''

*****

विचार मिलन

बंगला रंग बिरेंगें फूलों से सजा हुआ है। आसमान में तारे आज की रात पूरी तरह टिमटिमा रही है जैसे इन दो साहसी जोड़े के विवाह के गवाह बन सकें। ढोल–नगाड़े बज रहे हैं। गाँव के लोग शहर के लोग और कंपनी के कर्मचारी, सभी लोग उमंग में डूबे हैं। जो शहर वर्षों से नैना और सुदर्शन की तस्वीरें अखबारों में देखा करता था, वह खुद आँखों से सजीव दोनों के विवाह के इस अवसर पर खुशी और उल्लास से खिल रहा था। भीड़ इकठठी होती जा रही है।

आने वाले हर मेहमान की मेहमान–नवाजी के लिए लोग अल्पहार, शरबत आदि देते हुए उनका स्वागत कर रहे हैं।

मीडिया के पत्रकार भी इस अवसर पर आकर अपने कैमरों में विवाह बंधन की तस्वीरें लेने के लिए आतुर हैं।

सभी तो आज अपनी आँखों से नए इतिहास का उत्सव देखने को आए हैं। गाँव की स्त्रियाँ गीत गा रही हैं, खुशी से, और आशीर्वाद के और आजादी के। जिन्हें मौहर और बिन्दा ने कभी सोचा भी नहीं था कि शहर क्या प्रदेश के अधिकारी उसकी बेटी की शादी में आऐंगे। जिला अधिकारी, महिला आयोग की अध्यक्षा सदस्य, मुख्यमंत्री के दूत, अखबारों के संपादक और कई गाँव के मुखिया आकर इस शादी में शामिल होकर आशीर्वाद देने की इच्छा और नैना–सुदर्शन की यात्रा की शुभकामनाऐं की अपेक्षा है। विवाह एक केवल घर नहीं पूरे

समाज का उत्सव बन गया है। सबकी नजरें विवाह मंडप पर लगी हैं। शहनाईयों ने अपनी धुन छेड दी है। तासे—नगाढे की आवाज के बीच शहनाई की गूँज विशेष वातावरण का निर्माण कर रही है। सभी के चेहरों पर खुशी उमंग है।

नैना, बिन्दा के साथ लाल साड़ी में माथे पर बिन्दी और आँखों में तेज, किसी गहने से अधिक दमक रहा है। सुदर्शन सफेद शेरवानी में अपनी माँ और पिता व अन्य सगे सबंधियों के साथ धीरे—धीरे मंडप की ओर बढ़ रहा है।

शहनाई की आवाज के बीच पंडित मंत्र का उच्चारण अपनी ऊँची आवाज में कर रहा है। साथ ही तालियाँ और गीतों की आवाज हो रही है।

मंडप में जैसे ही दोनों आते हैं, सभी ओर से फूलों की वर्षा हो उठती है। मौहर—बिन्दा आज बेटी और सुदर्शन को गिरते फूलों की बरसात के बीच देख खुशी से गदगद है। सूर्यनारायण त्रिपाठी और देविका, बिंदा, मौहर के पास आकर। वह शुभ दिन आ गया, बदलाव का सच्चा दिन। मौहर और त्रिपाठी गले मिलते हैं। देविका बिन्दा को गले लगाकर नये रिश्ते को अपनापन देती है। धीरे—धीरे पंडित के मंत्रों के बीच फेरे पूरे होते है। मंडप में फेरों के बाद, पत्रकार उन दोनों की हजारों तस्वीरें अपने कैमरे में कैद करते है।

सुदर्शन—धीरे से, धन्यवाद नैना।

नैना इशारे से पूछती है क्यों ?

सुदर्शन, धीरे से, मुझे छाया का सही रूप देने के लिए।

नैना धीरे से मुस्कुराकर हंसती है, सुदर्शन भी हंसता है। मंडप से दोनों नीचे आते हैं। सामने दोनों परिवार खड़े हैं। बिन्दा

आगे बढ़कर (आँखों में आँसू है।) बेटी मैने सोचा था कि तेरे लिए आँसू ही मैने लिख लिए हें। लेकिन आज...देख तेरी किस्मत ...मैं आकाश के सितारे लिखे है।

(मौहर पास आकर–नैना पिता को देखती है।)

मौहर – गर्व से, कभी सोचता हूँ। तुम्हें बचपन में जब गोद में उठाया था खुद को....नहीं समझ सका...तुम्हारी बातें और विचार सुनकर ही आज मैं खुद को बड़ा बनता महसूस कर रहा हूँ।

तुम्हारी माँ, चुप थी लेकिन, आवाज बनी और तुम गूँज बन गई। पहले डर था, समाज तुम्हें क्या कहेगा? अब गर्व है कि समाज तुमसे सीखेगा।

(नैना की आँखें नम हो जाती है।)

नैना – आपकी बेटी हूँ, आपसे मैंने संकल्प और सहन करने का मंत्र सीखा है।

मौहर – सुदर्शन से, बेटा, बस ये ही इच्छा है, दोनों साथ–साथ बनाई गई डगर पर जब तक चलना है, जब तक कि नया सवेना ना हो जाए।

सुदर्शन–झुककर नैना–बिन्दा के पैर छूता है, खुश रहो। (दोनों आशीर्वाद देते हैं।)

त्रिपाठी और देविका भी आ जाते हैं नैना सुदर्शन आशीर्वाद लेते है।)

नैना – हाथ जोड़कर सबकी ओर, यह विवाह सिर्फ मेरा और सुदर्शन का नहीं, यह उस बेटी का है, जिसे इंसान बनने का हक नहीं दिया गया। आज सुदर्शन पापा–मम्मी जी सभी ने मिलकर, वह दे दिया। जिसका इंसान को हमेशा पाने की

इच्छा होती है। सम्मान, लगता है जैसे, समाज नया जनम ले रहा हो।

सामने खड़े दोनों परिवार आशीर्वाद से हाथ उठाते हैं, अधिकारीगण व अन्य आकर बधाई देते हैं। महिला आयोग की अध्यक्ष आती है।

नैना जी, हमारा साथ छोड़ न देना, हम बिना आपके मार्गदर्शन के रास्ता भूल सकते हैं। बस याद रखिए।

नैना मुस्कुराती है। मौजूद सभी लोग तालियाँ बजा रहे हैं नैना और सुदर्शन हाथ उठाकर सभी का आशीर्वाद स्वीकार कर रहे है।

*****

लेखक

संघर्ष की हर राह का अंत, सुख में नहीं होता, पर जो संघर्ष प्रेम और सत्य से लड़ा जाये, उसका अंत उजाले में जरूर होता है।

नैना बिन्दा और सुदर्शन की यह शादी केवल एक रिश्ता नहीं बल्कि एक प्रतीक है कि समाज चाहे कितना भी कठोर क्यों न हो बदलाव संभव है। जहाँ कभी आँसूओं का इतिहास लिखा गया, वहीं अब सितारों की बारात उतरी है। नया इतिहास बनाने। यही है बेड़िनी की असली जीत।

*****

लेखका का अंतिम संदेश

सभ्यता के लम्बे गलियारों में चलते हुए भारत ने जितनी रौशनी देखी, उतने ही अंधेरों को भी झेला है। धर्म और पंरपरा के नाम पर कई अमानवीय कार्य होते रहें, कितनी ही निर्दोष स्त्रियाँ जलाई गई, कितनों का शोषण परंपरा और धर्म के नाम पर किया गया, मासूम बच्चों की बलि दी गई। कितने ही परिवार इन रूढ़ियों की चक्की में पिसते रहे। पीढ़ी दर पीढ़ी लेकिन हर युग ने अपने भीतर कुछ साहसी पुरूषों और स्त्रियों का जना, जिन्होंने सवाल उठाए, क्या इंसानियत से बड़ी कोई परंपरा है ? कई प्रथाऐं जनमी जिन्होंने इंसानियत और समानता को लज्जित किया ? किंतु सुखद यह है कि, समाज सुधारकों की आवाज और सरकारी दखल से इन परंपराओं को तोड़ा।

कई कानून बनाए गए। 1829 में सती प्रथा का कानून, 1795, 1804, 1870 में बालहत्या पर रोक, 1856 में विधवा पुर्नःविवाह अधिनियम, 1859 में स्त्रियों को ऊपरी वस्त्र पहनने का अधिकार, 1947–1949 में देवदासी प्रथा पर रोक और 1929 में बाल विवाह निषेध अधिनियम। इन सभी कानूनों में एक ही पीढ़ा थी, दर्द और आँसू थे, जो मानव जीवन को अपमानित, अमानवीय थी, कानून ने रोका और नए रास्ते दिए। बदलाव तभी संभव हुआ, जब साहसी समाज सुधारकों और साहसी स्त्रियों ने इन रूढ़ियों को ललकारा।

नैना का संघर्ष भी, इन्हीं प्रयासों की श्रृंखला में एक पन्ना है, यह बताने के लिए कि परंपरा कितनी भी पुरानी क्यों ना हो,

यदि इंसानियत को रौंदती हैं तो उसका अंत होना ही चाहिए। मानव समाज और मान के जीवन के लिए यह एक पुकार है, उस औरत की जिसने बेड़ियों को तोड़ने की ठानी। यह संघर्ष है, उस आदमी का जिसने रूढ़ियों से बड़ा इंसान को माना।

कानून रास्ता दिखाता है, लेकिन बदलाव समाज की आत्मा में होता है। जब आत्मा जागती है तो कोई ''बेड़िनी'' को कोई रूढ़ि, कोई परंपरा उसे बांध नहीं सकती। यह सिर्फ बेड़िनी एक स्त्री की कहानी नहीं बल्कि पूरे मानव समाज की आत्मा की आवाज है। यह जागृति ओर भविष्य की दिशा है। अभी कहानी खत्म नहीं हुई है, यह तो एक शुरूआत है, समाज को बदलने की। यह समाज की बदलती धड़कन है। एक नया आकाश....

एक विचार समर्पण

यह पुस्तक उन सभी माँओं को समर्पित है, जिन्होंने अपने आँसुओं में बेटियों का दर्द छुपाया, उन सभी बेटियों से समर्पित है। जिन्होंने पंरपरा और अन्याय की बेड़ियों को तोड़कर नए उजाले की राह बनाई और उन सभी लोगों को समर्पित है, जो प्रेम, शिक्षा और समानता की मशाल थामें समाज को बदलने का साहस रखते है।

समाप्त

एक परिचय

ये कहानी एक प्रेमकथा नहीं थी, वह एक विद्रोह था– परम्पराओं के नाम पर औरत की बोली लगाने वालों के खिलाफ। उसने अपने प्रेममय जीवन को चुना, परंपरा को नहींय एक जीवन को जीना चाहा!

कहानी हर उस महिला की है, जो अपनी नियति ख़ुद लिखना चाहती है। समय आ गया है,कि समाज फिर से सोचे,, क्या रीत सही है? या य नारी की पीड़ा

नाम– उदय भान सिंह , उपनाम, उदय पंकज

जन्म– १०,०६ १६५६

शिक्षा– एम, ए (इतिहास शास्त्र)

प्रारंभिक लेखन– दैनिक, त्रैमासिक और मासिक पत्रिकाओं में सामाजिक और मौलिक रचनाएँ–

मुंबई आगमन– सन १६७६, विज्ञापन और वीडियो फिल्मों का लेखन,जिंगल, गीत, संबाद और पटकथा लेखन और निर्देशन–

प्रकाशित पुस्तकें– अधूरी औरत,बोलती कहानियाँ, मन के हारे हार हैं मन के जीते जीत,शांति पथ,और दिल की बातें (प्रकाशाधीन)

पत्रकारिता– दैनिक पत्रों एवं मासिक , त्रैमासिक मे स्वतंत्र पत्रकारिता, स्तंभ लेखन–

सामाजिक–कई संगठन मे सक्रिय भूमिका–